@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

Rotary

October 2017

Vol.35, Issue 4 | Price Rs 35 | Annual Subscription Rs 420

अब 'प्लस' की बारी

Enjoy the pleasure of our Luxury Italian shoes that blend tradition, inner comfort innovation, while supporting **Rotary International.**
See the collection and discover every detail on **www.grandinishoes.it**

Walk well. Support Rotary

Shop at www.grandinishoes.it

विषयसूची

14 रोटरी के साथ भारत सरकार का प्रगाढ़ भागीदारी का प्रयास

पोलियो के बाद, भारत सरकार खसरा और रूबेला के खिलाफ बच्चों को प्रतिरक्षित करने के लिए रोटरी की मदद चाहती है।

24 नीले पड़ते बच्चों के जीवन को मिलती साँसे

पटना में मंडल 3250 द्वारा जनजातीय हृदय विकार वाले बच्चों का पता लगाने और इलाज करने के लिए एक विशाल शिविर आयोजित किया गया।

28 एक प्रतिष्ठित रोटरी क्लब

रोटरी क्लब बर्मिंघम, यूएस, 100 सालों से भी ज्यादा पुराना है और 640 सदस्यों के साथ, असंतत रूप से यह दुनिया का सबसे बड़ा रोटरी क्लब है, और इसने एक रोटरेक्ट क्लब को जन्म दिया जो यकीनन दुनिया का सबसे बड़ा रोटरेक्ट क्लब है।

20 टीआरएफ कैसे मिशन इन्द्रधनुष के लिए आगे आया

पीआरआईपी राजेंद्र के साबू और कल्याण बेनर्जी सांझा करते है की कैसे टीआरएफ ट्रस्टी बोर्ड, भारत सरकार के साथ खसरा और रूबेला को हटाने के लिए आगे आया।

32 रोटरी क्लब अम्बाला के कैंसर अस्पताल को मिला ''फ्लाइंग एम्बेसडर''

रवि बंसल, रोटरी क्लब बफेलो, न्यूयॉर्क, के सदस्य अंबाला में कैंसर अस्पताल के लिए धन जुटाने के लिए दुनिया भर में एकल उड़ाने करते है।

38 यादों के गलियारे से गुजरते हुए

आईएनपीपीसी चेयर दीपक कपूर उन दर्दनाक वर्षों को याद करते हैं, जब पोलियो भारत में अपने चरम पर था।

44 भूले-बिसरे शिल्प को मिला पुनर्जीवन

लुप्त वस्त्र कलाओं में से कुछ पर और उन्हें पुनर्जीवित कैसे किया जा रहा है पर एक करीबी नज़र।

62 एक अलग क्षेत्र में ध्यान विकसित करें

पता करें कि कैसे आप सकारात्मकता से लैस बाधाओं के आसपास चल सकते हैं।

68 मुस्कुराहटों की भूमि

कंबोडिया और इसकी सांस्कृतिक संपत्ति पर एक पर्यटक का लेख।

कवर पर: साल 2010 में दिल्ली के एनआईडी शिविर में पीआरआइपी राजेंद्र के साबू,आदित्य बिड़ला सामुदायिक प्रयासों और ग्रामीण विकास केंद्र की अध्यक्ष, राजश्री बिड़ला और बिनोटा बेनर्जी के साथ स्टील टाइकून एल एन मित्तल (बाएं)।

चित्र सौजन्य: आईएनपीपीसी, दिल्ली।

एक हृदयविदारक विदाई

सितंबर अंक के कवर पेज पर सैम एफ. ओवोरी की सुन्दर तस्वीर है, जो हमारे दिलों को छूती है। और पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन के अलावा और कौन है जो ओवोरी को दफ़नाने के समारोह का ऐसा हृदयविदारक वृत्तांत दे सकता है? जब लेख में यह बताया गया कि सैम और नोराह को कभी भी अपने नव-निर्मित घर में रहने का सौभाग्य नहीं मिला, उस घर में जहाँ अपनी अंतिम यात्रा पर जाने से पहले उन्हें कुछ वक्त आराम कराया गया, तो यह जानकर हम रो पड़े।

हमेशा कि तरह अंक में अनेक अच्छे लेख थे जैसे कि *रोटरेक्टरों का रिचार्ज, रोटरी समाचार में अपनी प्रतिष्ठित परियोजनाओं को कैसे प्रकाशित करवाए,* और *महिला सशक्तिकरण* पर लघु कथाओं के साथ सम्पादकीय, जो विचार

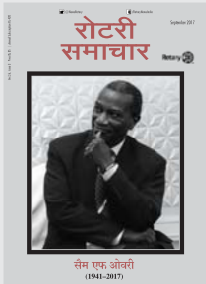

उत्तेजक है, संपादक के लेखन कौशल को दर्शाता है।

आर. श्रीनिवासन, रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन - मंडल 3000

लेख *अलविदा सैम ओवोरी* अत्यंत भावुक था। एक अन्य लेख *गवर्नर के रूप में सफल होने का मंत्र* प्रशंसनीय है और मुझे *एक टी. बी. मुक्त भारत* की ओर कहानी बहुत ज्यादा पसंद आई। डीजी व्यंकटेश विट्ठल चन्ना का परिचय *(आपके गवर्नरों से मिलिये)* भी रोचक था।

संतोष तिवारी, रोटरी क्लब जालना रेनबो - मंडल 3132

चिंताजनक बदलाव

बीसवीं सदी में भारत के रोटरी क्लबों की जो स्थिति थी उसमें अब बहुत बदलाव आ गया है। बदलाव विकास का प्रतीक होता है, लेकिन यह क्या दिशा लेता है यह चिंताजनक हो सकता है। सदस्यों को भर्ती करने में क्लबों को दी गई स्वतंत्रता, इलेक्ट्रॉनिक संचार साधनों की वजह से निजी संपर्क में आई कमी जिसके कारण साप्ताहिक बैठकों में उपस्थिति खराब हो चुकी है; और वर्गीकरण प्रणाली के कमजोर पड़ जाने से कोई भी आम आदमी सदस्य बन रहा है। साप्ताहिक चार बैठकों को कम करके दो बैठक करने की आज़ादी के कारण रोटेरियनों के मध्य संबंध कमजोर हो गए है और इससे क्लब की बैठकों में उपस्थिति में कमी आई है।

वर्गीकरण प्रणाली के कमजोर पड़ जाने के कारण, हमारी छवि में भारी गिरावट आई है और अब रोटरी किसी अन्य अंतर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन से भिन्न नहीं रह गया है। रोटरी में गुणवत्ता के सिद्धांत खो गए है। केवल रोटरी संस्थान ही एक बेहतर कल की आशा प्रस्तुत करता है। विधान परिषद् में हमारे विधि निर्माताओं के बैठे होने के बावजूद भी यह सब हो रहा है।

मधुकर बी. देओधर, पीडीजी, मंडल 3141

उपयोगी, रोचक

मैं *रोटरी समाचार* को बहुत ही उपयोगी पाता हूँ। कृपया मंडल 3231 के सभी ग्राहकों की सूची हमें भेजे क्योंकि मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक रोटेरियन *रोटरी समाचार* का सदस्य हो। इससे हमें यह पता लगाने में मदद मिलेगी कि किसने सदस्यता शुल्क नहीं दिया है। क्या मुझे, एक गवर्नर के रूप में, परियोजना की विस्तृत जानकारी आपको भेजना चाहिए या फिर क्लब उन्हें सीधे भेज सकते है? प्रकाशन के लिए किस तरह की परियोजनाएं योग्य होंगी? और किस माध्यम से हमें उन्हें भेजना है? कृपया इन प्रश्नों के उत्तर दे।

जवारीलाल जैन के, गवर्नर मंडल (3231)

प्रिय डीजी जैन

आपकी प्रशंसा के लिए धन्यवाद जो मुझे और मेरे दल को अच्छा करने के लिए प्रेरित करती है। आपके प्रश्नों के लिए; आपके मंडल के सदस्यता देय शुल्क और गैर सदस्यता वाले क्लबों की सूची आपको पहले ही मेल की जा चुकी है। हमें समाचार भेजने के संबंध में, कृपया सितंबर अंक का 11वां पृष्ठ देखें जहाँ मैंने कैसे अपनी प्रतिष्ठित परियोजनाओं को रोटरी समाचार में प्रकाशित करवाए पर लिखा है। या फिर इस लिंक को देखे: *https://rotarynewsonline.org/get-your-iconic-projects-featured-in-rotary-news/*

संपादक

आंकड़ों को कहानी कहने दो

एक चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में, रोई अध्यक्ष इयान रिसले ने अपने पेशेवर कौशल का क्लबों को यह कहकर अच्छा इस्तेमाल किया कि वे एक अंकीय जानकारी उपकरण के माध्यम से आत्म मूल्यांकन करे। आंकड़ों को कहानी कहने दो, अगस्त अंक। उन्होंने एक अक्सर पूछे जाने वाले मुश्किल सवाल - रोटरी क्या है? - का अच्छी तरह से विश्लेषण किया है और इसका उत्तर देने में आने वाली कठिनाइयों का समाधान प्रस्तुत किया।

पी. सी. सांघी, पूर्व अध्यक्ष, मंडल 3054

बाग्ची से सीखें

भुवनेश्वर के एल. वी. प्रसाद नेत्र संस्थान परिसर का नामकरण करने के एक समारोहों की अध्यक्षता करने के दौरान मुझे सुब्रतो बाग्ची से मिलने का अवसर मिला। मैंने उनकी बाते सुनी और *उड़ीसा के कौशल विकास* (अगस्त अंक) के उनके दृष्टिकोण पर उनसे बातचीत की। कौशल विकास में उनका प्रचुर अनुभव निश्चित रूप से एक क्रांति लाएगा। इस परियोजना के माध्यम से रोटरी को भी सीखना चाहिए और स्पष्ट परिणामों के लिए इसे मुख्य सेवा परियोजना के रूप में शामिल करना चाहिए।

मेजर डी. के. ज़रेकर, रोटरी क्लब नाशिक अम्बाद मंडल 3030

एक परिचित चेहरे को *रोटरी समाचार* (अगस्त अंक) के कवर पर देखना सुखद आश्चर्य था। *उड़ीसा का कौशल विकास* मिशन

की अगुआई करने वाले सुब्रतो बाग्ची के बारे में पढ़कर मुझे यकीन है कि यह उनके लिए पूरी तरह से योग्य था। बाग्ची के साथ मेरी पहली मुलाकात 1980 के दशक के मध्य हुई थी जब उन्होंने कार्यकारी अधिकारियों को विक्रय और विपणन गतिविधियाँ शुरू करने में पुनः कुशल बनाने के लिए एक योजना का निष्पादन किया। विप्रो इन्फोटेक, जो भारत के आईटी उद्योग में तब नयी थी, ने विकास के रास्ते पर काम शुरू कर दिया था। बाग्ची ने उस पहल का नेतृत्व किया था। अपने सादे अंदाज में, उन्होंने यह समझने में हमारी मदद की कि छोटे व्यापार में कंप्यूटर की क्या अहमियत है, और एक क्रियाशील व्यापार प्रमुख किन चुनौतियों का सामना करेगा। सरल उदाहरणों का इस्तेमाल करके, उन्होंने हम नौसिखियों को मुख्य बिंदु समझा दिया था। इन सभी के दौरान, उन्होंने अपने प्यारे उड़ीसा से जुड़े बचपन के किस्से भी सुनाए।

बाद में, जब भी हमारे सामने मुश्किल स्थिति होती थी हम उन युक्तियों को याद करते थे। बाद में मैं उनसे मिला, जब वह माइंडट्री को स्थापित करने में मदद कर रहे थे और इसके शानदार तरीके से चलने में उनका बहुत बड़ा योगदान है।

विद्युत शेनॉय,
रोटरी क्लब बंगलौर इंदिरानगर - मंडल 3190

अमर पात्र

किताबों के लिए संध्या राव का जूनून और किताबों की धरती के मध्य उनकी यात्रा प्रशंसनीय है। अपने संस्मरण *गर्मी का जादू* (सितंबर अंक) में उन्होंने वास्तव में उत्कृष्ट लेखनों को कवर किया है। किताबों ने हमें कुछ अमर पात्र प्रदान किये है जिनका जिक्र हम हमारी दैनिक वार्तालापों में करते रहते है। सर आर्थर कॉनन डॉयल ने हमें एक जासूस पात्र शेर्लोक होम्स, पी. जी. वोडहाउस ने एक महान पात्र वेलेट जीव्स, अर्ल स्टैनले गार्डनर ने बचाव पक्ष के वकील पैरी मेसन दिया, अगाथा क्रिस्टी ने एक बेल्जियन जासूस हर्कुलस पोइरोट की और सैपर ने बुलडॉग ड्रममोंड की रचना की। अमेरिकी निबंधकार जॉन बरो ने कहा था: ''मुझे अभी भी प्रत्येक दिन, उन सभी विचारों जिन्हें मैं सोचना चाहता हूँ, सभी क़दम जिन्हें मैं चलना चाहता हूँ, सभी किताबें जिन्हें मैं पढ़ना चाहता हूँ, और वे सभी दोस्त जिनसे मैं मिलना चाहता हूँ, के लिए काफी छोटा लगता है।''

एच. एस. खुराना,
रोटरी क्लब लुधियाना - मंडल 3070

सफलता का अनुमान लगाने के लिए तैयार

सितम्बर अंक में पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन का लेख, *गवर्नर के रूप में सफल होने का मंत्र*, को फिर से पढ़ने के लिए ललचा रहा हूँ। उनकी सलाह, कि सम्मान अर्जित करने के लिए हमें ऐसे स्मारकों को बनाने का प्रयास करना चाहिए जो हमेशा टिके रहें समयोचित एवं बेबाक है। पूरे लेख में एक जैविक एकता है जो एक नेता के रूप में सफल होने के लिए इसे एक उत्कृष्ट विधि बनाती है।

पीडीजी कुलदीप धीर
मंडल 3070

रोटरी समाचार दल, मेरे मंडल 3240 की तरफ से सितम्बर अंक में प्रकाशित *एक रोटेरियन की साहित्यिक उपलब्धि* के अद्भुत कवरेज के लिए धन्यवाद।

डॉ सायंतन गुप्ता, डीजीई - मंडल 3240

यह सितंबर अंक में प्रकाशित शीला नाम्बिअर का लेख महिलाएं क्या चाहती है के विषय में है, जिसमें वह कहती है: *शारीरिक भूख को संतुष्ट करने के अलावा, खाना भावनाओं के साथ पेचीदगी से गुंथा हुआ है।* महिलाओं की महत्ता पर पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन ने एक बारि में कहा था महिलाएं समुदाय की आवश्यकताओं को बेहतर तरीके से जानती है लेकिन उनके मत को नहीं पूछा जाता जो कि एक खराब स्थिति है। एक क्लब जो महिलाओं को निकालता है, वह आधे से अधिक प्रतिभा, योग्यता एवं संपर्कों को निकाल देता है जो उसके पास होना चाहिए।

लेखक ने कुशलतापूर्वक समापन किया है।

राज कुमार कपूर,
रोटरी क्लब रूपनगर - मंडल 3080

एक गैर रोटेरियन की तरफ से

यह पत्र एक गैर रोटेरियन की तरफ से अप्रैल अंक में आपके लेख *मेक्सिको में वेनिस का अनुभव* के लिए धन्यवाद देने के लिए आया है। इसने मुझे उन पलों को याद करवाया जो मैंने उस पानी पर 30 साल पहले बिताए थे और वेनिस एवं भारत में की गई कुछ अन्य यादगार यात्राओं, जिसमें आंध्र प्रदेश में गोदावरी नदी की यात्रा शामिल है, को याद करने में मेरी मदद की। एक अन्य यादगार पल जो मुझे याद आया वह है तत्कालीन गवर्नर कल्याण बेनर्जी के साथ मेरी मुलाकात जब वह अपने पहले आधिकारिक दौरे पर राजपिपला गए थे। मैं वहाँ अपने प्लास्टर चढ़े पैर के साथ गया था, और वह इतने दयालु थे कि उन्होंने मुझे उस बैठक में शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया... कितने महान व्यक्ति है।

रोटरेक्टर से रोटेरियन बनने की सीढ़ी तो मैं नहीं चढ़ सका, परन्तु मैं अभी भी रोटरी के संपर्क में हूँ। कभी-कभी, मुझे *रोटरी समाचार* के अंक फुटपाथ से मिलते थे, लेकिन इस बार आपका लेख और कल्याण बेनर्जी के आकर्षक चेहरे ने मुझे पेन उठाकर आपको कुछ पंक्तियाँ लिखने के लिए मजबूर किया। मैं आशा करता हूँ कि आपकी जैसी संपादक रोटरी समाचार में मूल्यों को जोड़ती रहे।

संजयंत सहस्रबुद्धे ज्वालामुखी
काँगड़ा ज़िला, हिमाचल प्रदेश

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	P S Ramesh Babu
RI Dist 2982	DG	Dharmesh R Patel
RI Dist 3000	DG	P Gopalakrishnan
RI Dist 3011	DG	Ravi Choudhary
RI Dist 3012	DG	Sattish Singhal
RI Dist 3020	DG	G V Rama Rao
RI Dist 3030	DG	Dr K Sunder Rajan
RI Dist 3040	DG	Dr Zamin Hussain
RI Dist 3053	DG	Rajkumar Bhutoria
RI Dist 3054	DG	Maullin Manubhai Patel
RI Dist 3060	DG	Ruchir Anirudh Jani
RI Dist 3070	DG	Parvinder Jit Singh
RI Dist 3080	DG	T K Ruby
RI Dist 3090	DG	Bagh Singh Pannu
RI Dist 3110	DG	Vinay Kumar Asthana
RI Dist 3120	DG	Ranjeet Singh
RI Dist 3131	DG	Abhay Gadgil
RI Dist 3132	DG	Vyankatesh Vithal Channa
RI Dist 3141	DG	Prafull J Sharma
RI Dist 3142	DG	B M Sivarraj
RI Dist 3150	DG	J Abraham
RI Dist 3160	DG	Madhu Prasad Kuruvadi
RI Dist 3170	DG	Anand G Kulkarni
RI Dist 3181	DG	M M Chengappa
RI Dist 3182	DG	G N Prakash
RI Dist 3190	DG	Asha Prasanna Kumar
RI Dist 3201	DG	Vinod Krishnan Kutty
RI Dist 3202	DG	Sivashankaran P M
RI Dist 3211	DG	Suresh Mathew
RI Dist 3212	DG	Chinnadurai Abdullah
RI Dist 3231	DG	Jawarilal Jain K
RI Dist 3232	DG	R Srinivasan
RI Dist 3240	DG	Sunil Saraf
RI Dist 3250	DG	Vivek Kumar
RI Dist 3261	DG	Harjit Singh Hura
RI Dist 3262	DG	Ajay Agarwal
RI Dist 3291	DG	Brojo Gopal Kundu

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2017–18)

DG B M Sivarraj — RI Dist 3142
Chair – Governors Council

DG R Srinivasan — RI Dist 3232
Secretary – Governors Council

DG Abhay Gadgil — RI Dist 3131
Secretary – Executive Committee

DG Vivek Kumar — RI Dist 3250
Treasurer – Executive Committee

DG P Gopalakrishnan — RI Dist 3000
Member – Advisory Committee

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

पॉवर ... कुछ अच्छा करने के लिए

भारत को पोलियो मुक्त करने के लिए कई वर्षों तक जिस पोलियो प्लस युद्ध को भारतीय रोटेरियनों ने लड़ा उसी पोलियो प्लस में शामिल 'प्लस' तत्व के लिए भारत सरकार से हाथ मिलाकर भारतीय रोटरी संघर्ष के लिए आगे बढ़ रहे हैं, और एक बार फिर इसके केन्द्र बिन्दु में पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर दीपक कपूर के नेतृत्व वाली इंडिया नेशनल पोलियो प्लस कमेटी (INPPC) रहेगी। भारत के दो रोटरी शीर्ष पुरूष पूर्व रोटरी इन्टरनेशनल अध्यक्ष राजेन्द्र के. साबू के प्रति आभार कि उनके प्रयासों से रोटरी फाउण्डेशन फिर से भारत सरकार और भारतीय रोटरी के मध्य साझेदारी के लिए सहमत हुआ... इस बार विशेष यूनिवर्सल इम्युनाईजेशन (UI) प्रोजेक्ट के लिए जिसका नाम *मिशन इन्द्रधनुष* है। जैसा केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव सी.के. मिश्रा ने हाल ही दिल्ली में आयोजित पोलियो प्लस ऑरियन्टेशन मीट में बताया कि दो वर्ष पहले भारत सरकार के ध्यान में चेतावनी भरा यह तथ्य आया कि 90 लाख बच्चे UI कार्यक्रम से बाहर है और तब मिशन इन्द्रधनुष की शुरूआत हुई ''और गत दो वर्ष में हम उनमें से 60 लाख बच्चों तक पहुँच गये।'' UI कार्यक्रम बच्चों को केवल पोलियो से प्रतिरक्षित नहीं करता बल्कि मीजल्स, रूबैला, टी.बी., चिकनपोक्स, हेपेटाइटिस-बी से भी सुरक्षित रखता है।

जिस तरह पोलियो प्लस में प्लस का संदर्भ इन बीमारियों से है विशेकर मीजल्स और रूबैला, जिसके चलते वरिष्ठ नेतृत्व में यह निर्णय किया कि रोटरी को *मिशन इन्द्रधनुष* में भारत सरकार का सहयोगी होना चाहिए। सर्वप्रथम इन्टरनेशनल पोलियो प्लस कमेटी के चैयरमेन माइकल मैकगवर्न को आश्वस्त किया गया कि यह पोलियो प्लस कार्यक्रम का एक तरह से विस्तार है जो रोटरी सदस्यों को पोलियोमुक्त विश्व होने तक सक्रिय और व्यस्त रखेगा। जैसे ही मैकगवर्न ने स्वीकृति दी उसके बाद ट्रस्ट के अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी ने रोटरी फाउण्डेशन के प्रत्येक ट्रस्टी को पत्र लिखकर इस कार्यक्रम की मुख्य विशेषताओं तथा पोलियो प्लस कार्यक्रम के साथ इसकी प्रासंगिकता और लाभ के बारे में बताया कि रोटरी इन्टरनेशनल और रोटरी फाउण्डेशन में कोई भी पोलियो प्लस कार्यक्रम से हटना नहीं चाहता। सभी ट्रस्टी संतुष्ट हो गये और अब नवगठित पोलियो की राष्ट्रीय समिति और वर्ष 2017-18 के मंडल गवर्नरों के सहयोग से भारत के रोटेरियन इन रोकथाम योग्य बीमारियों से भारत को मुक्त करने के लिए पूरी ताकत से आगे बढ़ेंगे। विशेषरूप से मीजल्स और रूबैला गर्भ में ही बच्चे के लिए बहुत खतरनाक हो जाती है जब गर्भवती महिला उनके सम्पर्क में आती है।

लेकिन दिल्ली की इस बैठक में लोगों के दिलों में जिस बात ने गर्माहट दी वह स्वयं केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव के साथ बड़ी संख्या में सरकारी अधिकारियों द्वारा एकत्रित होकर इस कार्यक्रम में औपचारिक और संस्थागत साझेदारी के जरिए रोटरी के मदद और सहयोग को आगे रखना था। मिश्रा ने स्वीकार किया कि भारत सरकार ने *मिशन इन्द्रधनुष* के कार्यक्रम को बनाया ''उस समय निचले स्तर पर स्वास्थ्य देखभाल सिस्टम पर अत्यधिक भार डालने की सीमा थी तब मैने रोटरी से सहयोग का प्रयास किया क्योंकि आपके पास बौद्धिक क्षमता है, इस क्षेत्र का ज्ञान है और विश्वस्तर पर सम्पर्क हैं जिन्हें निश्चित रूप से हम उपयोग में ले सकते हैं।''

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के राष्ट्रीय कार्यक्रम अधिकारी (टीकाकरण) डॉ. बलविन्द्र सिंह और स्वास्थ्य मंत्रालय के उप-आयुक्त (टीकाकरण) प्रदीप हलधर ने बहुत ही उत्साहपूर्वक रोटरी से भारत में टीकाकरण के अभियान से जुड़ने का आग्रह किया। उनकी संयुक्त दलील थी कि आपमे ताकत है और सरकार में उच्च स्तर पर वकालत करने का सामर्थ्य है। बिहार में पोलियो के टीके पहुँचाने के लिए *पूरी की पूरी ट्रेन के बीच* में आपने दो वेगन आरक्षित किये वह भी केवल 48 घण्टों में, यह केवल रोटरी ही कर सकती थी! अब एक बार फिर *मिशन इन्द्रधनुष* के लिए हमें आपकी जरूरत हैं।

जयपुर इंस्टीट्यूट (दिसंबर 2015) की यादें ताजा करते हुए ध्यान आया जब तत्कालीन ऊर्जा मंत्री पीयूष गोयल जिन्हें अब रेलवे मंत्रालय दिया गया है और जो स्वयं रोटेरियन है ने एक कक्ष में ''संयुक्त ताकत'' का जिक्र किया था और कहा था ''मुझे मालूम है आप इस तरह की मीटिंग में मेरे जैसे दस मंत्री एकत्रित कर सकते हैं।''

पॉवर एक नशीला अहसास है यह ठीक है, लेकिन जब पॉवर अच्छा करने के लिए उपयोग में लाया जाये यह एक दूसरे स्तर तक श्रेष्ठ हो जाता है।

रशीदा भगत

मिलकर करें पोलियो का मुखाबला

प्रिय साथी रोटेरियनों,

कुछ वर्ष पहले, ऑस्ट्रेलिया के मेलबोर्न संग्रहालय, जहाँ मेरी बेटी काम किया करती थी, में एक लोहे का फेफड़ा प्रदर्शित किया गया था। बहुत से लोगों के लिए, मेरी पीढ़ी जिसे 1950 के दशक की भयावह पोलियो महामारी याद है, वह लोहे का फेफड़ा इस बात का साक्षी था कि टीकाकरण हमें कितनी दूर ले आया है: उस बिंदु तक जहाँ किसी समय का महत्वपूर्ण चिकित्सीय उपकरण अब पूरी तरह से एक संग्रहालय की वस्तु बन गया है।

दुनिया के अधिकांश हिस्से के लिए, पोलियो की कहानी सरल है: वर्षों के डर के पश्चात्, एक टीका विकसित किया गया और एक बीमारी पर जीत हासिल की गयी। लेकिन दुनिया के कुछ हिस्से के लिए, कहानी अलग थी। बहुत से देशों में, टीके उपलब्ध नहीं थे, सामुदायिक टीकाकरण बहुत महंगा था, या बच्चों तक नहीं पहुँचा जा सका। जबकि बाकि दुनिया ने पोलियो को उनके संग्रहालयों में निर्वासित कर दिया, इन देशों में, बीमारी का प्रकोप ज़ारी रहा - जब तक रोटरी ने अपने कदम आगे ना बढ़ाये और कहा कि सभी बच्चे, चाहे वे कही भी रहते हो या उनकी जो भी परिस्थिति हो, एक पोलियो मुक्त जीवन जीने के अधिकारी है।

पोलियोप्लस की शुरुआत के बाद के वर्षों में, रोटरी, दुनिया भर की सरकारों, और वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल के संयुक्त प्रयासों ने प्रति वर्ष होने वाले पोलियो के अनुमानित 3,50,000 मामलों को नीचे लाकर 2017 में अब तक कुछ ही मामलों तक पहुँचा दिया है। लेकिन हमें शून्य मामलों तक पहुँचना ही है, और वहीं रहना है, उन्मूलन हासिल करने के लिए। ऐसा करने के लिए, हमें सभी की मदद की आवश्यकता है।

24 अक्टूबर को, हम विश्व पोलियो दिवस मनाएंगे। यह दिन इस बात का जश्न मनाने के लिए है कि हम कितना दूर आए है एवं हम सभी के लिए एक अवसर है ताकि हम उन्मूलन के कार्य को पूरा करने के लिये जागरुकता फैला सकें और धन इकठ्ठा कर सकें। मैं सभी रोटरी क्लबों को किसी प्रकार से विश्व पोलियो दिवस गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए कहता हूँ, और विचारों के लिए एवं आपके कार्यक्रम को दर्ज करने के लिए *endpolio.org* पर जाने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। चाहे आप एक गुप्त नीलामी रखें, एक आभासी वास्तविकता दिखाएं, धन इकठ्ठा करने के लिए एक पैदल यात्रा आयोजित करें, या एक पर्पल पिंकी दिवस की मेजबानी करें, आपका क्लब एक वास्तविक परिवर्तन ला सकता है।

इस वर्ष, हमारा विश्व पोलियो दिवस लाइव स्ट्रीम कार्यक्रम सीएटल स्थित बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के मुख्यालय में आयोजित होगा; आप इसे *endpolio.org* पर पैसिफिक समय अनुसार दोपहर 2:30 से देख सकते है। जैसा कि आप में से बहुत से लोग जानते है, रोटरी अगले तीन वर्षों तक प्रति वर्ष 50 मिलियन डॉलर इकठ्ठा करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस राशी को गेट्स संस्थान द्वारा 1-में-2 को मिलाया जायेगा - रोटरी द्वारा विश्व पोलियो दिवस पर एवं साल भर में इकठ्ठा किये गए कुल धन को प्रभावी रूप से तीन गुना करते हुए। चलिए सभी विश्व पोलियो दिवस पर एक परिवर्तन लायें - और 'एंड पोलियो नाओ' की मदद करें।

इयन एच.एस. राय्सली
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल, 2017-18

एक अनुकरणीय लघु ऋण केन्द्र

प्रिय रोटेरियनों,

संयुक्त राष्ट्र संघ के विकास के लक्ष्य हमें गरीबी उन्मूलन, महिलाओं के सशक्तिकरण एवं उत्थान, विकास के लिए वैश्विक साझेदारी बनाने और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने के प्रयासों पर फोकस करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अक्टूबर वह महिना है जिसे रोटरी ने आर्थिक एवं सामुदायिक विकास को समर्पित किया है, जब हम स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को विकसित करने और उस यात्रा पर सफलताओं का जश्न मनाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता का नवीनीकरण करते हैं। यहाँ मैं स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं और समुदायों के विकास को बढ़ावा देने के लिए अपने गृह क्लब के लघु ऋण केन्द्रों की प्रतिबद्धता के कुछ अनुभव साझा करना चाहता हूँ।

इससे पहले कि मैं अपनी बात कहूँ, मुझे बांग्लादेश के नोबल पुरस्कार विजेता, ग्रामीण बैंक के संस्थापक, लघु उद्योग ऋण के प्रणेता प्रोफेसर मुहम्मद युनूस के बारे में कुछ कहना है। प्रोफेसर युनूस ने बांग्लादेश में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक के रूप में सेवारत रहते हुए लोगों के जीवन परिवर्तन का कार्य आरंभ किया। उनका आस-पास के गाँवों की गरीब महिलाओं को व्यक्तिगत स्तर पर छोटे-छोटे ऋण देने का काम शुरू होकर ग्रामीण बैंक के रूप में सामने आया, जिसकी आज देश भर में 2500 से भी ज्यादा शाखायें हैं। मुझे 2012 में बैंकॉक में रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में उनकी बात सुनने का अवसर मिला जब उन्होंने विकासशील देशों में रोटरी के काम की सराहना की।

उन्होंने रोटरी को सामाजिक व्यापारिक उद्यमियों को सहयोग देने के लिए भी प्रोत्साहित किया, जो कि सामाजिक माइक्रो-क्रेडिट-वित्तपोषित व्यवसायों के साथ केवल राजस्व उत्पन्न करने के लिए काम नहीं करें बल्कि उन समुदायों के मुनाफे को भी वापस करने के लिए भी काम करें जहां वे कार्यरत हैं।

करूर अपने कपास हैंडलूम होम टेक्सटाइल के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। यह उद्योग, जो प्रति वर्ष रु. 3,000 करोड़ से अधिक के घर के सामान और परिधान का निर्यात करता है, वह श्रम प्रधान है, जो कि कई हजार अर्ध-कुशल और अकुशल श्रमिकों को रोजगार देते हैं, जिनकी औपचारिक बैंकिंग क्षेत्र तक पहुंच नहीं थी। ये असहाय दैनिक मजदूरी कमाने वाले अतिब्याजखोर मुनाफे वालों के नियंत्रण में थे, जिन्होंने उनकी कमाई के एक-एक रूपये को छीन लिया था। ऐसे पीड़ित लोगों को इन ब्याजखोरों के आतंक से मुक्ति दिलाने के लिए रोटरी क्लब करूर ने 2000-2001 में लघु ऋण केन्द्र की स्थापना की। इस परियोजना को अन्तर्राष्ट्रीय प्रायोजक के रूप में रोटरी मंडल 6460 ने सहयोग किया। इस केन्द्र द्वारा दर्जियों को (सिलाई मशीन खरीदने) सब्जी और फूल विक्रेताओं, चाय एवं छोटी दुकान मालिकों, छोटे किराना व्यापारियों, इलेक्ट्रीशियनों और महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों को रु. 5 से रु. 10 हजार का ऋण उपलब्ध करवाया गया। आज रु. 50 लाखें के सुरक्षित और जीरो डूबत ऋण के साथ रोटरी क्लब करूर इस स्थिति में है कि वह प्रतिवर्ष 350-400 लाभार्थियों को लघु ऋण देकर और लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में उल्लेखनीय भूमिका निभा रहा है।

यह सब इसलिए संभव हो पाया कि रोटरी सदस्यों ने समर्पित भाव से अपनी सहभागिता दी, अपना समय और धन लगाया और विशेष रूप से रोटरी फाउण्डेशन ने आर्थिक सहायता प्रदान की। इस लघु ऋण केन्द्र की सफलता में मुख्य भूमिका उस प्रशिक्षण की भी है जिसके अन्तर्गत लाभार्थियों को ऋण देने से पूर्व बैंकों के सामान्य ज्ञान की बजाय व्यावहारिक कौशल और पारिवारिक मूल्यों के बारे में प्रशिक्षित किया गया।

मुझे रोटरी क्लब करूर की इस उपलब्धि पर गर्व है और मैं उम्मीद करता हूँ कि प्रत्येक क्लब और रोटरी सदस्य उनके इस उदाहरण का अनुकरण करेंगे और जहाँ वे सेवा करते हैं उन समुदायों की स्थानीय अर्थ व्यवस्थाओं को विकसित करने में उपयुक्त भूमिका निभायेंगे।

आइए हम सब मिलकर काम करें क्योंकिः *रोटरी परिवर्तन ला रहा है।*

C. Bask

सी भास्कर
निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

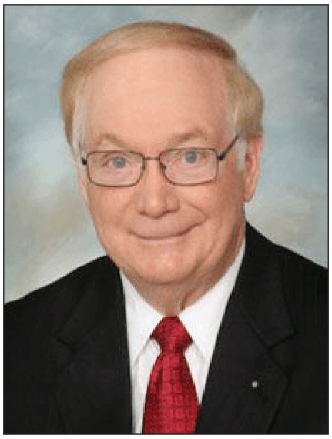

शांति-निर्माताओं के रूप में रोटेरियनों की भूमिका का विस्तार

जब हम शांति के बारे में बात करते है तो हमारा क्या मतलब होता है?

1921 में, रोटरी के चौथे उद्देश्य की स्थापना की गयी: "सेवा के आदर्श में एकीकृत व्यावसायिक एवं पेशेवर लोगों के एक वैश्विक साहचर्य के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय समझ, ख्याति एवं शांति की उन्नति।"

आज रोटरी में, हम शांति को एक अमूर्त अवधारणा के रूप में नहीं बल्कि एक जीवित, मानव विकास की गतिशील अभिव्यक्ति के रूप में देखते है, जो हमारे मानवीय मिशन का एक अभिन्न अंग है।

शांति कायम करने का हमारा काम बहुत कुछ रोटरी सदस्यों की तीन महत्वपूर्ण गतिविधियों का निष्पादन करने की काबिलियत पर निर्भर होता है: परिवर्तनकारी साझेदारियों का निर्माण, हमारी सैकड़ों परियोजनाओं की सहायता के लिए धन इकठ्ठा करना, एवं रोटरी शांतिदूतों की भर्ती करना और उनके काम में सहायता करना।

इस वर्ष रोटरी संस्थान ने इंस्टिट्यूट फॉर इकोनॉमिक्स एंड पीस के साथ एक सामरिक साझेदारी की है जो शांतिपूर्ण समाजों को बनाने एवं उन्हें बरकरार रखने वाले मनोभावों, संस्थानों, और संरचनाओं को पहचानने एवं मापने में अग्रणी है।

इस साझेदारी के माध्यम से, रोटरी इस संस्थान के साथ रोटेरियनों और शांतिदूतों के लिए एक ऑनलाइन शिक्षण पोर्टल बनाने के लिए काम करेगी ताकि उनकी वर्तमान निपुणता को जोड़ा जा सके, नयी पद्धतियाँ लागू की जा सकें, और संघर्षों के पीछे मौजूद मुद्दों को संबोधित करने के लिए समुदायों को संगठित किया जा सकें। हमारा लक्ष्य समुदाय-आधारित परियोजनाओं को शांति और संघर्ष के समाधान में पोषित करने का है जो प्रायोगिक एवं प्रभावपूर्ण हो।

रोटरी ने नयी साझेदारी के लिए धन इकठ्ठा करने के लिए और हमारे शांतिदूतों एवं अन्य लोगों को शिक्षित करने एवं समर्थन देने के लिए एक 'रोटरी शांति केंद्र बड़े उपहार पहल' भी शुरू की है।

अध्यक्ष इयन एच. एस. राय्सली के छह शांति निर्माण सम्मेलन - विश्व भर में फरवरी से जून तक होने वाले - शांति, रोटरी के ध्यानाकर्षण क्षेत्रों, और पर्यावरण संवहनीयता के मध्य संबंध की खोज करेंगे। हमारा इतिहास साबित करता है कि शांति कायम करने के लिए आपको एक राजनयिक होने की आवश्यकता नहीं है।

जब आप स्नातक करने के लिए संघर्ष कर रहे विद्यार्थी को परामर्श देते है, आप एक शांतिनिर्माता होते है।

जब आप अपने समुदाय में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कोई परियोजना शुरू करते है, तो आप दीर्घकालिक शांति और संघर्ष प्रबंधन के लिए परिस्थितियों का निर्माण करते है।

जब आप एक रोटरी शांतिदूत को समर्थन एवं सहयोग देते है, आप शांति में वृद्धि करते है।

आज के समय के जटिल संघर्षों को अधिक रचनात्मक समुदाय-आधारित पहलों की जरूरत है। एक साथ हम वास्तव में परिवर्तन ला सकते है।

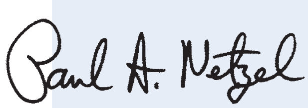

पॉल ए. नेटज़ेल
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

आप शांती को कैसे परिभाषित करते हैं? मुझे अपने विचार Paul.Netzel@rotary.org. पर भेजे।

Häcker
kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR	MANGALURU
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000	7899119955

E-mail: info@hacker-kitchens.com
Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

WHERE WILL ROTARY GLOBAL REWARDS TAKE YOU?

THE MEMBER BENEFIT PROGRAMME THAT OPENS UP A WORLD OF OPPORTUNITIES.

Rotary

SEE MORE AT ROTARY.ORG/GLOBALREWARDS

District Wise TRF Contributions as on August 2017

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus*	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
India					
2981	13,205	773	0	0	13,978
2982	10,551	60	609	0	11,220
3000	3,803	78	27,500	0	31,381
3011	21,784	100	(5,689)	0	16,195
3012	32,369	2,318	0	2,016	36,703
3020	1,724	0	19,950	8,594	30,267
3030	203	20,724	1,050	0	21,977
3040	0	0	0	0	0
3053	1,158	0	0	0	1,158
3054	70,000	102	65,000	0	135,102
3060	12,416	0	206	0	12,622
3070	7,560	148	0	(500)	7,208
3080	4,370	1,372	0	0	5,742
3090	1,073	0	0	0	1,073
3110	15,027	1,399	5,049	0	21,475
3120	13,214	508	0	0	13,722
3131	45,695	(4,431)	32,625	24,594	98,483
3132	20,173	660	0	0	20,832
3141	144,305	1,730	76,338	0	222,374
3142	111,476	0	0	(1,000)	110,476
3150	8,699	16	8,400	0	17,115
3160	30,702	0	0	0	30,702
3170	11,616	5,341	1,016	0	17,973
3181	12,286	250	0	78	12,615
3182	1,918	0	20,811	0	22,729
3190	777	200	0	16	993
3201	18,842	0	22,197	0	41,039
3202	1,250	340	0	0	1,590
3211	13,973	0	0	(10,000)	3,973
3212	115,469	102	0	0	115,571
3231	5,390	0	31,250	6,000	42,640
3232	25,502	2,000	4,455	0	31,958
3240	8,939	0	0	555	9,494
3250	8,559	0	0	0	8,559
3261	11,449	100	0	0	11,549
3262	333	0	0	0	333
3291	18,014	(27)	323	0	18,310
India Total	**823,600**	**33,862**	**311,091**	**30,352**	**1,198,905**
3220 Sri Lanka	12,677	10,067	0	1,217	23,961
3271 Pakistan	2,000	22,886	0	0	24,886
3272 Pakistan	129	5,500	0	1,000	6,629
3281 Bangladesh	43,060	0	0	7,025	50,085
3282 Bangladesh	7,106	150	0	0	7,256
3292 Nepal	20,711	100	36,456	0	57,267
South Asia Total	**909,281**	**72,565**	**347,547**	**39,594**	**1,368,988**
World Total	**14,884,124**	**2,783,996**	**1,834,673**	**2,434,366**	**21,937,159**

** Excludes Bill and Melinda Gates Foundation.*

Source: RI South Asia Office

14th
JJS
JAIPUR
JEWELLERY
SHOW
Ruby
...Red, Rare, Royal
the
December
show
JECC, JAIPUR
22-25 DECEMBER 2017
JAIPUR JEWELLERY SHOW
Gold Souk, TF-01, Third Floor, Adjoining Hotel Lalit, Jawahar Circle, Jaipur – 302017, Tel.: +91 141 4035900 / 2725648
E-info@jaipurjewelleryshow.org W-www.jaipurjewelleryshow.org

रोटरी के साथ भारत सरकार का प्रगाढ़ भागीदारी का प्रयास

रशीदा भगत

मैं समूचे भारतवर्ष की तरफ से पोलियो उन्मूलन में सहयोग के लिए रोटरी इन्टरनेशनल के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। केवल इसलिए नहीं कि भारत इस बीमारी से ग्रसित था, बल्कि पोलियो के खिलाफ लड़ाई में रोटरी के लगातार समर्थन व सहयोग के लिए। अंतिम चरण में जब हम बुरी तरह उलझ गए थे तब रोटरी और अन्य संगठन सरकार की मदद को आगे आये।''

अपनी इस प्रारंभिक टिप्पणी के साथ केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव सी.के. मिश्रा ने भारत सरकार की तरफ से भारत के रोटेरियनों द्वारा केन्द्र व राज्य सरकारों, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) व यूनिसेफ के साथ मिल कर भारत को पोलियो मुक्त करने के लिए किए गए कड़े संघर्ष के लिए आभार प्रकट किया। स्वास्थ्य मंत्रालय पुनः एक बार रोटरी जैसे मजबूत और विश्वसनीय सहयोग की तलाश में है, क्योंकि स्वास्थ्य सम्बन्धी देखभाल का काम केवल सरकार का ही नहीं होना चाहिए, वरना हम लक्ष्य हासिल नहीं कर पायेंगे। उन्होंने रोटरी से अपील की कि जिस तरह रोटरी ने पहले पोलियो उन्मूलन अभियान में प्रभावशाली भागीदारी निभाते हुए मदद की, उसी तरह का सहयोग लगातार जारी रखें। उन्होंने कहा, ''हमने आप लोगों से सीखा है कि किस तरह बाधाओं और परेशानियों को दूर किया जा सकता है। रोटरी इन्टरनेशनल सर्वत्र मजबूती से विद्यमान है, उसके पास बौद्धिक क्षमता है और भारत में स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध कराने के लिए व्यापक नेटवर्क है।''

साझेदारी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं

मिश्रा ने बताया कि साझेदारी पुनर्गठित राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ''साझेदार अनेक कार्यक्रमों के हिस्सेदार होते हैं, विकास में भागीदार सहयोगी या चिकित्सक समुदाय या नागरिक समाज। रोटरी एक महत्वपूर्ण सहयोगी रहा है और हम सम्बन्धों को पोलियो से आगे ले जाना चाहते हैं।''

उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य मंत्रालय में *मिशन इन्द्रधनुष* (MI) के अन्तर्गत एक बहुत ही महत्वकांक्षी कार्यक्रम यूनिवर्सल इमेनाईजेशन (UI) प्रोग्राम हाथ में लिया है। ''सरकार की जानकारी में आया है कि 90 लाख बच्चे हमारे णख कार्यक्रम से बाहर है और इसीलिए चख की शुरूआत की गई। गत दो वर्ष हम उनमें से करीब 60 लाख बच्चों तक पहुँच चुके हैं, लेकिन जब आप अपने निचले स्तर के स्वास्थ्य सेवा सिस्टम पर अधिक भार डालते है तब आपको बाहर से पर्याप्त सहयोग की आवश्यकता होती है और मैं आपका सहयोग केवल संख्या में नहीं चाहता। मैं जानता हूँ कि आपके पास इस क्षेत्र में ज्ञान और बुद्धि का भण्डार है और आपके विश्वस्तरीय सम्बन्ध हैं जिनका हम निश्चित रूप से उपयोग कर सकते हैं।''

उन्होंने रोटरी सदस्यों से निवेदन किया कि वे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के साथ जुड़े। ''भौगोलिक स्तर पर एक समय निश्चित समय पर एक स्थान पर किया गया केन्द्रित प्रयास शानदार है लेकिन जब तक यह उचित मात्रा में और नियमित नहीं है तब इसकी कोई कीमत नहीं है इसीलिए कृपया इसकी निरन्तरता को सुनिश्चित करें।''

अंतिम चरण में जब हम बुरी तरह उलझ गए थे तब रोटरी और अन्य संगठन सरकार की मदद को आगे आये।

सी.के. मिश्रा
केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव

स्वास्थ्य सचिव ने आगे कहा ''लेकिन यह भागीदारी एक फॉलोअप प्रणाली के साथ सुदृढ़ और संस्थागत होनी चाहिए। मंत्रालय में हम हरेक नये विचार का बेहद स्वागत करते हैं भलेही हम जो भी कर रहे हैं कितना भी मुश्किल हो इसलिए कृपया अपने विचार और सुझाव हमें दे।''

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा रोटरी क्लब के पूर्व अध्यक्ष राजेन्द्र के. साबू ने मिश्रा की इस बात के लिए सराहना कि उन्होंने बाढ़ के दौरान बिहार में कोशी नदी के किनारे बच्चों के टीकाकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा ''मिश्रा यदि ऐसा नहीं करते तो भारत में आज भी पोलिया बना रहता।''

पोलियो प्लस में 'प्लस'

पोलिस प्लस में प्लस की व्याख्या करते हुए जिसके बारे में कई रोटरी सदस्यों को भी पता नहीं है, साबू ने बताया कि ''जब रोटरी ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), यूनिसेफ आदि के साथ अनुबन्ध किया तब उन्होंने कहा कि हम केवल पोलियो के बारे में बात नहीं कर सकते तब यह निर्णय किया गया कि रोटरी पोलियो की देखभाल के साथ-साथ 5-6 अन्य बीमारियों के लिए भी टीकाकरण का काम करेगी, जिन्हें ''प्लस'' कहा गया।'' उन्होंने आगे कहा ''हमारे सामने प्लस वाले हिस्से की देखभाल करने की चुनौती है जिसमें मीजल्स व रूबेला शामिल है, अब हम स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ एक अनुबन्ध करने जा रहे हैं।''

उन्होंने आगे जोड़ा कि अब रोटरी फाउण्डेशन ने यूनिवर्सल इम्यूनाइजेशन (UI) को एक प्रोजेक्ट के रूप में स्वीकार कर लिया है जिसमें भारत के रोटेरियन सम्मिलित किये जायेंगे। उन्होंने कहा ''हमें इस काम को पूरे मन से करना है ट्रस्टी भारत की तरफ देख रहे हैं यदि यह भारत में सफल होता है तो इसे दूसरे देशों में भी शुरू किया जा सकता है। इस काम के लिए धन कहाँ हैं, धन वहाँ हैं यह आपकी जेब में ...आपको इसको तलाशना है।

उन्होंने कहा ''रोटरी के वरिष्ठ नेता मीजल्स और रूबेला के टीकाकरण पर जागरूकता एवं प्रचार-प्रसार के तरीकों पर विचार कर रहे हैं और इसमें रेलवे मंत्रालय की मदद लेकर दो या तीन रेल के डिब्बों पर संदेश लिखे जा सकते हैं जैसे 'आओ भारत को मीजल्स और रूबेला से मुक्त करें' जो एक स्टेशन पर कुछ दिन रूकें और उसके बाद महत्वपूर्ण स्टेशन तक यात्रा करें।'

चलो दानदाता बनें

रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय के निदेशक भास्कर ने कहा कि जब हम पोलियो उन्मूलन के अभियान में लगे हुए थे उस समय रोटरी इन्टरनेशनल बोर्ड के सामने यह सबसे बड़ी चिंता थी कि ''हम लोग असंभव काम को करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन हमने, सरकार सौजन्यकर्ताओं, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, WHO, यूनिसेफ आदि के साथ साझेदारी बनाई और सबसे मदद ली और असंभव को संभव बनाया, पोलियो का उन्मूलन किया और अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य के क्षेत्र में हमेशा लिखी जाने वाली सफलता की कहानी बनाई।''

भास्कर ने कहा ''लेकिन जबसे भारत पोलियोमुक्त घोषित हुआ तब से भारत के रोटेरियन थोड़ा उदासीन हो गये, लेकिन जब तक पोलियो हमारे पड़ौस में - पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान में दुबका हुआ है तब तक किसी भी तरह की ढ़िलाई का कोई स्थान नहीं है। ''कल्पना कीजिए की यदि पोलियो वापिस आता है तो हमारा 23 वर्ष का समय, पैसा, हमारे द्वारा किये गये प्रयास सब दोबारा करने होंगे, जिन भी लोगों ने अटलांटा कन्वेंशन में भाग लिया उन सबको पता है कि दुनिया से पोलियो मुक्त करने के लिए अगले तीन वर्ष में हमें 1.5 बिलियन डॉलर की आवश्यकता होगी।''

हमारे सामने प्लस वाले हिस्से की देखभाल करने की चुनौती है जिसमें मीजल्स व रूबेला शामिल है।

राजेंद्र के. साबू
पूर्व आरआई अध्यक्ष

उन्होंने आगे कहा कि भारत आज तक पोलियो टीकाकरण के लिए धन राशि प्राप्त करता आया है ''मैने ट्रस्टी सुशील गुप्ता जी को आश्वस्त किया है कि इस वर्ष नई परम्परा स्थापित करने वाले हमारे डिस्ट्रिक्ट गवर्नर पोलियो खत्म करने के अभियान के लिए धन जुटाने के कार्यक्रमों पर फोकस कर रहे हैं। अगले कुछ वर्षों में हमारा ध्यान धन जुटाने पर इस तरह केन्द्रित होना चाहिए कि बाकी लोग कल्पना नहीं कर सकें। पच्चीस वर्ष पहले जब यह अभियान शुरू हुआ था तब भारतीय अर्थव्यवस्था इतनी ठीक नहीं थी। आज हम दुनियां की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, दूसरे सबसे बड़े स्टील उत्पादक हैं, पाँचवे सबसे बड़े वाहन निर्माता हैं, छठा सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र हैं और हमारे पास दुनियां का तीसरे नम्बर का सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भण्डार हैं।''

भास्कर ने स्वास्थ्य सचिव को आश्वस्त किया कि हमारे क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं की मदद से हम MI के क्रियान्वयन पर फोकस करेंगे और यह साबित कर देंगे कि हम कोई भी काम कर सकते हैं।

रोटरी फाउण्डेशन के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने कहा कि वे आज गर्व के साथ खड़े हो सकते हैं ''क्योंकि आपने और आपके पूर्व पदाधिकारियों ने भारत से पोलियो को बाहर कर दिया है''

नई नेशनल पोलियो प्लस कमेटी

अध्यक्ष

पीडीजी **दीपक कपूर**

सलाहकार

आरआईडी **सी. भास्कर**
पीआरआईपी **राजेंद्र साबू**
पीआरआईपी **कल्याण बेनर्जी**
टीआरएफ ट्रस्टी **सुशील गुप्ता**
पीआरआईडी **अशोक महाजन**
पीआरआईडी **यश पाल दास**

सदसस्य

पीडीजी **सुशील खुराना**
पीडीजी **राजीव प्रधान**
पीडीजी **सिद्धार्थ बोस**
पीडीजी **जोगेश गंभीर**
पीडीजी **इक्बाल सिंह तोमार**
पीडीजी **ई.के. सगादेवन**
पीडीजी **आर. बद्री प्रसाद**
पीपी **अजय सक्सेना**

उन्होंने कहा कि ट्रस्टियों में मीटिंग में जब यह प्रस्ताव विचारार्थ लाया गया ''सबकी भौंहे खड़ी हो गई कि जब दुनियां से पोलियो अभी तक पूरी तरह से साफ नहीं हुआ है तब हम किसी दूसरे विषय पर क्यों बात कर रहे हैं, जबकि पाकिस्तान और अफगानिस्तान अभी भी बीमारीग्रस्त देश हैं, लेकिन हम लोगों ने उन्हें बताया कि इसकी आवश्यकता है क्योंकि यह पोलियो टीकाकरण को मजबूती देगा और पोलियो को भारत से दूर रखेगा।''

उन्होंने आगे कहा कि हाल ही बिहार की यात्रा के दौरान मैने WHO में मेरे एक दोस्त की मदद से टीकाकरण के आँकड़ों की जानकारी प्राप्त की, ''उसने बताया कि बिहार में नियमित टीकाकरण 73 प्रतिशत है, जबकि उत्तरप्रदेश में 68, यह मेरे लिए संतोषप्रद था। मैने महसूस किया कि हम 85 प्रतिशत के लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं वह दिन दूर नहीं है कि हम मीजल्स और रूबेला को भारत से बाहर फैंक सकते हैं जिस तरह हमने पोलियो को दूर किया।''

पोलियो को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 1987 में निकाली गई पहली रैली जिसे राष्ट्रपति भवन से भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा झण्डी दिखाकर रवाना किया गया था उसे याद करते हुए गुप्ता ने सुप्रसिद्ध शायर मजरूह सुल्तानपूरी के एक प्रसिद्ध शेर का उल्लेख किया *''मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल मगर, लोग साथ आते गए कारवां बनता गया''*

एक बड़े अभियान की आवश्यकता

अपने प्रारंभिक भाषण में भारत की पोलियो प्लस कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष दीपक कपूर ने कहा ''दो मिलियन बच्चे सात लाख टीकाकरण बूथ, ग्यारह लाख टीकाकरण टीमें, 1.5 लाख वाहन... आप इसे कर चुके हैं वर्ष में दो बार, एक के बाद एक वर्ष, प्रतिवर्ष तेईस वर्ष तक वास्तव में पोलियो के खिलाफ हमारी लड़ाई ने रोटरी सदस्यों की इस बात में सहायता की कि इस बात को जान सकें कि उनमें कितनी क्षमताऐं हैं।''

उन्होंने आगे जोड़ा लेकिन ''अतीत हमेशा भविष्य से कम महत्वपूर्ण होता है, जबकि भारतीय रोटेरियन पोलियो प्रतिरक्षण में एक बड़ा काम कर चुके हैं वहीं रूबेला और मीजल्स टीकाकरण अभियान एक नई कहानी होगा। हम 30 मिलियन गर्भवती महिलाओं की बात कर रहे हैं, 26 मिलियन नवजात शिशु, 9 मिलियन प्रतिरक्षण केन्द्र, 27 हजार कोल्ड चैन पोइंट... और इसमें उनका हेपेटाइटिस-बी और टीटनेस से बचाव भी शामिल हैं।'' वास्तव में यह विशालकाय कार्यक्रम हैं लेकिन हम जो कुछ कर सकते हैं वह करना चाहिए।

वहाँ उपस्थित लोगों से नई नेशनल टीम (देखें बॉक्स) का परिचय कराते हुए उन्होंने कहा कि यह सब रोटेरियन है जिन्होंने रोटरी की गतिविधियों में उल्लेखनीय कार्य किया है और वे आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं।

पोलियो की वापसी की संभावनाओं के खिलाफ जागरूक रहकर डटे रहने की आवश्यकता पर बल देते हुए कपूर ने कहा कि टीकाकरण कार्यक्रम का महत्वपूर्ण पहलू जो अतीत में भी था और आज ज्यादा है वह है इस बात की निगरानी रखना कि ऐसा एक भी बालक छूट न जायें जिसे पोलियो है या उसके पोलियो जैसे लक्षण है।

एक अवलोकन: अतीत का

भारत में टीकाकरण के सफर पर एक दृष्टि डालते हुए थकज के राष्ट्रीय कार्यक्रम अधिकारी (प्रतिरक्षण) डॉ. बलविन्दर सिंह ने बताया कि वर्ष 1978 में ''भारत और दुनिया चेचक को लेकर संघर्ष कर रहे थे, और उस

रशीदा भगत

समय कोई भी व्यवस्थित टीकाकरण कार्यक्रम नहीं था, लेकिन जैसे ही चेचक का खात्मा हुए समूचे विश्व ने एक उचित टीकाकरण बनाने का निर्णय किया।

वर्ष 1985 में जब पोलियो का टीका सामने आया तभी भारत ने तय किया कि ''हमें प्रत्येक बच्चे को टीका लगाकर प्रतिरक्षित करना चाहिए।'' और तभी पोलियो खुराक के लिए निर्धारित आयु 5 वर्ष को कुछ महिनों के शिशु तक नीचे लाया गया।

सर्वप्रथम कोल्ड चेन स्थापित की गई। इसके बाद पोलियो सहित बाकी 6 रोकने योग्य बीमारियों के टीके निर्माण करने की क्षमता को विकसित किया गया। उन्होंने बताया कि हमारा टीकाकरण कार्यक्रम दुनिया के सबसे बड़े स्वास्थ्य कार्यक्रमों में से एक था। चीन में जहाँ प्रतिवर्ष 18 मिलियन बच्चे पैदा होते है, जबकि भारत में यह संख्या 26.7 मिलियन है। यह संख्या बहुत विशाल और यद्यपि हम एक प्रतिशत को छोड़ भी देते है, तभी यह संख्या बहुत बड़ी है।

सिंह ने खुलासा किया कि हमारे यहाँ टीकाकरण का कार्य 9 मिलियन केन्द्रों पर किया जाता है, यह एक अस्पताल हो सकता है, एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (PHC) हो सकती है, एक उप स्वास्थ्य केन्द्र हो सकता है और यहाँ तक कि गाँव की चौपाल और आंगनबाड़ी केन्द्र भी सभी स्थानों पर बुनियादी सुविधायें नहीं होती। टीकों को आसपास के करीब 27 हजार केन्द्रों पर आवश्यक तापमान 2-8 डिग्री सेल्सियस पर सुरक्षित रखा जाता है।

उन्होंने आगे बताया कि गत दिवस वे हरियाणा के मेवात क्षेत्र में थे। ''वहाँ बहुत ही मुश्किल स्थितियाँ हैं। वहाँ के लोगों ने अपने बच्चों को टीका लगाने के लिए हमें चुनौती दी। मेवात में केवल 18 प्रतिशत टीकाकरण हुआ है। बाकी 90 प्रतिशत एक काल्पनिक स्वप्न की तरह है।''

स्वास्थ्य मंत्रालय के डिप्टी कमिश्नर (टीकाकरण) प्रदीप हल्दर ने बताया कि अक्सर मीटिंगों में मुझसे पूछा जाता है कि रोटरी ने ऐसा क्या कर दिया जो उसे इतना श्रेय मिलता है और ''मैं उन्हें कहता हूँ कि उन्होंने बिहार के लिए पूरी की पूरी ट्रेन के बीच पोलियो के टीकों के लिए दो वैगन बुक कर ली। यह कार्य कोई कर सकता था या किसी ने किया है तो वह केवल रोटरी है। जिसे इस कार्य का श्रेय मिला है। एक बार फिर मिशन इन्द्रधनुष (MI) के लिए हमें रोटरी की जरूरत है।''

ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने विश्वास प्रकट किया कि भारतीय रोटेरियन यूनिवर्सल इम्युनाइजेशन में एक बेहतर भूमिका निभा सकेंगे, लेकिन उन्होंने याद दिलाया, ''हमारे पास माह 16 महिने का समय है, उतने सारे वर्ष नहीं जितने हमें पोलियो में मिले थे, इसलिए हमें हमारी योजना और कार्य करने का तरीका बदलने

सुनिश्चित करें कि आप विजय मंच

रोटरी इन्टरनेशनल के पूर्व अध्यक्ष राजेन्द्र साबू ने दिल्ली पोलियो मीट में उपस्थित सहभागियों से कहा कि रोटरी सदस्यों ने पोलियो मुक्त विश्व का एक स्वप्न देखा था और उस समय यह चिंता का विषय था कि कुछ क्षेत्रों में आयोजित विभिन्न पोलियो कार्यक्रमों में रोटरी का प्रतीक चिन्हे नहीं था।

उन्होंने कहा ''हालांकि निःसन्देह हमारी भूमिका की सराहना उन लोगों ने की जो हमारे काम को जानते हैं, लेकिन जब तक विश्व पोलियो मुक्त होता है, तब तक यदि हमने हमारी उपस्थिति महसूस नहीं करवाई तो हमारा योगदान भुला दिया जायेगा। उस दिन जब दुनियां विजय मंच पर जाये उस दिन रोटरी भी वहाँ पर हो इस बात को सुनिश्चित करने के लिए हमें निरंतर प्रयास करने होंगे। मीजल्स और रूबैला टीकाकरण के लिए हमारे द्वारा किया गया कार्य राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के वर्तमान नेतृत्व के दिलो-दिमाग में हमारा नाम सदैव जिन्दा रहेगा। इसलिए रोटरी इन्टरनेशनल के निदेशक सी. भास्कर के माध्यम से मेरी सभी डिस्ट्रिक्ट गवर्नरों से अपील है कि जब विजय का अंतिम बिगुल बजे उस समय आप यदि वहाँ नहीं होंगे तो यह बहुत निराशाजनक होगा। इसलिए आप इस बात को सुनिश्चित करें कि विजय मंच पर रोटरी की मौजूदगी हो।

बाएं से *: डीजीओं परवींदर सिंह, रवि चौधरी, जी.वी. रामा राव, पी.एम. शिवशंकरन, बी.एम. शिवराज, टी.के. रूबी, आरआईडी सी. भास्कर, डीजीओं जे. आब्रहाम, वव्यंकटेश वी. चन्ना, सतीश सिंगाल, विवेक कुमार, बाघ सिंह पन्नु और पी. गोपालकृष्णन*

भारतीय सरकार रोटरी से क्या चाहती हैं

आईएनपीपीसी

प्रधान मंत्री पी वी नरसिंह राव पीआरआईपी राजेंद्र साबू (बाएं से दूसरे), आईएनपीपीसी चेयर ओ पी वायश (बाएं से चौथा) और आरआईएसएओ क्षेत्रीय प्रमुख विनोद भोला (दाएं) की उपस्थिति में 1995 में एनआईडी के अवसर पर एक बच्चे को पोलियो ड्रॉप का प्रबंध करते हुए।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के राष्ट्रीय कार्यक्रम अधिकारी (टीकाकरण) डॉ. बलविन्द्र सिंह के अनुसार टीकाकरण के अपने महत्वाकांक्षी लख्य 90 प्रतिशत कवरेज के लिए पोलियो प्लस की दो खुराक 9वें व 18वें महिने में हासिल करने, जिसके जरिए बच्चों की पोलियो, मीजल्स, रूबैला, टी.बी. आदि से बचाने के लिए भारत सरकार रोटरी से निम्न सहयोग चाहता है:-

- उच्च स्तरीय वकालत, भारत के 118 जिलों और 7 नगरीय क्षेत्रों में, जिनमे से अधिकांश उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में, सभी भागीदारों का पूरा योगदान व सहयोग।
- जिला एवं प्रांत स्तर पर *मिशन इन्द्रधनुष* (MI) से जुड़े उन रोटरी सदस्यों की पहचान कराकर उनके सम्पर्क सूत्र उपलब्ध कराना ताकि सरकारी अधिकारी सही सदस्य से सम्पर्क कर सकें।
- राष्ट्रीय स्तर पर वरिष्ठ रोटरी सदस्यों की ऐसी टॉस्क फोर्स का गठन जो विशेष बातचीत व संवाद में शामिल हो सके।
- जागरूकता पैदा करें, कार्यक्रम को अधिक दृष्टिगोचर बनायें ओर नवाचारों का समर्थन करें।
- पोलियो में जैसे आपने किया, वैसे पुरस्कारों की नव रचना।
- राजनीतिक वचनबद्धता आपके पास पहुँच है।
- एक बार पुनः ख्यातिप्राप्त लोगों को बोर्ड में लेना। क्रिकेटर्स और अन्य दूसरे खिलाड़ियों, फिल्म अभिनेताओं और बाकी दूसरे राज्यों की प्रसिद्ध हस्तियाँ जैसे मिथाली राज, वर्णिका कुण्ड जिन्हें मीडिया का बड़ा सहयोग मिला है। ऐसे लोग जिन्हें सोशियल मीडिया पर बहुत फॉलो किया जाता है। इसी तरह बैडमिन्टन के खिलाड़ियों जैसे सायना नेहवाल, सुपुरसाला सिंधु य कबड्डी लीग के खिलाड़ियों जिनका ग्रामीण क्षेत्र में बड़ा नाम है, जहाँ बड़ा समुदाय उन्हें देखता है।
- हिन्दी, भोजपुरी, अवधि, उर्दू, पंजाबी बोलने वाले प्रसिद्ध लोगों से जुड़ना।
- अल्पसंख्यक समुदायों के साथ सहयोग जहाँ हमें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, हमें टीकाकरण के लिए रोटरी उलेमा कमेटी को फिर से सामने लाना होगा और हमें आपकी वह वकालत भी चाहिए जो रोटरी ने पोलियो के विरोध के सामने की थी। इमाम और उलेमा को आगे लाना होगा।
- मोबाइल फोन की ताकत का उपयोग। हमें इस संदेश को प्रसारित करने के लिए योजना बनानी होगी।
- चिकित्सा शिविरों का आयोजन, विशेषकर उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में।
- सामाजिक-सामुदायिक नेताओं, ग्राम प्रधानों को जोड़ना, सरपंचों, जिला मजिस्ट्र के मध्य प्रतिस्पर्धा करवाना, मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों के सामने संस्थागत पुरस्कार और प्रशंसा-पत्र दिलवाना।
- अधिक काम सुनिश्चित करना, एख एक बड़ा कार्य है। वहाँ प्रत्येक सप्ताह टीकाकरण है, यह पोलियो शिविर की तरह नहीं है। MI बहुत तेजी से किये जाने वाला नियमित टीकाकरण है और आप उस जनसंख्या के पास जा रहे हैं जहाँ पहले कभी नहीं गये और वहाँ किसी भी तरह का सेवाकार्य नहीं हुआ।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) इसकी निगरानी कर रहा है इसलिए आपको अधिकारिक आँकड़ें उपलब्ध होंगे।
- सूचना तकनीक (IT) पृष्ठभूमि के साथ स्कूल शिक्षकों को जोड़ना। स्कूलों और कॉलेज बैंड के माध्यम से इस संदेश का प्रचार करना।
- किसी अच्छे कार्यक्रम स्थल पर ''एक शाम टीकाकरण के नाम'' जैसे कार्यक्रम आयोजित करना औन उनमें अच्छी संख्या में लोगों को बुलाना।
- चित्रकला प्रतियोगिताऐं कराना।
- स्कूली बच्चों का सहयोग लेना। मदरसे बदल रहे हैं, मानसिकता बदल रही हैय यदि आप संदेश देते हैं तो वह घर तक पहुँचेगा। गत सप्ताह हमने एक बिशप से मिले, हमें उत्तर पूर्व में उनके सहयोग की जरूरत है। गुरूद्वारों को शामिल करें।
- पैदल चालन, मैराथन, रैलियाँ उसी तरह आयोजित करें जिस तरह हम पहले कर चुके हैं।
- अनुरकणीय प्रयासों को मान्यता एवं प्रशंसा दें।
- किसी भी पीड़ित बच्चे की माँ का 1-2 मिनिट का वीडियो क्लिप भी बनाया जा सकता है।
- रेलगाड़ियों और विमानों पर संदेश।
- टीकाकरण कार्डों को बिग बाजार से जोड़कर डिस्काउण्ट दिया जा सकता है... कॉर्पोरेट आपको मदद कर सकते हैं और आप उन्हें अपने बोर्ड में शामिल कर सकते हैं।
- उन्हें छाता, टोपी, बैनर दीजिए, आप उन्हें पोलियो कार्यक्रम के दौरान बिगाड़ चुके हैं।

की आवश्यकता है। इसलिए नये सिरे से योजना बनाइये और ज्यादा सोच-विचार किए बिना इस कार्य को शुरू कीजिए। जिस तरह जूता-निर्माता कम्पनी छखघए के प्रतीक चिन्ह में लिखा है - बस हमें इसे करना है।''

जैसा कि पूर्व में इस कार्यक्रम के भयावह परिदृश्य की चर्चा की गई जहाँ अल्पसंख्यक समुदाय का बड़ा हिस्सा अपने बच्चों को पोलियो की खुराक देने का विरोध कर रहा था, उस पर सुशील गुप्ता और राजेन्द्र साबू ने कहा कि यह एक चुनौती भरा परिदृश्य है, लेकिन इसका भी मुकाबला किया जायेगा। इससे भी बदतर, मेवात अकेला अलग-थलग नहीं किया जा सकता है, रोटरी को इस बारे में सोचना चाहिए और देश के बाकी हिस्सों में भी इस तरह के विरोधों का सामना करना चाहिए।

डॉ. सिंह ने आगे बताया कि मिशन इन्द्रधनुष ''प्रगति'' (Pro Active Governance And Timely Implementation) कार्यक्रम के अन्तर्गत आता है।'' स्वयं प्रधानमंत्री 4-5 कार्यक्रमों की मॉनिटरिंग करते हैं, उनमें से मिशन इन्द्रधनुष एक मात्र स्वास्थ्य कार्यक्रम है। उनका लक्ष्य है कि वर्ष 2018 तक 90 प्रतिशत टीकाकरण कार्य हो जाना चाहिए। ''इसलिए हमें आपका सहयोग हरेक स्तर पर चाहिए, और विशेष रूप से उच्च स्तर पर हमारी वकालत, क्योंकि आप लोग सरकार में सीधे सम्पर्क रखते हैं।''

उन्होंने आगे जोड़ा कि प्रधानमंत्री की मॉनिटरिंग के चलते हमारी इतनी धज्जियाँ उड़ रही ''मंत्री पूछ रहे हैं कि हमें करना क्या है।'' मेरी रोटरी से अपील है कि इसकी स्थिति उस स्तर तक स्पष्ट करें। उन्हें प्रस्ताव देकर इसे स्पष्ट करें। धन कोई मुद्दा नहीं हैं। आपके पास ताकत हैं।''

दाएं से : पीआईआईपी राजेंद्र के. साबू, आरआईडी सी. भास्कर और आईएनपीपीसी चेयर दीपक कपूर।

एस कृष्णप्रथीश द्वारा रूपरेखा

स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार

टीम रोटरी न्यूज़

2017-18 के लिए स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार (एसवीपी) का शुभारम्भ, 1 सितंबर को केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर द्वारा किया गया। पिछले साल मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा शुरू किया गया यह पुरस्कार उन सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त एवं निजी स्कूलों को सम्मानित करता है जिन्होंने स्वच्छ विद्यालय अभियान के अधिदेश की पूर्ति के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हो।

WinS लक्ष्य चुनौती समिति के अध्यक्ष सुशील गुप्ता पुरस्कार चयन समिति के सदस्यों में से एक है।

पिछले वर्ष इस पुरस्कार के लिए देश भर से 2.5 लाख स्कूलों ने आवेदन किया था जिसमें से 172 स्कूलों का चुनाव किया गया। पुरस्कार पाँच श्रेणियों के आधार पर दिए जाते है - पानी, स्वच्छता, साबुन से हाथों की धुलाई, संचालन एवं रखरखाव, और आदत परिवर्तन गतिविधियाँ एवं क्षमताओं का विकास।

स्कूल उनके U-DISE कोड के साथ पंजीकरण कर *http://mhrd.gov.in* पर उपलब्ध निर्धारित प्रारूप में ऑनलाइन आवेदन जमा कर सकते है। गूगल प्ले स्टोर या एप्पल आईस्टोर पर उपलब्ध स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2017-18 मोबाइल एप को भी डाउनलोड किया जा सकता है।

समय-सीमा

आवेदन करने की तिथि - 1 सितम्बर - 31 अक्टूबर

पुरस्कार के लिए मंडल स्तरीय चयन - 1 - 30 नवम्बर

राज्य/केन्द्रशासित प्रदेश स्तरीय चयन - 1 - 31 दिसंबर

MHRD पर राज्य/केन्द्रशासित प्रदेश स्तरीय परिणामों का राष्ट्रीय स्तर पर चयन के लिए प्रस्तुतीकरण - 7 जनवरी, 2018

अंतिम चयन - 31 मार्च, 2018

टीआरएफ कैसे मिशन इन्द्रधनुष के लिए आगे आया

रशीदा भगत

जैसे कि रोटरी भारत ने भारत सरकार के साथ मिलकर *मिशन इन्द्रधनुष* (एमआई) के माध्यम से भारत में सार्वभौमिक टीकाकरण की पहुँच को बढ़ाने के एक महत्वाकांक्षी मिशन की शुरुआत की है, रोटरी के दो वरिष्ठ नेता - दोनों रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के पूर्व अध्यक्ष - राजेंद्र साबू और कल्याण बैनर्जी - ने रोटेरियनों के एक समर्पित एवं जोशीले समूह के साथ यह साझा किया कि कैसे टीआरएफ के ट्रस्टी इस कार्यक्रम को अपना आशीर्वाद देने के लिए आगे आए।

काफी समय से, विशेषरूप से भारत के वर्ष 2014 में पोलियो मुक्त प्रमाणित होने के बाद, भारतीय रोटेरियन पूछ रहे है कि अब आगे क्या। पीडीजी और भारतीय राष्ट्रीय पोलियोप्लस समिति (आईएनपीपीसी) के अध्यक्ष दीपक कुमार द्वारा अगस्त में दिल्ली में आयोजित 'राष्ट्रीय पोलियोप्लस ओरिएंटेशन एंड प्लानिंग' की एक बैठक में, पीआरआईपी राजेन्द्र साबू ने बताया कि कैसे पीआरआईपी बैनर्जी की मदद से, जो उस समय के टीआरएफ ट्रस्टी प्रमुख थे, संस्थान ने पोलियो के साथ-साथ खसरा, रूबेला और अन्य बिमारियों के टीकाकरण को भी शुरू करने के भारतीय रोटेरियनों के प्रस्ताव को मंजूरी दी।

कपूर, डब्ल्यूएचओ एवं स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों, और रोटरी के पोलियोप्लस कार्यक्रम में एक प्रमुख भूमिका निभाने वाले डॉक्टर जैकब जॉन के साथ एक विचार-विमर्श के बाद, एक लेख तैयार किया गया जिसकी चर्चा बेनर्जी ने कपूर एवं अंतर्राष्ट्रीय पोलियोप्लस समिति (आईपीपीसी) के अध्यक्ष माइक मेकगवर्न के साथ की और उन्होंने माइक को राज़ी किया कि भारतीय सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम केवल पोलियोप्लस कार्यक्रम का एक विस्तार है, जो कि रोटेरियनों को तब तक सक्रिय रखेगा

रशीदा भगत

दायें से : डीपीपीसी विनोद टाईलांग, डी 3030 डीजी के.एस. राजन, एनसीएम अजय सेक्सेना, डीपीपीसी रमेश तिवारी, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, आईएनपीपीसी चेयर दीपक कपूर, पीआरआईपी राजेन्द्र के. साबू एवं आरआईडी सी. भास्कर।

जब तक हम दुनिया को पोलियो मुक्त नहीं कर देते, साबू ने कहा।

आईपीपीसी एवं टीआरएफ ट्रस्टियों को राज़ी करना

मेकगवर्न मान गए, वह प्रस्ताव को आईपीपीसी की बैठक में ले गए, और ट्रस्टी प्रमुख के रूप में, बेनर्जी ने प्रत्येक टीआरएफ ट्रस्टी को लिखकर, ''इस कार्यक्रम की ख़ास विशेषताओं, इसकी उपयुक्तता एवं हमारे पीपी कार्यक्रम को होने वाले लाभ को समझाया, क्योंकि रोई में या टीआरएफ में उस कार्यक्रम से कोई भी भटकना नहीं चाहता है। उन्होंने सभी दरवाजे खोल दिए और आखिरकार, सभी ट्रस्टी आगे आए और अब हम भारत में सार्वभौमिक टीकाकरण को एक चुनौती के रूप में लेने जा रहे है,'' साबू ने कहा।

पैसा इकट्ठा करने के नए रास्ते

पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी ने हाल ही में दिल्ली में पोलियोप्लस पर आयोजित हुए एक उन्मुखीकरण सत्र में कहा कि मिशन इन्द्रधनुष या सार्वभौमिक टीकाकरण में भारत सरकार का साझेदार बनने के लिए, भारतीय रोटेरियन टीआरएफ से अब और अधिक धन नहीं ले सकते, और उन्हें पैसा इकट्ठा करने के नए तरीके ईज़ाद करने होंगे।

मंडल गवर्नरों को अनुदान संचयन कार्यक्रमों, संगीत समारोहों या दान रात्रिभोजों के बारे में सोचना होगा; ''अमेरीका हर समय ऐसा करता है; वे रात्रिभोज के लिए प्रति व्यक्ति से 1,000 डॉलर लेते है, यहाँ आप रु. 5,000 ले सकते है। उन्होंने याद किया कि रोई अध्यक्ष के रूप में जब वह सप्ताह के अंत में अमेरिका में किसी जगह एक संस्थान में उपस्थित थे, तब कुछ 2,000 मील दूर एक दान रात्रिभोज का आयोजन किया जा रहा था जिसका लक्ष्य एक रात में 1 मिलियन डॉलर इकट्ठा करने का था। ''डीजी, एक महिला, ने उस संस्थान के प्रभारी निदेशक से पूछा कि क्या वह मुझे एक दिन के लिए छोड़ सकते है। उन्होंने मुझसे पूछा और मैंने कहा कि यदि आप मुझे छोड़ने के लिए तैयार है तो मैं जाने के लिए इच्छुक हूँ लेकिन मैं 2,000 मील दूर हूँ, मैं कैसे जाऊं? उन्होंने कहा चिंता मत कीजिये, वे प्रबंध कर देंगे। डीजी ने एक 8 सीटर चार्टर्ड प्लेन भेज दिया। वह काफी चालाक थी क्योंकि उन्होंने बाकि की सीटों को उनके मंडल के उन रोटेरियनों को बेच दिया जो रोई अध्यक्ष के साथ दो घंटे के लिए यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहते थे!''

अन्य स्थानों पर लोग पैसा इकट्ठा करने के लिए यह कर रहे है, और ''आप भी ऐसे नए विचारों को सोच सकते है,'' उन्होंने आगे कहा। पिछले साल मंडल 3011 में वह स्वयं भी एक ऐसे ही बड़ी-टिकट वाले रात्रिभोज में शामिल हुए थे जहाँ बहुत सारा धन जुटाया गया। ''यह मुश्किल है पर असंभव नहीं। आपको भारत से खसरा और रूबेला को खत्म करने का श्रेय मिलेगा; सरकार इसे कैसे भी करेगी ही, लेकिन रोटरी उसकी साझेदार होगी।''

उन्मुखीकरण बैठक को संबोधित करते हुए, बेनर्जी ने स्वीकार किया कि कपूर, ''भारत में पीपी के प्रतीक है,'' और उनके प्रतिनिधि, लोकेश गुप्ता, ने भारत को पोलियो मुक्त बनाने में ''जबर्दस्त योगदान दिया है।''

उन्होंने कहा कि इस मोर्चे पर पीआरआईपी साबू की पहल के बाद, ''एक ट्रस्टी प्रमुख के रूप में मेरे लिए इस प्रस्ताव को संस्थान से समय पर मंजूर करवाना आसान था।'' परन्तु अब बारी इस छोटी किन्तु शक्तिशाली राष्ट्रीय समिति की है कि वह नियमित टीकाकरण करें। उन्होंने अपने सदस्यों को चेताया कि अक्सर उन्होंने रोटेरियनों में बाद के टीकाकरण कार्य को करने में कम रूचि देखी है और वे अक्सर पूछते है ''इसका ध्यान रखने के लिए सरकारी लोग है, तो हमें क्यों इसमें शामिल होना चाहिए, और कब तक हम यह कर सकते है। वे कहते है कि विशेष टीकाकरण दिवस तो ठीक है लेकिन दिनचर्या तो दिनचर्या है और हमारी भूमिका क्या है। लेकिन जब भारत सरकार ने वर्ष 2020 तक खसरा और रूबेला (जर्मन खसरे) को खत्म करने का मिशन शुरू किया है, तो क्यों ना हम उनके साथ हाथ मिलाकर सम्मान प्राप्त करें,'' बेनर्जी ने पूछा और आगे कहा, ''पोलियो के बाद, भारत सरकार ने हमेशा रोटरी के काम की कदर की है, और हम उनके पसंदीदा साझेदार है। इसलिए हम एक सुखद अवस्था में है।''

इस अभियान का नेतृत्व करें

इस ''अभियान'' का नेतृत्व करने के लिए रोटेरियनों को उकसाते हुए बेनर्जी ने कहा पोलियो की मौखिक बूंदों के विपरीत ये इंजेक्शन से दिए जाने वाला टीका है और ''इसको प्रोत्साहन, जाँच और सहभागिता की आवश्यकता होगी, क्योंकि इससे वे लोग अधिक प्रश्न करेंगे जो विरोध करते है और आपका कार्य यह भी है की टीकाकरण प्रक्रिया सही स्थान पर चलती रहे,'' उन्होंने कहा।

उन्होंने कहा नियमित टीकाकरण के लिए भारत के आंकड़े ''भद्दे है,'' उन्होंने आगे कहा कि कुछ क्षेत्रों में आंकड़े बेतुके रूप से 10 प्रतिशत तक कम थे, तो 80 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करना कठिन है। ''लेकिन अगर आप नियमित टीकाकरण में 60 या 70 प्रतिशत तक भी जा पाते है तो इसका मतलब आपने एक बहुत ही शानदार कार्य किया है।''

भारत भर के रोटेरियनों को अपने नजदीक ही पोलियो के छिपे होने को लेकर चौकन्ना रहने के लिए कहते हुए बैनर्जी ने कहा कि जब उन्होंने ये बिंदु ट्रस्टियों के समक्ष उठाए, तो ''उन्हें मनाना आसान था और उन्होंने कहा आगे बढ़ो और इसे करो, हम सब तुम्हारे साथ है।''

मैं यह स्पष्ट कर देता हूँ कि सीएसआर कोष को हमारी बैठक और भोजन के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता; वास्तविक कार्य, जागरुकता, और कार्यक्रम के कार्यान्वियन के लिए ही धन का इस्तेमाल कीजिये।

पीआरआईपी राजेंद्र साबू

लौटाने का समय

सबसे महत्वपूर्ण बिंदु पर आते हुए, उन्होंने भाग लेने वाले समिति के नवगठित सदस्यों और 2017-18 के डीजीयों से कहा, कि ''टीआरएफ अब हमें इस तरह की बैठक आयोजित करने के लिए और अधिक पैसे नहीं देने वाला है, हमें स्वयं अपना निधीकरण करना होगा।'' उन्होंने सुझाव दिया कि राष्ट्रीय बैठकें आयोजित करने के बजाय, टीकाकरण पर राज्य या मंडल स्तर पर बैठकें आयोजित की जा सकती है क्योंकि राष्ट्रीय बैठकों में आवागमन में ज्यादा पैसे खर्च होते है। ''काफी लंबे समय से अमेरिकी, जापानी, ऑस्ट्रेलिया और अन्य रोटेरियन हमारे लिए धन इकठ्ठा कर रहे है। भारत में हुए समस्त टीकाकरण के लिए हमने हमारी तरफ से वास्तव में कोई धन इकठ्ठा नहीं किया; या तो सरकार ने मुफ्त में टीके उपलब्ध करवाए या रोटरी ने हमें धन दिया। बेशक हमने अपना समय और अपनी मेहनत से भारत को पोलियो-मुक्त बनाया लेकिन अपने पैसों से नहीं। तो क्या आपको नहीं लगता कि लौटाने का समय आ गया है? टीआरएफ हमें पर्याप्त दे चुका है और अब हमें अधिक मांगने में शर्म आनी चाहिए।''

डीजी भी मंडल निधि से कुछ देने पर विचार कर सकते है। और कुछ उदार विदेशी दानकर्ताओं द्वारा भी कुछ धन दान करने की संभावना है और ''राजा (साबू), भास्कर, सुशील (गुप्ता) और मैं इस पर कार्य करेंगे और संभव हुआ तो कुछ प्राप्त करेंगे। लेकिन उन पैसों को हमें वास्तविक कार्य के लिए खर्च करना होगा ना कि हमारी बैठकों, खाने और अच्छा समय बिताने के लिए,'' उन्होंने यह स्पष्ट किया।

एक प्रारंभिक रूबेला योद्धा बक्सा

मिशन इन्द्रधनुष (एमआई), भारत से खसरा, रूबेला एवं अन्य रोके जा सकने योग्य रोगों का एक महत्वाकांक्षी सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम, का भारतीय रोटेरियन जब एक अभिन्न अंग बनने के लिए तैयार हो रहे है, तब इनर व्हील मंडल 323 की पूर्व अध्यक्ष और पीआरआईडी पी. टी. प्रभाकर की पत्नी नलिनी प्रभाकर के रूबेला को रोकने के प्रयास जिक्र करने लायक है।

नलिनि प्रभाकर (दाएं) मंडल 323 इनर व्हील डिस्ट्रिक्ट की पूर्व अध्यक्ष, एक स्कूल की छात्र जिसे रूबेला का टीका दिया गया के साथ।

नलिनी याद करती है, ''लगभग 17 साल पहले जब मैंने बहरे बच्चों के एक स्कूल का दौरा किया, तब स्कूल की संवाददाता ने मुझे रूबेला और इसके खतरों के बारे में समझाया, यह कहकर कि उनके स्कूल के और भारत में या दुनिया में किसी भी जगह स्थित विशेष बच्चों के समान प्रकार के स्कूलों में 85-90 प्रतिशत बच्चे उनकी सुनने की क्षमता इसलिए खोते है क्योंकि उनकी माताएं गर्भावस्था के दौरान रूबेला से प्रभावित थी। यदि उन्हें काफी पहले ही रूबेला के टीके लगाए गए होते, तो आज ये बच्चे सुनने में सक्षम होते। उन्होंने कहा, रूबेला का एक अकेला टीका महिला को 20 वर्षों तक रूबेला से बचा सकता है।''

लड़कियों को शादी से पहले रूबेला के टीके दिए जाने चाहिए; यह एक कार्य, ''नवजातों को जन्मजात विकारों से बचाता है, शिक्षक ने मुझसे कहा।''

''इस अनुभव से द्रवित होकर, कई सालों से इनर व्हील रूबेला पर कार्य कर रहा है, उसने पैम्फलेट छपवा दिए है, और स्कूल और कॉलेज की लड़कियों में जागरुकता फैला रहा है। वह कहती है,'' ''पिछले कुछ वर्षों में हमने हमारे मंडल में 10,000 लड़कियों को टीके लगाने का बंदोबस्त किया है। लेकिन यह केवल समस्या का एक अंश मात्र है। हमें एक लंबा रास्ता तय करना है; यदि रोटरी और रोटरेक्टर हमारे साथ हाथ मिलाते है तो हम वास्तव में एक बड़ा हिस्सा कवर कर सकते है।

उन्हें विश्वास है कि जबकि अब रूबेला मिशन इन्द्रधनुष के अंतर्गत उल्लेखनीय ढंग से प्रकट हुआ है, ''हम इसे शीघ्र ही खत्म कर देंगे।'' नलिनी आगे कहती है कि ''केरला सरकार ने रूबेला के टीकाकरण को काफी लंबे समय से अनिवार्य कर रखा है। शादी का हॉल बुक करते समय केरला के अनेक शादी के हॉल दुल्हन का रूबेला टीकाकरण का प्रमाण-पत्र माँगते है,'' वह मुस्कुराती है, ''यह कहकर कि अन्य राज्य सरकारों को भी ऐसा ही करना चाहिए।''

काफी लंबे समय से अमेरिकी, जापानी, ऑस्ट्रेलिया और अन्य रोटेरियन हमारे लिए धन इकट्ठा कर रहे है। भारत में हुए समस्त टीकाकरण के लिए हमने हमारी तरफ से वास्तव में कोई धन इकट्ठा नहीं किया; या तो सरकार ने मुफ्त में टीके उपलब्ध करवाए या रोटरी ने हमें धन दिया।

पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी

चित्र : आईएनपीपीसी

दिल्ली में साल 2008 में पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, पीआरआईपी राजेंद्र के. साबू की उपस्थिति में माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स को सम्मानित करते हुए।

बेनर्जी ने आगे कहा कि भारत कई वर्षों से पोलियो-मुक्त रहा है। ''हमने उस समय यह किया जब किसी ने भी यह नहीं सोचा था कि भारत ऐसा कर सकता है। और पिछले वर्ष पहली बार हमने टीआरएफ के लिए 20 मिलियन डॉलर इकट्ठा किये थे, और आप सभी को मेरी शुभकामनाएं और अभिनन्दन। यह अविश्वसनीय है, हम दूसरे स्थान पर है, जापान को लगभग 17.5 मिलियन डॉलर पर पीछे छोड़ते हुए। तो अगर हम यह करना चाहते है तो हम कर सकते है!''

पोलियो योगदान को मजबूत करते हुए

रोई निदेशक सी. भास्कर ने कहा कि उन्होंने और उनके पथ प्रदर्शक डीजीयों ने निश्चय किया है कि ''इस वर्ष भारत से पोलियो निधि के लिए योगदान हाल ही के योगदानों में सबसे अधिक होगा। खसरे और रूबेला के टीकाकरण के लिए डीजी अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के लिए तैयार है और हम तब तक लगे रहेंगे जब तक लक्ष्य हासिल ना कर लें। वे हमारे क्षेत्र में पहली बार शुरू किये गए सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समर्थन करने के लिए उदार रहे है, और मंडल के महत्वपूर्ण नेतृत्वकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए अपनी मंडल निधि का उपयोग कर रहे है ताकि वे उनका कार्य अच्छे तरह से करने के लिए समर्थ हो सके।''

भास्कर ने कपूर से उन्हें एक निश्चित योजना, बजट और डीजीयों द्वारा स्थानीय रूप से इकट्ठा किये जाने वाले धन को देने का आग्रह किया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय समिति के साथ समन्वय करने के लिए हमें मंडल स्तर पर भी किसी को नियुक्त करने की आवश्यकता है, उन्होंने आगे कहा।

सत्र का समापन पीआरआईपी साबू द्वारा साझा की गयी इस अच्छी खबर से हुआ कि अब टीआरएफ के ट्रस्टियों ने सीएसआर कोष को रोटरी के मानवीय कार्यों में लगाने के विचार को मंजूरी दे दी है, भारत में रोटरी के वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं को इस टीकाकरण परियोजना के लिए कुछ महीनों में सीएसआर के कोष से रु. 37 लाख – प्रत्येक मंडल के लिए रु. 1 लाख – जुटाने का विश्वास है। ''परन्तु मैं यह स्पष्ट कर देता हूँ कि सीएसआर कोष को हमारी बैठक और भोजन के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता; वास्तविक कार्य, जागरुकता, और कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए ही धन का इस्तेमाल कीजिये।''

बेनर्जी के भाषण से एक संकेत लेते हुए कि अनेक विदेशी मंडलों में अतिरिक्त धन है, साबू ने कहा कि ''यदि समिति के सदस्यों या डीजीयों को इन मंडलों का एवं अतिरिक्त धन के प्रकार का अंदाजा लग सकता है, तो इस कार्यक्रम के लिए परस्पर मित्रों के माध्यम से उन तक भी पहुँचा जा सकता है।'' उन्होंने डीजीयों से उनके उत्तराधिकारियों को भी इस कार्यक्रम में शामिल करने के लिए प्रेरित किया जिससे निरंतरता की एक भावना बनी रहेगी।

प्रारंभिक सत्र की शुरुआत करते हुए, कपूर ने एक अकेले वाक्य के माध्यम से पोलियो के उन्मूलन में भारतीय रोटेरियनों द्वारा लगाए गए महान प्रयासों का खूबसूरती से सार प्रस्तुत किया: ''भारत में पोलियो से आज़ादी ने हमें कई सारे सबक सिखाये... कि हम केवल सिलाई मशीनों को दान करने के परे भी देख सकते है... सभी वर्ण के राजनैतिक नेताओं को प्रोत्साहित कर सकते है और सरकार से सम्मान हासिल कर सकते है, कि शीर्ष नौकरशाह रोटेरियनों को उनके दल में शामिल कर सकते है!''■

भारत में पोलियो से आज़ादी ने हमें कई सारे सबक सिखाये... कि हम केवल सिलाई मशीनों को दान करने के परे भी देख सकते है...

आईएनपीपीसी चेयर दीपक कपूर

नीले पड़ते बच्चों के जीवन को मिलती साँसे

जयश्री

श्वेता कुमारी (11) बहुत दु:खी है, क्योंकि वह अपने सहपाठियों के साथ खेलकूद और मनोरंजन गतिविधियों में भाग लेने में असमर्थ है। वह भोजपुरी में चिल्लाई, ''मैं भी मेरे दोस्तों की तरह खेलना और नृत्य करना चाहती हूँ।'' उसकी माँ सुषमा देवी बताती है कि जब भी वह इसका प्रयास करती है तब साँस लेने के लिए हाँफने लग जाती है और उसका चेहरा नीला स्याह पड़ जाता है। श्वेता जन्मजात हृदय की ऐसी स्थिति लेकर पैदा हुई। सुषमा देवी ने बताया कि ''हमने जब इसे राँची में हृदय रोग विशेषज्ञ को दिखाया तब पता चला कि इसे हृदय सम्बन्धी समस्या है लेकिन हमारे पास इसके आगे के इलाज के कोई साधन नहीं थे। पटना के महावीर वात्सल्य हॉस्पिटल में डॉक्टर से मिलने के लिए अपनी बारी का इंतजार करते समय सुषमा ने यह बात कही।''

इसी दौरान दो चिकित्सक 6 महीने की राजनंदिनी की जांच कर रहे थे, जो अपनी उम्र के समकक्ष भी नहीं दिखती थी। वह बहुत छोटी और नाजुक थी कि वह एक हथेली में फिट हो सकती थी। जब चिकित्सक उसकी ईसीजी कर रहे थे तब भी वह बहुत धीमी आवाज में रो रही थी। विशेषज्ञ डॉ. दत्ता ने ''उच्च जोखिम'' लिखते हुए उसकी माँ को बहुत ही धैर्यपूर्वक तरीके से समझाया कि इस बच्ची की शल्य चिकित्सा करानी होगी।

यह सब बच्चे रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3250 द्वारा रोटरीज गिफ्ट ऑफ लाईफ (GoL) कार्यक्रम के सहयोग से अस्पताल में आयोजित अंतिम जांच शिविर में शामिल थे। फोर्टिज-एसकोटर्स हॉस्पिटल, दिल्ली के बाल हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. राधाकृष्णन एवं डॉ. निरंजन दत्ता पटना के उस अस्पताल में उन बच्चों और शिशुओं की जांच कर रहे थे, जो जन्मजात हृदय विकार (CHD) से पीड़ित थे। इन बच्चों की सुधारात्मक सर्जरी अस्पताल में बाद में होनी थी।

करीब एक महिने से रोटरी डिस्ट्रिक्ट बिहार और झारखण्ड के अभावग्रस्त गांवों में प्रारंभिक स्तर पर उकऊ की जांच कर रहा था, जहाँ बाल हृदय रोग विशेषज्ञों ने करीब 300 ऐसे बच्चों की पहचान की जो विभिन्न तरह के हृदय रोगों से पीड़ित थे।

डिस्ट्रिक्ट गवर्नर विवेक कुमार ने बताया ''ऐसा पहली बार हो रहा है जब डिस्ट्रिक्ट इतने बड़े पैमाने पर CHD जाँच शिविर आयोजित कर रहा है। सभी 92 क्लब इन बच्चों को नई जिन्दगी देने के लिए एक साथ जुटे हुए हैं।''

यह बच्चे अपने माता-पिता के साथ अंतिम जांच के लिए पटना हॉस्पिटल लाये गये थे। डॉ. दत्ता ने बताया ''हमने ECG रिपोर्ट और उनकी सामान्य स्वास्थ्य स्थितियों के आधार पर बच्चों का शल्य चिकित्सा के लिए चयन किया है।'' पन्द्रह वर्ष से

जयश्री

टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, डीजी विवेक कुमार और पीआरआईडी अशोक महाजन सीएचडी मरीजों के साथ पटना में एक स्क्रीनिंग शिविर में। चित्र में पीडीजी एल.बी. सिंह (चरम बाएं), प्रोजेक्ट चेयर सुशील पोद्दार (दाएं से पाँचवे) और परियोजना संयोजक अनंत अरोड़ा (दाएं) भी शामिल हैं।

जिन्दगी का तोहफा

ए सी पीटर (दाएं) राष्ट्रीय समन्वयक, गिफ्ट आफ लाइफ युगांडा से आए बच्चे और उनके माजी पिता के साथ, अमृता हास्पिटल, कोची में।

रोटरी इन्टरनेशनल का कार्यक्रम जिन्दगी का तोहफा (Gift of Life - GoL) भारत में वर्ष 2002 में आरंभ हुआ। यह कार्यक्रम गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले उन परिवारों (BPL) को सहायता देता है जिनमें पैदाइशी हृदय सम्बन्धी विकारों वाले लोग हैं। इस कार्यक्रम के राष्ट्रीय समन्वयक बताते हैं ''यह रोटरी का मानवता पर आधारित रोटरी प्रेम की पीस प्रोजेक्ट है, जो जाति, धर्म और सीमाओं से ऊपर उठकर कार्य करता है।'' कार्यक्रम त्रेड्ढ के अन्तर्गत प्रतिवर्ष 120 बच्चों की ओपन हार्ट सर्जरी की व्यवस्था की जाती है। अब तक इस कार्यक्रम पर दानदाताओं के सहयोग के अलावा 25 मैचिंग/ग्लोबल ग्रांट के जरिए करीब 1.5 मिलियन डॉलर की राशि खर्च की जा चुकी है।

पीटर ने बताया ''अभी मैं यहाँ बात कर रहा हूँ और इसी समय दिल्ली के फोर्टिस अस्पताल में लाहौर (पाकिस्तान) के 7 वर्षीय आर्यन शेरिफ का ऑपरेशन चल रहा है। उसे विदेशमंत्री सुषमा स्वराज ने हमारे पास भेजा था।'' पीटर ने आगे बताया कि युगांडा के 10 बच्चे कोच्चि (केरल) के अमृता अस्पताल में सफलतापूर्वक इलाज कर अभी वापिस अपने देश लौटे हैं। उनका अन्य बीमारियों जैसे एक को हर्निया और दूसरे की आँखों की रोशनी का इलाज भी किया गया।

रोटरी फाउण्डेशन के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने रोटरी क्लब उधमपुर के रोटेरियन आर.सी. शर्मा से 2005 में हुई बात का जिक्र करते हुए बताया कि मैंने शर्मा से जम्मू में आयोजित हृदय जाँच शिविर की स्थिति के बारे में पूछा, तो शर्मा ने बताया ''हमने 20 बच्चों का चयन किया जो जन्मजात हृदय रोग (CHD) से पीड़ित थे। हमारा कैम्प पूरा हो गया। गुप्ता कहते हैं ''मैंने सोचा प्रोजेक्ट पूरा हुआ है या उसकी शुरूआत हुई है। हम उन बच्चों को दिल्ली लेकर आये और उनका इलाज करवाया। वह GoL की वास्तविक शुरूआत थी।''

इन बच्चों की छाती पर जो निशान बनता है, वह हमारे अच्छे कार्य का प्रमाण है और यह विचार कि हम इतनी सारी जिन्दगियाँ बचाने में सफल हो सके, हमें काम करते रहने की प्रेरणा देता है।

देता ए.सी. पीटर
नेशनल कोआर्डिनेटर, GoL

भारत में GoL के समन्वयक हर जगह हैं, और उकऊ के इलाज के लिए हर जगह ऑपरेशन होते हैं। जहाँ एक सर्जरी पर रु. 3-4 लाख का खर्च आता है, वहीं रोटरी से रु. 70,000 - 75,000 हजार ही लिए जाते हैं। बाकी मरीजों और उनकी देखभाल करने वालों को सारे खर्चे, मेडिकल, खाना और रहना तथा दूसरे देशों के लाभान्वितों का वीजा आदि का खर्च त्रेड्ढ वहन करता है।

दो वर्ष पूर्व जाम्बिया के 28 और युगांडा के 32 बच्चों का इलाज दिल्ली के 28 अस्पतालों में किया गया था। रोटरी क्लब दिल्ली की इस्ट एण्ड की अध्यक्ष रेणुका चौधरी बताती है कि 6 अगस्त को श्रीनगर में 340 बच्चों का उकऊ के लिए परीक्षण किया गया था, उनमें से 87 बच्चों को तुरन्त करेक्टीव सर्जरी के लिए दिल्ली के अस्पतालों में भेजा गया।'' पीटर कहते हैं ''इन बच्चों की छाती पर जो निशान बनता है, वह हमारे अच्छे कार्य का प्रमाण है और यह विचार कि हम इतनी सारी जिन्दगियाँ बचाने में सफल हो सके, हमें काम करते रहने की प्रेरणा देता है।''

अधिक आयु के बच्चों की शल्य चिकित्सा के लिए मना कर दिया गया। पूरे दिन में 187 बच्चों का शल्य चिकित्सा के लिए चयन किया गया।

विचार-उत्पति

इस सबकी शुरूआत डिस्ट्रिक्ट गवर्नर के पद-स्थापन के समय हुई जब रोटरी क्लब गिरिडिह के सदस्य और GoL कार्यक्रम के राज्य समन्वयक एस.पी. बगड़िया ने डिस्ट्रिक्ट गवर्नर विवेक को उकऊ से पीड़ित बच्चों के इलाज के लिए शिविर आयोजित करने का आग्रह किया। विवेक खुशीपूर्वक सहमत हो गये।

रोटरी फाउण्डेशन के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने शिविर की व्यवस्था देख रहे रोटरी सदस्यों से कहा ''आप लोगों को केवल उन्हें दिल्ली तक लाना है, जिस भी क्षण वे हमारी धरती पर पैर रखेंगे तब से उनकी सारी जिम्मेदारी हमारी होगी, त्रेंङ उनके रहने-खाने और अस्पताल के सारे खर्चों का वहन करेगा, मरीजों से किसी भी तरह का शुल्क नहीं लेना है।''

उन्होंने और रोटरी इन्टरनेशनल के पूर्व निदेशक अशोक महाजन ने चिकित्सकों और मरीजों के परिवारों से बातचीत करते हुए कहा ''आपके अपने बच्चे के इलाज पर पैसा खर्च करने की जरूरत नहीं हैं। वैसे ही उनके दिल में छेद अपने आप में बहुत बड़ी पीड़ा है, लेकिन आपकी पॉकेट में छेद नहीं होना चाहिए। ''उन्होंने अभिभावकों को आश्वस्त किया।

क्लबों द्वारा दोनों राज्यों के विभिन्न इलाकों से लोगों को लाने के लिए परिवहन की व्यवस्था की। तेरह क्लबों के करीब 100 रोटेक्ट्रेरों ने भी जमीनी स्तर पर उत्साहपूर्वक कार्य किया। डी.आर. आर. वैभव ठाकुर ने इस अनुभव को इस तरह बताया, ''यह अद्भुत था। इससे हमें जीवन की क्या कीमत होती है, इसने हमें अहसास कराया, हम सौभाग्यशाली हैं।''

रोट्रेक्टर्स इस कार्यक्रम को सोशियल मीडिया पर प्रचार-प्रसार कर रहे हैं, और पोस्टरों और पत्रकों के जरिए गाँवों और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में इस संदेश को पहुँचा रहे हैं। इस प्रोजेक्ट के प्रमुख सुनील पोदार बताते हैं ''इस विषय पर हमें करीब 4,000 समाचार प्रकाशित किये। हम चाहते हैं कि इस शिविर में अधिक से अधिक संख्या में लोग लाभान्वित हों।'' ट्रस्टी गुप्ता ने इस बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि यह कार्यक्रम रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने में मदद करेगा।

जयश्री

माता पिता अपने बच्चों के साथ परामर्श के लिए पटना में एक सीएचडी स्क्रीनिंग शिविर में इंतजार करते हुए।

रोटरी के पूर्व निदेशक अशोक महाजन ने उन दिनों को याद किया, जब बिहार में पोलियो बुरी तरह से फैला हुआ था। उन्होंने रोटेरियन के योगदान की भी सराहना की और विशेष रूप से पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर एल.बी. सिंह और सैयद अहमद की प्रशंसा की, जिन्होंने पोलियो विरोधी मुस्लिम समुदाय में रोटरी की पहुँच बनाई। महाजन ने बताया, ''हालात ये थे कि यदि बिहार व उत्तर प्रदेश पोलिया मुक्त होता है, तो पूरा भारत पोलियो मुक्त होता है। उलेमाओं ने इस लक्ष्य को हासिल करने में बड़े पैमाने पर मदद की।''

महाजन ने बच्चों को ''जिन्दगी का तोहफा'' देने के लिए डिस्ट्रिक्ट की सराहना की। उन्होंने कहा जब हमने ''स्वयं से ऊपर सेवा'' को अपना ध्येय वाक्य बना रखा है, तो हम छिछले पानी में क्यों खेलें? हमें इस तरह के शानदार कार्यक्रम लेने चाहिए, जो ऐसे बच्चों को जीवन उपहार में देना चाहिए। संसाधन उस समय अपने आप जुटते हैं, जब हम एक कदम आगे बढ़ाते हैं।

इस अस्पताल को चलाने वाले महावीर स्थान के सचिव किशोर कुणाल कहते हैं ''जैसे ही हमारा नया ऑपरेशन थियेटर बन जायेगा, हम यहाँ भी हृदय रोग की शल्य चिकित्सा निःशुल्क करेंगे। वर्तमान में हम बच्चों की जाँच करेंगे और जो अस्पताल आप बतायेंगे, उनमें उन्हें भेजेंगे। सारा खर्च भी हम ही वहन करेंगे।'' उन्होंने बताया कि ट्रस्ट विभिन्न विशिष्टताओं वाले पाँच अस्पतालों का संचालन करता है, और इन्हें वित्तीय सहयोग उनके यहाँ स्थित हनुमान मन्दिर में विशेष रूप से तैयार तिरूपति लड्डुओं से प्राप्त आय से किया जाता है।

डिस्ट्रिक्ट गवर्नर विवेक ने बताया ''सभी चयनित 187 बच्चों का आगामी एक वर्ष में इलाज किया जायेगा। हम उनके लिए सभी चीजों का प्रबंध करेंगे। विवेक इस सारी प्रक्रिया को ''मानव कल्याण का महान यज्ञ'' मानते हैं।

वहाँ दिल्ली के रोटरी डिक्ट्रिक्ट 3011 व 3012 के सदस्य भी उपस्थित थे। रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3250 के रोटरी क्लबों ने अस्पताल के नवजात शिशुओं के लिए दूध-पाउडर और कैंसर अस्पतालों के लिए व्हील चैयर्स का इंतजाम किया।■

रोटेरियन, आपके समर्थन के लिए आपका धन्यवाद

टीम रोटरी न्यूज़

जून 2013 में उत्तराखंड को बहा ले जाने वाले विशाल जल-प्रलय के बाद, रोटरी भारत तुरंत ही खाना एवं समर्थन के साथ बाढ़-पीड़ितों के पास पहुँचा और निर्णय लिया कि वह रूद्रप्रयाग ज़िले में बाढ़ से तबाह हुए 32 स्कूलों का पुनर्निर्माण करेगा। रोटरी उत्तराखंड आपदा राहत कोष ट्रस्ट का निर्माण किया गया जिसके अध्यक्ष पूर्व रोई अध्यक्ष राजेंद्र के. साबू थे और रोटरी के सामान्य अफसर ट्रस्टी थे।

वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं ने स्कूलों के पुनर्निर्माण के लिए रोटेरियनों से अपील की और इस काम के लिए देश भर से पैसा आया। कुल रु. 58 मिलियन का योगदान प्राप्त हुआ और उसने तीन वर्षो में रु. 4 मिलियन का ब्याज कमाया। रोटेरियन और वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं ने लगभग 14 घंटे की विकट पहाड़ी यात्रा का सामना कर निर्माण स्थलों के कई बार दौरे किये।

जनवरी 2017 तक, सभी 32 स्कूलों को उनकी संबंधित समितियों को सौंप दिया गया। सभी स्कूल भूकंप एवं भूस्खलन रोधी है और वे सभी कक्षाओं के लिए मेज, बेंच एवं ब्लैकबोर्ड, लड़के-लड़कियों के अलग-अलग शौचालय और मध्याहन भोजन पकाने के लिए एक रसोईघर से सुसज्जित है।

स्कूलों की मजबूती का जल्द ही परीक्षण हुआ जब 6 फ़रवरी को रूद्रप्रयाग में रिक्टर पैमाने पर 5.8 तीव्रता का भूकंप आया और उसके झटके दिल्ली तक महसूस किये गए। भूकंप के केंद्र उखीमठ में रोटरी द्वारा निर्मित एक स्कूल खड़ा रहा, बिना हिले।

पीआरआईडी वाई. पी. दास ने कहा, ''मैं सभी रोटेरियनों का आभारी हूँ जिन्होंने इस विशाल स्वप्न को एक सच्चाई में परिवर्तित करने के लिए उदारतापूर्वक योगदान दिया और मैं खुश हूँ कि हम इन बच्चों की शिक्षा को सुगम बनाने का अपना वादा पूर्ण कर सके।''

पीआरआईडी दास ने कहा, प्राप्त हुए पूरे योगदान को केवल स्कूलों के पुनर्निर्माण के लिए खर्च किया गया, लेखों का परीक्षण कर लिया गया है और आयकर रिटर्न फाइल हो गयी है।

चार वर्षो (2013-17) की ऑडिट की हुई बैलेंस शीट, मंडल एवं व्यक्तिगत योगदानों का ब्यौरा, 15 सितंबर तक आय एवं व्यय का ब्यौरा और 32 लाभार्थी स्कूलों की सूची को *https://rotarynewsonline.org/thank-rotarians-support/* पर देखा जा सकता है।■

राजस्थानों के स्कूलों के लिए WinS सुविधा

टीम रोटरी न्यूज़

पीडीजी रत्नेश कश्यप (बाएं) और जोगा राम, आयुक्त एसएसए, राजस्थान, राज्य शिक्षा मंत्री वासुदेव देवनाणी (बीच में) की अपस्थिति में *MoU* का प्रतिदान करते हुए।

रोटरी मंडल 3054 ने राजस्थान सरकार के साथ 1,100 सरकारी स्कूलों में WASH के सभी पहलुओं को उपलब्ध प्रदान करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। प्रारंभिक चरण में जयपुर और बीकानेर के आसपास और उसके आसपास 550 स्कूल को शामिल किया गया हैं और इस परियोजना के 18 महीनों में पूरा होने की आशा है और फिर इसी प्रकार का कार्य संपूर्ण राज्य के 550 स्कूलों में लागू किया जाएगा।

''WinS वैश्विक अध्यक्ष सुशील गुप्ता की अनुशंसा के अनुरूप, हम लगभग एक लाख स्कूली बच्चों तक पहुंचते हुए समुदाय में व्यवहारिक परिवर्तन लाना सुनिश्चित करेंगे और इस प्रकार उनके माध्यम से हम समुदाय को संवेदनशील बनायेंगे,'' मंडल WinS कमेटी के उपाध्यक्ष रमेश अग्रवाल ने कहा।

ताइवान के क्लबों और रोटरी फाउंडेशन के क्लबों से वैश्विक अनुदान सहायता से संपूर्ण परियोजना निष्पादित की जाएगी, जिसकी अनुमानित लागत 1 मिलियन डॉलर है। उन्होंने कहा कि गुजरात सरकार के साथ इसी तरह के समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए विचार-विमर्श चल रहा हैं क्योंकि जिले का कुछ हिस्सा उस राज्य में पड़ता हैं, वे आगे कहते है। ■

एक प्रतिष्ठित रोटरी क्लब

रशीदा भगत

रोटरी क्लब बर्मिंघम, यूएस, 100 सालों से भी ज्यादा पुराना है और 640 सदस्यों के साथ, असंतत रूप से यह दुनिया का सबसे बड़ा रोटरी क्लब है, और इसने एक रोटरेक्ट क्लब को जन्म दिया जो यकीनन दुनिया का सबसे बड़ा रोटरेक्ट क्लब है।

तो एक महीने में कितने घंटे वह अपने क्लब की गतिविधियों के लिए स्वैच्छिक रूप से कार्य करते है... क्या उनके पास एक अनुमानित आंकड़ा होगा, मैं रोटरी क्लब बर्मिंघम (आरसीबी), अलबामा, अमेरीका, के अध्यक्ष फ्रेड मेक्कालम और उसकी कार्यकारी निदेशक सूसन जैक्सन से पूछती हूँ। एटलांटा सम्मेलन से अलग जाकर हम एकांत वार्ता कर रहे है, और मैं इस बात का पता लगाने की कोशिश कर रही हूँ कि रोई अध्यक्ष इयान रिसले रोटेरियनों से रोटरी के कार्यों में उनके द्वारा लगाए गए कुल स्वैच्छिक घंटों को मिलाने की आवयश्कता के बारे में क्या कह रहे है। ताकि उनके सामूहिक कार्य का मूल्य निकाला जा सके।

एक सांस लेता है और दूसरी खिलखिलाती है। मेक्कालम, जो सांस लेते है, कहते है, ''यह सोचने में वाकई डरावना है।'' सूसन, जो खिलखिलाती है, आगे कहती है, ''यह बहुत सारे लोगों को डराकर भगा सकता है!''

क्लब अध्यक्ष गंभीरता से आगे कहते है, ''आप विश्वास कर सकते है कि यह बहुत सारा समय है... मंडल बैठकों, क्लब की गतिविधियों, पर्दे के पीछे की तैयारियों में भाग लेना, इत्यादि। अगर आप एक क्लब के नेतृत्वकर्ता है तो आपको अपना समय देने के लिए प्रतिबद्ध रहना होगा।'' वह आगे कहते है, ''क्लब के नेतृत्वकर्ता की भूमिका को निभाने के लिए हम जितना हो सके उतने अधिक लोगों को शामिल करने का प्रयास करते है।''

वर्ष1914 में शुरू हुए रोटरी क्लब बर्मिंघम ने वर्ष 2013 में इसकी 100वीं वर्षगाँठ मनाई; ''हम लगभग रोटरी जितने ही पुराने है, बस कुछ साल कम,'' अत्यंत गर्व के साथ मेक्कालम कहते है। बिर्मिंघम के डाउनटाउन में स्थित इस क्लब की सदस्य संख्या 640 है, जो उन्हें यकीनन दुनिया का सबसे बड़ा रोटरी क्लब बनाती है। ''आप कह सकते है कि हम वर्तमान में रोटरी जगत के दो सबसे बड़े क्लबों में से एक है। ओक्लाहोमा सिटी दूसरा है... इस

__बाएं से :__ रोटरी क्लब बर्मिंघम कार्यकारी निदेशक सुसान जैक्सन क्लब के अध्यक्ष फ्रेड मेक्कालम और रोटरेक्टर जेरीस गैस्टन।

गणना में हम उनके साथ आगे पीछे होते रहते है,'' वह मुस्कुराते है।

तो इस अंतर के अलावा, उनके क्लब की क्या ख़ास बात है, मैं उनसे पूछती हूँ। पहली चीज़ है शहर के सर्वश्रेष्ठ लोगों का इस क्लब का सदस्य होना, हालाँकि उन्होंने ठीक इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया। हम क्षेत्र के व्यावसायिक एवं परोपकारी सामुदायिक नेतृत्वकर्ताओं के समूह के रूप में जाने जाते है। ''हम सौभाग्यशाली है कि हमारे पास अच्छा नेतृत्व है और हमने हमारे सदस्यता की गुणवत्ता को बरकरार रखने के लिए कड़ी मेहनत की है,'' मेक्कालम कहते है, आगे कहते हुए कि यही विशेषता अधिक गुणवत्तापूर्ण सदस्यों को क्लब में लाती है।

मेक्कालम कहते है, ''हमारे ढाई सदस्य रोई अध्यक्ष बनें - 1951-52 में फ्रैंक स्पेन, 1972-73 में रॉय डी. हिकमेन, और आधे...2015-16 में हमारे माननीय सदस्य के. आर. रविन्द्रन! क्लब की एक सदस्य, लेस्ली राइट, ने पहले बड़े अनुदान संचयन अभियान का नेतृत्व किया था जब वर्ष

दी रोटरी ट्रेल

अधिकांश रोटरी क्लब उनके द्वारा की जाने वाली परियोजनाओं के बारे में विस्तार से बात करना पसंद करते है, वे परियोजनाएं जिनमें उन्होंने ढेर सारा परिश्रम और पैसा लगाया हो, और मानते है कि इससे समुदाय में रोटरी की छवि सुधरती है। लेकिन एक आकर्षक संयम के साथ रोटरी क्लब बर्मिंघम के अध्यक्ष फ्रेड मेक्कालम और कार्यकारी निदेशक सूसन जैक्सन उनकी एक प्रतिष्ठित परियोजना के बारे में बात करते है, जिसके अंतर्गत उन्होंने अपने शहर बर्मिंघम में एक बदसूरत कचरे के ढेर के फैलाव को लगभग 1 किमी के एक सुन्दर चलने योग्य रास्ते में बदल दिया।

वर्ष 2013 में, अपने शताब्दी वर्ष का उत्सव मनाते हुए क्लब ने तीन कार्यक्रम किये - शहर के नागरिक अधिकार संस्थान में एक मानव अधिकार संगोष्ठी, एक सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा का आयोजन जिसमें करीब 1,000 लोग शामिल हुए, और अत्यधिक महत्वाकांक्षी रोटरी ट्रेल, एक बहु-मिलियन-डॉलर परियोजना।

''हाँ, इसकी लागत हमें लगभग 4 मिलियन डॉलर पड़ी और हमें कुछ गंभीर, हालाँकि कठोर नहीं, अनुदान संचयन करना पड़ा क्योंकि लोग वह बदलाव चाहते थे क्योंकि यह शहर का एक भद्दा हिस्सा था। यह एक मुश्किल और महंगा फैलाव था - लगभग चार ब्लॉक्स जितनी जगह को सुधारना था। मैं ज्यादा शहरों को नहीं जानता जिन्होंने किसी इलाके के एक छोटे हिस्से को बेहतर बनाने के लिए इतना अधिक पैसा समर्पित किया हो क्योंकि हर शहर की बहुत सी जरूरतें होती है। लेकिन यह शहर को हमारा तोहफा था और लोग इसे पसंद करते है।''

अपने शहर को रोटरी की तरफ से दिए गए इस तोहफे ने एक खाली अधिकृत रेल मार्ग को एक सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों वाले, चलने/दौड़ने/बाइक चलाने के चार खण्ड के रास्ते में बदल दिया, जिसमें जल संरक्षण प्रणाली भी है। इसमें लोगों के विश्राम करने के लिए बेंचे है, और मोबाइल उपकरणों को चार्ज करने के लिए सोलर पैनल और साथ में वाई-फाई भी है!

वर्ष 2015 में, रोटरी ट्रेल को अलबामा के 'साल के जल संरक्षणकर्ता' के लिए स्टेट गवर्नर पुरूस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। इस रास्ते के विकास से पूर्व, इस खाली जगह से तूफ़ान के बहाव का पानी सीधे विलेज क्रीक में बहता था, जो साथ में मलबा एवं अन्य प्रदूषक तत्वों को शहर की जल प्रणाली में मिला रहा था। अब बहाव के पानी की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए एक नयी फिल्ट्रेशन प्रणाली स्थापित की गई है।

कभी भी एक जन समूह को अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट होकर नहीं बैठना चाहिए, अपनी अगली बड़ी परियोजना के बारे में वर्तमान रोटरी क्लब बर्मिंघम की अध्यक्ष बेट्सी कहती है, ''हम कुछ करने वाले और अच्छे महत्वाकांक्षी लोगों का एक समूह है, और अब इस पर चर्चा कर रहे है कि अगली कौनसी बड़ी परियोजना करना है।''

दुनिया का सबसे बड़ा रोटरेक्ट क्लब

चार्ल्स कोलेट, "एक असाधारण व्यक्ति" जिन्होंने शहर के अनेक नागरिक एवं सांस्कृतिक मंडलों की अध्यक्षता की, जिसमें रीजन्स बैंक और सदर्न रिसर्च इंस्टिट्यूट शामिल है, जब वर्ष 2003-04 में रोटरी क्लब बर्मिंघम के अध्यक्ष थे, तब उन्होंने एक रोटरेक्ट क्लब की स्थापना की थी जो यकीनन अपने 290 सदस्यों के साथ समुदाय आधारित दुनिया का सबसे बड़ा रोटरेक्ट क्लब है। भारत के रोटरेक्ट क्लबों के विपरीत, इसके सभी सदस्य पेशेवर है। जेरिस गेस्टन, एक बुद्धिमान युवा महिला, जो इसकी वर्तमान अध्यक्ष है वह धन प्रबंधन में है। "हमारा क्लब 25-35 वर्ष की उम्र के ऐसे लोगों को लक्षित करता है जो विश्वविद्यालयों से निकल चुके है और युवा पेशेवर है।"

वह कहती है उनके क्लब का सिद्धांत है - सीखो, सामाजिक बनाओ, सेवा करो। इसकी मूल क्षमता युवा नेतृत्व का विकास कर रही है और रोटरी क्लब बर्मिंघम इसके रोटरेक्ट क्लब के लिए एक परामर्श कार्यक्रम प्रस्तुत करता है, चुनिंदा रोटरेक्टरों की उनके परामर्शदाता रोटेरियन के साथ जोड़ी बनाकर। लगभग 10 रोटरेक्टर रोटरी क्लब बर्मिंघम की बैठक में भाग ले सकते है जो उनके स्वयं के भवन में आयोजित होती है, जहाँ औसत उपस्थिति 200-210 है। सूसन जैक्सन, जो वर्ष 1999 में क्लब से जुड़ी, कहती है कि जब रोटरी क्लब बर्मिंघम ने इस रोटरेक्ट क्लब की शुरुआत की, तब इसने पूर्ण समर्थन देकर मदद की - 5,000 डॉलर, उनके मंडल का गठन, इत्यादि। "यह भी तय किया गया कि रोटरी क्लब बर्मिंघम को अपने युवा लड़के और लड़कियों को, या उनके संगठन के युवा पेशेवरों को इस क्लब के लिए मनोनीत करना चाहिए, ताकि उन्हें एक मजबूत आधार दिया जा सके।"

इस रोटरेक्ट क्लब ने इतनी ख्याति हासिल की है कि जब शीर्ष युवा पेशेवर बिर्मिंघम आता है, तो यह वो क्लब है जिसमें वह शामिल होना चाहता है!

जेरिस, एक रोटरी राजदूत विद्वान, वर्ष 2009 में क्लब से जुड़ी। जबकि रोटरी क्लब का लिंग मिश्रण मुश्किल से 80:20 के अनुपात में है वहीं रोटरेक्ट क्लब का लिंग अनुपात 50:50 का है, "जो हमारे शहर का और इसके युवा पेशेवर समुदाय का भी सूचक है," सूसन कहती है, जेरिस से आग्रह करते हुए, "बताओ इन्हें, आपके मंडल में कितनी लड़कियाँ है।"

हमारे मंडल में अधिकतर महिलाएं है, जेरिस मुस्कुराती है। और वे इसे बहुत ही शानदार तरीके से चला रही है, मेक्कालम आगे कहते है।

जुलाई की पहली से, बेट्सी बग होलोवे ने रोटरी क्लब बर्मिंघम की अध्यक्षता संभाली, और वह क्लब के 104 वर्ष के इतिहास में तीसरी महिला अध्यक्ष है। सूसन कहती है, "हम हर तरह की भिन्नता का स्वागत करते है- जातीय, लैंगिक...,।"

इस रोटरी क्लब की एक चिन्हक परियोजना है *रेडी टू रीड,* जिसके अंतर्गत शहर की सभी दूसरे-दर्जे की कक्षाओं में पुस्तकालय स्थापित किये गए है और इसके सदस्यों में से 50 सदस्य, विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाने के लिए "अध्ययन मित्र" के रूप में बाहर जाते है। उनकी अन्य परियोजना 17-18 वर्षीय किशोर-किशोरियों को परामर्श देने एवं उन्हें उन छात्रवृत्तियों के माध्यम से कॉलेज भेजने के लिए ज़ोर देने की है जिसका प्रबंध रोटरेक्ट क्लब एक स्थानीय गैर सरकारी संस्था और राज्य शिक्षा विभाग, विभिन्न रोटरी क्लबों एवं सामुदायिक संगठनों के साथ साझेदारी के माध्यम से करता है। वह अब अंतर्राष्ट्रीय सेवा परियोजनाओं में शामिल होना चाहता है।

पोलियो उन्मूलन के लिए यह टीआरएफ को एक वार्षिक दान भी देता है।

470 डॉलर के वार्षिक सदस्यता शुल्क के साथ, रोटरेक्ट क्लब ने अनुदान संचयन में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है और 10 वर्ष पूर्व उनका स्वयं का संस्थान शुरू किया जिसने 1 मिलियन डॉलर इकठ्ठा किये। जेरिस कहती है, "वो पैसा समुदाय में वापस परियोजनाओं में चला गया है।"

सूसन आखिर में कहती है: "जो चीज़ उन्हें उत्कृष्ट और अन्य रोटरेक्ट क्लबों के लिए एक प्रेरणास्रोत बनाती है वह उनकी बैठकों एवं संचार में उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक है। यह एक बहुत रचनात्मक तरीका है; हम उनसे सीखते है, और अब वे जो करते है उसे सीखने के बाद तकनीक का हमारा उपयोग बदल जायेगा।" वह आगे कहती है कि इस रोटरेक्ट क्लब ने इतनी ख्याति हासिल की है कि जब शीर्ष युवा पेशेवर बिर्मिंघम आता है, तो "यह वो क्लब है जिसमें वह शामिल होना चाहता/चाहती है!"

वह आगे कहती है, यदि अन्य रोटरी क्लब एक रोटरेक्ट क्लब को शुरू करने या मजबूत बनाने के लिए जानकारी की तलाश कर रहे है, तो यह क्लब मदद कर सकता है क्योंकि उनके पास बहुत से संसाधन एवं जानकारी है।

(बाएं से) पीआरआईपी के.आर. रवीन्द्रन, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, टीआरएफ ट्रस्टी नियोल ए. बजत, पीडीजी गुलाम ए. वाहनवती, फ्रेड मैकलम एवं सूसन जैक्सन।

1985 में पोलियोप्लस कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ था और लक्ष्य 120 मिलियन डॉलर का था।

लेकिन क्लब नेतृत्व का लक्ष्य स्पष्ट रूप से शीर्ष व्यवसायों, पेशों, परोपकारी संस्थानों एवं आम समुदाय के उत्कृष्ट नेतृत्वकर्ताओं को इसका सदस्य बनाना है। वस्तुतः, इस शहर में जिसके पास धन-संपत्ति है वह इस क्लब का सदस्य है। और क्लब की शहर के मध्य में उसकी स्वयं की ईमारत है जो हार्बर्ट सेंटर कहलाती है। इस चार मंजिला ईमारत में 800 लोगों की क्षमता वाला अत्यधिक सुसज्जित बैठक कक्ष है, एक मंडल कक्ष है, एक समिति कक्ष है और एक सुसज्जित कार्यालय है।

रोटरी क्लब बर्मिंघम के सदस्यों के देय शुल्क में दो धर्मार्थ चीज़ें शामिल है जो कि वैकल्पिक है, लेकिन ''लगभग 100 प्रतिशत सदस्य उसे चुकाते है; एक वर्ष का कुल 1,100 डॉलर होता है,'' सूसन कहती है।

चिन्हक परियोजनाएं

उनकी कुछ विशिष्ट परियोजनाओं पर, वह कहते है कि शिक्षा का क्षेत्र उनके दिलों के करीब रहा है और क्लब 12 वर्षों से अलबामा राज्य में प्री-किंडरगार्टन (प्री-के) शिक्षा में शामिल रहा है, जहाँ 2000 के दशक के प्रारंभ में इन सुविधाओं की कमी थी। क्लब निधीकरण के साथ शामिल हुआ और समय के साथ राज्य ने इन कक्षाओं पर पैसा लगाना शुरू किया जिससे कि अब बिर्मिंघम के सभी स्कूलों में प्री-के कक्षाएं है। अब क्लब ने एक प्री-के सेंटर की स्थापना की है। हाल ही में उन्होंने संकट की स्थिति में गंभीर रूप से बीमार बच्चों के लिए मंडल के साथ बच्चों के अस्पताल को एक हेलीकाप्टर दान देने के लिए कार्य किया।

दी रोटरी ट्रेल (बॉक्स देखे) उनकी शताब्दी वर्ष की परियोजना थी।

अंतर्राष्ट्रीय अखाड़े में, क्लब ने रोटरी क्लब कोलंबो (पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन का क्लब) के साथ स्कूलों के निर्माण एवं श्रीलंका के दो अस्पतालों में कैंसर का पता लगाने वाले उपकरण प्रदान करने के लिए काम किया है।

सूसन समझाती है कि जब सुनामी ने वर्ष 2005 में इस द्वीप राष्ट्र को तबाह कर दिया था, ''हमारे क्लब के सदस्य मदद करना चाहते थे और उन्होंने चेक भेजे थे। हमारे पास वास्तव में बड़ी रकम थी और उस क्षेत्र में हमारा सबसे मजबूत संपर्क रवि थे, जिनके मंडल ने स्कूल पुनर्निर्माण कार्य की जिम्मेदारी ली थी।'' परियोजना की समाप्ति के पश्चात्, रविन्द्रन ने उनके क्लब का दौरा किया और उन्हें धन्यवाद दिया और समझाया कि कैसे उनके पैसों का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने क्लब के सदस्यों को एक मैत्री यात्रा पर श्रीलंका आने का निमंत्रण दिया, जो 2009 में संपन्न हुई, और इसके बाद अन्य सहयोगी परियोजनाएं हुई। सबसे नवीनतम परियोजना एक कैंसर का पता लगाने वाले केंद्र की स्थापना करने की है जो कि 250,000 डॉलर की एक वैश्विक अनुदान परियोजना है जिसमें चार देश - यूएसए (रोटरी क्लब बर्मिंघम), जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड और श्रीलंका - शामिल है। अब तक, केंद्र ने 35,000 महिलाओं की मुफ्त में जांच की है और लगभग 5,000 कैंसर के मामलों का पता लगाया है जिनका आगे उपचार किया जा रहा है।

तो रोटरी का कौन सा पहलू उन्हें सबसे अधिक पसंद है?

अध्यक्ष कहते है, दो चीज़ें। पहली, मेलजोल, जो बढ़िया एवं जरूरी दोनों है। दूसरी, वास्तव में कुछ उच्च गुणवत्ता वाले वक्ताओं एवं अपने क्षेत्र के शीर्ष नेताओं को सुनने का अवसर, जिनमें से कुछ क्लब के साथी सदस्य होते है, परन्तु जिनके जीवन की कहानियाँ और कैरियर के अनुभव सभी को मालूम नहीं होते। उनके द्वारा आमंत्रित वक्ताओं में बिल क्लिंटन, जनरल इलेक्ट्रिक के सीईओ जेफ्फ इम्मेल्ट, चेक गणराज्य के राष्ट्रपति वाक्लाव हावेल, जैसी और भी शख्सियतें शामिल है।

पीआरआईपी रविन्द्रन कहते है, ''मैं रोटरी क्लब बर्मिंघम को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ रोटरी क्लबों में से एक मानता हूँ। उनके पास विशुद्ध गुणवत्ता वाली सदस्यता, अच्छी संख्या, अद्भुत साहचर्य है और वे उच्च वर्ग की परियोजनाएं करते है और उनके पास सबसे बेहतरीन आधारभूत संरचना है, जिसमें एक अति कार्यकुशल प्रशासनिक सचिवालय शामिल है। इससे अधिक एक रोटरी क्लब से आप क्या अपेक्षा कर सकते है?''

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रोटरी क्लब अम्बाला के कैंसर अस्पताल को मिला ''फ्लाइंग एम्बेसडर''

वाई.पी.दास

वर्ष 1997 में रोटरी क्लब अम्बाला (मंडल 3080) के पूर्व अध्यक्ष सुभाष बंसल को अपनी पत्नी स्नेह बंसल के कैंसर का पता चला। उनके इलाज के लिए बंसल को जगह-जगह

भागना पड़ा। जब बंसल को कैंसर से पीड़ित मरीजों को इलाज के लिए होने वाले कष्ट और पीड़ा का अहसास हुआ, तो उन्होंने अम्बाला में कैंसर के मरीजों के लिए सुविधा उपलब्ध कराने का निर्णय किया। अम्बाला में उस समय के कैंसर के इलाज की कोई व्यवस्था नहीं थी। वर्ष 2003 में 'ग्लोबल कैंसर कन्सर्न इंडिया' और अमरीका के रोटरी क्लब बोका रेटन के सहयोग से एक ''पेलिएटिव केयर यूनिट'' की स्थापना की गई और कैंसर जागरूकता शिविर लगाये गये।

रवि बंसल अपने सेसेना 400 विमान में।

इसके लिए एक ''पेलियेटिव केयर'' टीम का गठन कैंसर मरीजों का निःशुल्क इलाज आरंभ करने के लिए गया। इस तरह क्लब इन मरीजों की पीड़ा और दर्द को कम करने में सहायक बना। दो वर्ष की अवधि के दौरान अनेक कैम्प लगाये गये जिनमें विशेष रूप से महिलाओं में कैंसर की पूर्व पहचान के लिए करीब 3000 महिलाओं की जाँच की गई।

वर्ष 2005, रोटरी के शताब्दी वर्ष में क्लब ने ''कैंसर डिटेक्शन और जनरल हॉस्पिटल'' बनाने का निर्णय किया। पहले चरण में रोटरी क्लब अम्बाला के सदस्यों के सहयोग से करीब 10 हज़ार वर्ग फिट निर्माण करवाया गया। वर्ष 2010 में दूसरा चरण भी पूर्ण हुआ और अस्पताल चालू हो गया। इस परियोजना के मुख्य प्रेरक रोटेरियन डॉ. जयदेव ने रु. 8 करोड़ से ज्यादा का सहयोग दिया। इस अस्पताल का उद्घाटन 2010 में तत्कालीन रोटरी इन्टरनेशनल अध्यक्ष (नामित) कल्याण बनर्जी ने किया।

रोटरी अम्बाला कैंसर एण्ड जनरल अस्पताल में कैंसर से सम्बन्धित अनेक जटिल और विशिष्ट प्रकार की शल्य चिकित्सायें की गई।

एक अन्तर्राष्ट्रीय साझेदार के रूप में बोर्ड में शामिल होने के बाद रोटरी क्लब बोका रेटन के साथ रोटरी फाउण्डेशन से प्राप्त विभिन्न मैचिंग ग्रांट्स द्वारा अस्पताल में कुछ अति आवश्यक उपकरणों की भी व्यवस्था की गई।

रवि बंसल, पीआरआईपी राजेन्द्र के. साबू के साथ।

वर्तमान में 40 हज़ार वर्ग फीट में निर्मित इस 100 बेड के अस्पताल में समाज के प्रत्येक वर्ग को रियायती दरों पर उच्च स्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध करवाई जा रही है, जिनमें जनरल सर्जरी, न्यूरोसर्जरी, ऑनकोलोजी, इन्टरनेशनल कार्डियोलॉजी, ऑर्थोपेडिक्स, ईएनटी, रेडियोलॉजी, फिजियोथेरेपी आदि हैं। रोटरी क्लब अम्बाला द्वारा संचालित इस अस्पताल के आउटडोर में प्रतिदिन 250 से 300 मरीजों को देखा जाता है।

एक फ्लाइंग समाज सुधारक

अस्पताल की सुविधाओं को और आगे बढ़ाने तथा उन्नत चिकित्सा देखभाल उपकरणों की व्यवस्था करने के लिए रोटरी क्लब अम्बाला ने 30 हजार वर्ग फीट निर्माण की एक नई विस्तार परियोजना पर काम शुरू किया है, ताकि अतिरिक्त 50 बेड और 2 ऑपरेशन थियेटर तथा सिटी स्केन और एम.आर. आई. जैसे जाँच उपकरणों की व्यवस्था की जा सकें।

इसके लिए क्लब को एक फ्लाइंग समाज सेवक के रूप में रोटरी क्लब बफेलो (न्यूयॉर्क) के सदस्य

रवि बंसल मिले, जो एक सेवानिवृत्त उद्यमी हैं। विमान उड़ाने के अपने जुनून के साथ सेसेना-400 एयरक्राफ्ट के मालिक पायलट रवि बंसल ने इस अस्पताल के लिए कुछ आवश्यक विशिष्ट चिकित्सा उपकरणों की व्यवस्था करने के उद्देश्य से 7.50 लाख डॉलर एकत्रित करने का एकल-व्यक्ति मिशन हाथ में लिया है। इसके लिए बंसल अकेले विमान से पूरी दुनियां का चक्कर काट रहे हैं उनका उद्देश्य न केवल धनराशि एकत्रित करना है बल्कि वे कैंसर के इलाज और जाँच के प्रति लोगों को जागरूक भी कर रहे हैं।

आर के शर्मा रोटरी क्लब अंबाला के अध्यक्ष, रवि बंसल और उनकी पत्नी प्रतिभा का स्वागत करते हुए।

बंसल ने 4 जुलाई को बफेलो से अपनी यात्रा शुरू की और वे अब तक 120 घण्टे उड़ान समय में 20 हज़ार नॉटिकल मील (23,000 मील) की यात्रा कर चुके हैं। अपनी इस यात्रा के दौरान वे कनाडा, ग्रीनलैण्ड, आईसलैण्ड, फेरोआईसलैण्ड्स, इंग्लैण्ड, फ्रांस, इटली, ग्रीस, जॉर्डन, संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, मलेशिया, फिलीपींस, जापान, रूस, अलास्का जा चुके हैं। वह 21 अगस्त को वापिस बफेलो लौटे। वे प्रथम भारतीय हैं जिन्होंने इस तरह का साहसिक कारनामा किया है। उनका कहना है कि ''मुझे बहुत मुश्किल से विश्वास हो रहा है कि कई सालों से मैनें पूरी दुनियां का दौरा करने का जो स्वप्न देखा था वह पूरा हो गया और मैं सुरक्षित वापिस अपने घर आ गया।''

कैंसर बीमारी से अपनी भाभी खो चुके बंसल कैंसर के लिए धनराशि एकत्रित करने के अपने उद्देश्य के साथ-साथ गोल्फ खेलने, ड्रिंक्स और ड्रम बजाने की आकांक्षा भी रखते हैं। एक समाचार पत्र को उन्होंने बताया कि ''मैं सप्ताह में गोल्फ के पांच राउण्ड खेल चुका हूँ और मेरे जीवनकाल में ड्रिंक्स के लिए मेरे पास पर्याप्त व्यवस्था है।''

मेकेनिकल इंजीनियरिंग में डॉक्टरेट कर चुके बंसल पूर्व में मेडिकल ऑक्सिजन थेरेपी उपकरण बनाने वाली कम्पनी एयरसेप के मालिक थे, जिसे उन्होंने 3 वर्ष पूर्व 170 मिलियन डॉलर में बेच दिया था। अपनी इस एकल उड़ान यात्रा पर उन्होंने अपना स्वयं का एक लाख डॉलर खर्च किया। बंसल के लिए उनकी इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण भाग अपने गृह नगर अंबाला में वापिस लौटना रहा, जहाँ उन्हें प्रतिबंधित एयरफोर्स बेस पर उतरने की इजाजत मिली और शहर में उनका शानदार स्वागत किया। अपनी इस यात्रा के प्रत्येक चरण के बारे में उन्होंने अपनी वेबसाईट पर लिखा है।

हालांकि उनको इस यात्रा में अकल्पनीय स्थितियों का सामना भी करना पड़ा। एक, जब उन्होंने अपना एयरक्राफ्ट मिडिलिस्ट में भीषण रेगिस्तानी गर्मी में खड़ा किया और जब वो वापिस लौटे तो उनके जहांज में करीब-करीब हर चीज पिघल गई थी। अपनी इस मैराथन यात्रा के लिए जब वो विभिन्न आवश्यक सामना जुटा रहे थे तब अपने साथ एक छोटी सी चीज ''विंडो शेड'' लाना भूल गये जो मात्र 20 डॉलर कीमत की थी।

अपनी यात्रा के लिए बंसल अपने विस्तृत परिवार पत्नी प्रतिभा, पुत्र रोहन व नितिन, भाईयों, बहन एवं उनके परिवारों को ''उनके अदम्य सहयोग'' को धन्यवाद देते हुए कहते हैं कि ''मैं अपनी संचालन एवं प्रबन्धन टीम ऋ-डए एडी गोल्ड और अहमद हसन, बफेलो के अपने दोस्तों और यात्रा के दौरान बने अपने नये मित्रों और विशेष रूप से उस परमपिता परमात्मा जिसने मुझे पूरी यात्रा के दौरान संभाला, उन सबके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। उन सबको धन्यवाद जिन्होंने मेरे इस स्वप्न को साकार करने में सहायता की। मैं आप सबको बहुत प्यार करता हूँ।''

अपने विमान से एकल उड़ान करते हुए पूरी दुनियां के सैर करने का बंसल का स्वप्न तो साकार हो गया लेकिन कैंसर हॉस्पिटल के लिए एम.आर.आई. मशीन खरीदने के लिए 7.50 लाख डॉलर एकत्रित करने का लक्ष्य अभी अधूरा है। करीब 200 से अधिक दानदाताओं ने लगभग 1.60 लाख डॉलर राशि दान में दी है। उनकी योजना है कि वे इसके लिए विभिन्न रोटरी क्लबों का दौरा करेंगे और अपनी साहसिक यात्रा और जिस उद्देश्य के लिए यह यात्रा की उसके बारे में चर्चा कर शेष राशि जुटायेंगे।

(इस सम्बन्ध में और जानकारी प्राप्त करने तथा रोटरी क्लब अंबाला कैंसर हॉस्पिटल को आर्थिक सहयोग करने के लिए आप वेबसाईट *http://raviworldflight.com* पर जा सकते हैं। रवि बंसल से आप उनकी मेल-आईडीः *ravibansalyahoo.com* पर सम्पर्क कर सकते हैं।)

लेखक रोटरी इन्टरनेशनल के पूर्व निदेशक हैं और रोटरी क्लब, अंबाला (रोटरी मंडल 3080) के सदस्य हैं।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी से जुड़ने के कारण ग्रामीण जल संकट समाप्त हुआ

वी मुत्तुकुमारण

अब महाराष्ट्र के मुरबाड तहसील के किशोर गांव की महिलाओं के लिए पानी लेने के लिए प्रतिदिन 2 किमी से अधिक की पैदल यात्रा करना और पानी लेकर घर वापस लाना अतीत का हिस्सा बन चुकी है। दशकों से, उन्हें सिर और कमर पर बर्तन रखकर, बच्चों के साथ चिलचिलाती धूप में कठिन यात्रा करनी पड़ती थी, और मिट्टी के बांध के निकट एक बारहमासी कुएं पर पानी लेने के लिए पंक्ति में खड़ा होना पड़ता था। गांव से लगभग 650 मीटर की दूरी पर स्थित, इस कुएं को बेहतर प्राकृतिक जलदायी स्तर और प्रचुर मात्रा में मीठा पानी प्राप्त होता है और इस प्रकार यह कुआँ ग्रामीणों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

बाँध द्वारा पुन:पूरित होने वाला यह विशाल कुआँ ग्रामीणों के लिए पेयजल का एकमात्र स्रोत है। मंडल 3142 उल्हासनगर सपना गार्डन रोटरी क्लब के कोषाध्यक्ष, और संत पॉलस कॉलेज के प्राचार्य, एंटनी लॉरेंस, एंटनी लॉरेंस, याद करते हुए कहते हैं, ''किशोर में अपने एनएसएस शिविरों में से एक दौरान हमने पांच छोटे बाँधों का निर्माण किया, जो सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध कराने में सक्षम हैं।''

रोटरी क्लब उल्लास नगर गार्डन के अध्यक्ष मनीष मूलचंदानी किशोर गांव में पेयजल परियोजना का उद्घाटन करते हुए।

पहाड़ी के ऊपर एक भंडारण टैंक में पानी को भरा जा रहा है।

रोटरी की मदद के लिए प्रार्थना

गांव के सरपंच संजय गायक ने लॉरेंस से अपने क्लब के माध्यम से उनके गांव को पानी के संकट से मुक्त कराने का अनुरोध किया।

इसके बाद, अध्यक्ष मनीष मूलचंदानी के नेतृत्व में क्लब के सदस्यों ने गांव का दौरा किया और तत्कालीन डीजी चंद्रशेखर कोलवेकर को स्थिति के बारे में बताया जिन्होंने बदले में ग्रामीणों के लिए पानी की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए 2,900 डॉलर का एक मंडल अनुदान मंजूर कर दिया।

उसी समय, एक फ्रांसीसी रोटेरीयन, जो पीपी सुरेश रूपचंदानी के एक मित्र है, और इस तरह के जल परियोजनाओं में एक विशेषज्ञ है, क्लब के दौरे पर आए हुए थे, उन्होंने बांध और परियोजना स्थल का निरीक्षण करने की इच्छा व्यक्त की।

'ग्रामीणों द्वारा सामना किए जाने वाले कठिनाईयों को देखते हुए और महिलाओं द्वारा प्रतिदिन दूर-दूर से पानी लाने के लिए किए जाने वाले कठिन परिश्रमों को देखने हुए, फिलिप अपने क्लब, आर सी बुमाथ, फ्रांस की से मदद के साथ परियोजना को निधि उपलब्ध कराने के लिए सहमत हो गए। ''उनका हमारे क्लब के साथ लंबे समय से बेहतर संबंध हैं,'' रूपचन्दानी कहते हैं।

डेंगलर ने अपने क्लब से करीब 4,600 डॉलर एकत्र किया और उल्हासनगर के रोटेरियनों ने आवश्यक कमी को पूरा करने के लिए 1,000 डॉलर उपलब्ध कराया।

परियोजना की परिकल्पना के तीन महीने के भीतर, क्लब ने एक भूमिगत पाइपलाइन का उद्घाटन किया जिसे 10,000 लीटर क्षमता वाले भंडारण टैंक को कुएँ से जोड़ा दिया गया था, जिसका निर्माण एक निकट की पहाड़ी पर सरकार द्वारा करवाया गया था। पाइप लाइन के माध्यम से टैंक तक पानी पहुँचाने के लिए कुएँ में एक सब्मर्सिबल मोटर डाला गया। भंडारण टैंक से प्रत्येक घर तक आपूर्ति लाइन के माध्यम से पीने योग्य पानी की आपूर्ति नल द्वारा की जाती है, इस प्रकार ग्रामीणों की पेयजल की समस्या का समाधान किया गया।

इस परियोजना से गांव के 200 से अधिक परिवारों को लाभ होगा। ''हमारे पेयजल संकटों को समाप्त करने के लिए हम रोटरी के आभारी हैं। अब महिलाएँ अन्य उत्पादक कार्यों जैसे अध्ययन करने और यहां तक कि ग्रामीण जीवन के सरल सुखों का आनंद उठाने में अधिक समय व्यतीत करती हैं,'' गैकर मुस्कराते हुए कहते हैं। ■

दान की शुरूआत वास्तव में घर से होती है ...

रशीदा भगत

मंजु और कुलभूषण जेटली

परोपकार के सम्बन्ध में उनका एक साधारण सा मंत्र है: ''दूसरों को सहायता राशि देने के लिए कहने से पूर्व मैं पहले खुद के जेब में अपना हाथ डालता हूँ'' और यह बात सिद्धान्त के रूप में उनका तभी से मार्गदर्शन करती आई है, जब वे बीस वर्ष के थे और मुम्बई के भाभा एटोमेटिक रिसर्च सेन्टर में एक युवा इंजीनियर के रूप में काम करते थे। उस समय वे अपने कुछ साथियों के साथ ऑफिस के पास की गली में स्थित चिल्ड्रंस एड सोसाईटी द्वारा संचालित बाल आश्रम में अनाथ और निराश्रित बच्चों के कल्याण के लिए काम करते थे।

आइये कुलभूषण जेटली से मिलते हैं, जो 1987 में शुरू हुए रोटरी क्लब देवनार के चार्टर सेक्रेटरी थे। उपरोक्त बच्चों को बुनियादी साफ सफाई एवं स्वच्छता के बारे में परामर्श देने और बाद में इन बच्चों को तकनीकी कौशल उपलब्ध करवाने के लिए बन्द होने के कगार पर निष्क्रिय पड़ी नजदीक की आई.टी.आई. जो पुनर्जीवन देने तथा आर्क क्लम्फ सोसाईटी सदस्य बनने तक की उनकी लम्बी यात्रा दान और दया के अनेक कार्यों से भरी पड़ी है। (जेटली 2018 में टोरंटो कन्वेंशन में AKS फेलो के रूप में शामिल किये जायेंगे)।

अमृतसर के एक मध्यम वर्गीय परिवार से आने वाले जेटली ने वहाँ से ग्रेजुएशन करके मुंबई में मैकेनिकल इंजीनियर की योग्यता हासिल की। उनका कहना है कि उनका परिवार सदा से समाज सेवा के कार्यों में भाग लेता रहा है ''मेरे पिताजी ने अमृतसर सेवा समिति में अवैतनिक सेवायें दी और मैं भी उनके साथ समिति द्वारा संचालित अस्पतालों एवं स्कूलों में जाता था।''

इस कारण उनके मन में सेवा की आदत विकसित हुई, और बाद में बाल आश्रम के बच्चों के साथ जुड़ने के बाद वे समाज सेवा के लिए किसी बड़े क्षेत्र की तलाश में थे। उसी समय रोटरी द्वारा देवनार क्षेत्र में एक नये क्लब शुरू की शुरूआत की जा रही थी और उसके लिए व्यावसाईंयों और कारोबारियों की तलाश थी और जेटली उससे सहजता से जुड़ गये।

इसी दौरान कुछ वर्षों तक क़ालिटी कन्ट्रोल इंजीनियर के रूप में काम करने के बाद क़ालिटी कन्ट्रोल उपकरण बनाने वाली खुद की उत्पादन इकाई शुरू करने के लिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी और मार्केट में उन्होंने कई नये उत्पादों की शुरूआत की। रोटरी में शामिल होने के बाद उन्होंने क्लब की अनेक सेवा गतिविधियों में पूर्ण रूचि से भाग लिया और रोटरी फाउण्डेशन के एक महत्वपूर्ण सहयोगी बन गये। सर्वप्रथम जेटली और उनकी पत्नी पॉल हेरिस फेलो (PHF) बने। उन्होंने बताया ''मेरा पोता अपने पहले जन्मदिवस पर ही झक्क बन गया, हमने बहुत पहले ''मेजर डॉनर'' बनने का निर्णय कर लिया था और उसके बाद अगले मील के पत्थर के रूप में -घड बनने का तय किया।' जेटली के प्रतिष्ठित AKS क्लब सदस्य बनने के निर्णय में इस विचार ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई कि इसका श्रेय उनके क्लब को मिलेगा। ''क्योंकि मुझे अपने क्लब पर बहुत गर्व है'' उन्होंने कहा।

बाएं से : मंडल टी आर एफ अधिकारि निरव शाह और अक्षय मेहता, डी जी गोपाल मंधानिया, कुलभूषण जेटली, मंजू और वीरेंद्र विढगे

चार्टर सेक्रेटरी के रूप में शुरूआत करते हुए वे वर्ष 1989 में अपने क्लब के अध्यक्ष बने। पोलियो उन्मूलन अभियान पहले ही शुरू हो चुका था और रोटरी सदस्य इस एक सूत्रीय कार्यक्रम पर ज्यादा ध्यान दे रहे थे। रोटरी क्लब देवनार ने मुंबई के एक विशाल झुग्गी झोंपड़ी वाले क्षेत्र में पोलियो उन्मूलन का काम शुरू किया। उन्होंने इस कार्यक्रम में गंभीरता से भाग लिया और उनके अध्यक्षीयकाल में 100 पोलिया टीकाकरण शिविर लगाये गये। करीब 65,000 बच्चों को पोलियो टीके लगाकर क्लब ने सामुदायिक सेवा की लम्बी यात्रा की शुरूआत की।

जेटली ने बताया ''लेकिन वह एक शहरी क्षेत्र था और मैं ग्रामीण क्षेत्र पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना चाहता था क्योंकि मैने यह महसूस किया कि वहाँ सेवा कार्यों की ज्यादा आवश्यकता थी इसके लिए उन्होंने ''सबके लिए स्वच्छता एवं शुद्ध पेयजल'' परियोजना की शुरूआत की, इसके लिए रोटरी फाउण्डेशन से 103,000 डॉलर की मैचिंग ग्रांट प्राप्त की। क्लब ने इस परियोजना में नीदरलैण्ड के रोटरी क्लब ज़ोटेर्मिअर ज़ग्व्वार्ट के रोटेरियन जॉप वॉन्ड्रेगर के साथ कार्य किया।

इस परियोजना के अन्तर्गत मुंबई के पास करजात तालुका के 35 गाँवों में शौचालयों और ट्यूबवेलों का निर्माण किया गया और जल संरक्षण के लिए एक चैकडेम बनाया गया जिसमें हजारों ग्रामीणों को बहुत राहत प्रदान की। इसी क्रम में एक और मैचिंग ग्रांट लेकर 7 स्कूलों में जल संचयन का प्रबन्ध किया गया, लेकिन यह सब करने से पहले अपनी दान देने की भावना की दृढ़ता बनाये रखने के लिए दूसरों को कहने से पहले उन्होंने पन्द्रह वर्ष पूर्व एक बड़ी स्वच्छता परियोजना करने के लिए अपनी तरफ से रु. 1 लाख खर्च किये। उन्होंने प्राकृतिक आपदाओं के बाद राहत के लिए धन जुटाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने बताया कि कुछ वर्ष पूर्व जब उत्तराखण्ड बाढ़ से और नेपाल भूकम्प से स्वाह हो गया था ''तब हम एक व्हाट्सएप ग्रुप पर थे और मैने मेरे क्लब के सदस्यों से कहा कि हमे मदद करनी चाहिए और मैनें रु. 5000 देकर शुरूआत की। केवल 36 घंटों में हमने रु. 2 लाख इकट्ठा कर लिए थे। मेरा मानना है कि छोटी सी शुरूआत अविस्मरणीय चीजों का कारण बनती है।

पहली बार मैं उनको एक स्कूल दिखाने ले गया। उन्होंने देखा की स्कूली विद्यार्थी मिट्टी के आंगन पर अनुशासित रूप से बैठे हैं। मैने देखा कि वह रोने लग गया और जब कारण पूछे तो बताया कि ये लड़के-लड़कियाँ नन्हें-नन्हें फरिश्ते हैं, और वे इनके कल्याणकारी कार्यों में शामिल हो गये।

यह कहानी भी दिलचस्प है कि जेटली ने इन परियोजनाओं में वॉन्ड्रेगर को किस तरह अपने साथ जोड़ा। उन्होंने बताया ''पहली बार मैं उनको एक स्कूल दिखाने ले गया। उन्होंने देखा की स्कूली विद्यार्थी मिट्टी के आंगन पर अनुशासित रूप से बैठे हैं। मैने देखा कि वह रोने लग गये और जब कारण पूछा तो बताया कि ये लड़के-लड़कियाँ नन्हें-नन्हें फरिश्ते हैं, और वे इनके कल्याणकारी कार्यों में शामिल हो गये।''

जेटली की AKS क्लब में शामिल होने के बाद भी रोटरी फाउण्डेशन के लिए सहयोग करते रहने की योजना है क्योंकि फाउण्डेशन के प्रति उनके मन में ''बहुत सम्मान'' है।

उनकी पत्नी मंजू इन्हरव्हील क्लब देवनार की पूर्व अध्यक्ष हैं। उन्होंने बताया ''यह मेरी पत्नी का विचार था कि हमें छोटे-छोटे टुकड़ों में योगदान देना बन्द करना चाहिए हमने सोचा कि बढ़ती आयु में जब भविष्य का कुछ भी निश्चित नहीं है तब यह ज्यादा उचित है कि हमें बड़ा सहयोग करना चाहिए और इस तरह AKS का सदस्य बनने के विचार का जन्म हुआ। मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि हमें दूसरों के दुःख दूर करने के लिए अपने संसाधनों को और उनके जीवन में सुधार लाने के लिए अपनी विशिष्टता को साझा करना चाहिए''। ■

यादों के गलियारे से गुजरते हुए

रशीदा भगत

इस पीढ़ी के रोटेरियन, या रोटरेक्टर जो रोटरी से उस समय जुड़े जब भारत पोलियो-मुक्त होने की कगार पर था, या उसके बाद जुड़े, उन्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि 1980 के दशक की शुरुआत में, भारत में हर दिन 450 से 500 पोलियो के नए मामले सामने आ रहे थे। और वो भी तब जब पूरी दुनिया में 1000 नए मामले हर दिन सामने आ रहे थे!

और अब हम इस वर्ष दुनिया में मात्र पाँच पोलियो के मामले सामने आने की बात कर रहे है...पाकिस्तान और अफगानिस्तान में! और भारत में पिछले चार वर्षों में पोलियो के शून्य मामले सामने आए है।

जबकि भारत में रोटरी भारत सरकार के साथ उसके सार्वभौमिक टीकाकरण (यूआई) की मुहिम, जिसका शीर्षक *मिशन इन्द्रधनुष* (एमआई) है, के लिए एक विश्वसनीय साझेदार के रूप में एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करने जा रही है, पीडीजी दीपक कपूर, जिन्होंने वर्ष 2001 से बड़ी कुशलता के साथ भारतीय राष्ट्रीय पोलियोप्लस समिति (आईएनपीपीसी) की अध्यक्षता की है, भारत को पोलियो मुक्त बनाने की यात्रा के यादों के गलियारों में ले जाते है।

वर्ष 1994 में, एक युवा डीजी के रूप में - कपूर सिर्फ 36 वर्ष के थे! - वह पोलियो कार्य में शामिल हो गए थे, परन्तु वास्तविक रूप से उसमें अगले वर्ष लिप्त हुए जब रोटरी ने दिल्ली के तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री, डॉक्टर हर्ष वर्धन, के साथ पोलियो को खत्म करने के लिए हाथ मिलाया। ''भारत में वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं के गहन समर्थन प्रयासों के कारण, उन्होंने पूरक टीकाकरण करने का प्रयास किया, जो नियमित टीकाकरण से अलग था जहाँ पर आंकड़े वाकई में ख़राब थे।''

तब तक, वरिष्ठ राजनेताओं और नौकरशाहों ने इस बात पर विश्वास करने से मना कर दिया था कि भारत पोलियो मुक्त हो सकता है। परन्तु 1994 में, हर्ष वर्धन द्वारा आयोजित पहले पूरक टीकाकरण की ''विलक्षण सफलता'' देखने के बाद, भारत सरकार ने वर्ष 1995 में इसे राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में अपनाने का निर्णय लिया, उन्होंने कहा।

कड़ाके की सर्दी, भीड़ भरे इलाके

कपूर याद करते है कि कड़ाके की सर्दी में वे सब डॉ. हर्षवर्धन के घर सुबह 6.30 बजे जाते थे और उनकी पत्नी ''हमें एक कप चाय देती थी और वहाँ

आईएनपीपीसी चेयर दीपक कपूर टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्ज़ा के साथ एक पोलियो प्रतिरक्षण प्रोमो के दौरान।

भारत में हर दिन 450 से 500 पोलियो के नए मामले सामने आ रहे थे। और वो भी तब जब पूरी दुनिया में 1000 नए मामले हर दिन सामने आ रहे थे!

से हम भीड़ भरे इलाकों में बच्चों को टीका लगाने जाते थे। वे वो दिन थे जब भारत में हर दिन पोलियो के 450 से 500 मामले सामने आया करते थे, वहीं पूरी दुनिया में हर दिन 1,000 मामले सामने आते थे।''

जो कि संख्या का आधा था, मुझे आश्चर्य हुआ। ''ओह हाँ, बाद में, यह आधे से भी ज्यादा हो गया, जब चीज़ें अमेरीका और बाकि जगहों पर बेहतर रूप से नियंत्रण में आना शुरू हो गयी, और भारत में आंकड़े और भी बुरे हो गए!''

वर्ष 2001 में उन्हें आईएनपीपीसी का अध्यक्ष बनाया गया। ''वर्ष 2000 तक हम गिरकर 265 मामलों तक आ चुके थे और वर्ष 2001 में 268 मामलों तक। तो सभी को लगा कि कार्य पूरा हो गया है। लेकिन वर्ष 2002 में हमारे समक्ष उत्तरप्रदेश में एक छोटा प्रकोप सामने आया, जो एक नाकामयाबी थी। और कई वर्षों तक हमने पी1 को ऊपर आते और पी3 को नीचे जाते देखा।''

कपूर ने समझाया की तीन तरह के पोलियो वायरस होते है जिन्हें पी1, पी2, पी3 में वर्गीकृत किया गया है। पी2 का आखिरी मामला 1998 में अलीगढ़ से था, और फिर वह खत्म हो गया! भारत में सिर्फ पी1 और पी3 वायरस बचे थे। पी1 को तब अत्यधिक संक्रमणकारी समझा जाता था क्योंकि इसके लक्षण अधिक गंभीर थे और पी3 के विपरीत यह ज्यादा दूर तक फैल सकता था।

उत्तरप्रदेश, बिहार में बुरी मार

''छोटे प्रकोप'' के चरण में, जनसंख्या घनत्व में अधिकता के कारण उत्तरप्रदेश और बिहार में बुरी मार पड़ रही थी। ''मैंने उत्तरप्रदेश की एक जगह, जो दिल्ली से मात्र 30 मिनट की दूरी पर थी, में 32 लोगों को 15 वर्ग यार्ड के एक आंगन में रहते हुए देखा है। दिन की पारी के लोग वहाँ रात को सोते थे और फिर इसका उलटा क्रम चलता था। ऐसे इलाकों में लोग बहुत ही भयानक गंदगी में रह रहे थे। मानव के अपशिष्ट पदार्थ आसपास के गंदे पानी में बह रहे थे और लोग उस तालाब का पानी पी रहे थे जहाँ कीचड़ में लथपथ भैंसें नहाती थी।''

कपूर कहते है कि सबसे ज्यादा खौफनाक बात यह है कि ऐसे कुछ इलाकों में उसी दशा में लोग आज भी रहते है ''और इसलिए यदि हमने सावधानी नहीं बरती तो पोलियो के लौटने का खतरा है।''

एक अन्य समस्या बच्चों में कुपोषण थी जो टीकों को शरीर में एंटीबॉडी (रोग-प्रतिकारक) बनाने से रोकती थी, इससे टीके बेअसर हो जाते थे। जहाँ अमेरीका में बच्चों को पोलियो के लिए 3 खुराक दी जा रही थी, वहीं दक्षिण भारत में ''हम 7-8 खुराक दे रहे थे लेकिन उत्तरप्रदेश में हमारे पास ऐसे बच्चे थे जिन्हें 20 से अधिक टीके की खुराक मिल रही थी उसके बाद भी उन्हें पोलियो हो रहा था,'' वह कहते है।

इस स्थिति को और गंभीर बनाते हुए, बच्चों में आंत-संबंधी रोगों का प्रसार होने लगा। ''तो बच्चा उस बाल्टी की तरह था जिसके तले में छेद हो। आप टीका भरते जाएँगे और दूसरे छोर से वह बाहर निकलता जाएगा, शरीर में रोग-प्रतिकारक बनने तक रुके बिना।''

निराशा के दौर

मैंने उनसे पूछा, तो क्या आपने या अन्य नेतृत्वकर्ताओं ने निराशा के दौर का सामना किया।

आप दुनिया को मजबूर कर रहे है; केवल आप भारतीयों के कारण ही दुनिया पोलियो-मुक्त नहीं है

ब्रूस अयलवार्ड,
डबल्यूएचओ

मुस्लिमों द्वारा विरोध

भारत में पोलियो खत्म करने की मुहिम में सबसे बड़ी चुनौती मुस्लिम समुदाय द्वारा कड़ा विरोध करना था, विशेषरूप से उत्तरप्रदेश और महाराष्ट्र में।

आईएनपीपीसी के अध्यक्ष दीपक कुमार ने याद किया कि एक बार, उत्तर परदेश के कुन्दरकी खण्ड में, एक विशेष मुस्लिम परिवार में जो पोलियो टीकाकरण का कड़ा विरोध करने के लिए प्रख्यात था, एक महिला द्वारा दरवाज़ा खोला गया जिसने हाथों में एक बच्चा पकड़ रखा था। ''हमने पूछा, क्या हम आपके बच्चे का टीकाकरण कर सकते है? हमें कहा गया था कि वे आपको मरेंगे, आपको बहार निकाल देंगे, लेकिन उस महिला ने कहा 'जरूर'। हम चौंक गए, और कुछ लोग टीके की बूँद देने के लिए आगे आए। लेकिन मैंने कहा: 'रुको'; भावभंगिमा सही नहीं थी। वह बहुत परेशान थी। इसलिए मैंने पूछा कि जब हम बच्चे के मुँह में बूंदे डालकर चले जाएँगे फिर आप क्या करेंगी? और उसने कहा कि वह इसके सिर को ज़मीन पर पटक कर इसे मार देगी। पूर्णतः स्तब्ध एवं विचलित होकर मैंने पूछा क्यों और उसने कहा कि यदि मैं नहीं करूंगी तो मेरे पति शाम को घर आएंगे और मुझे मार देंगे। इसलिए हम चुपचाप चले गए।''

इस डर के दोहरे कारण थे; मुस्लिमों से कहा गया था कि यह दवा मुस्लिमों के लिए हराम (वर्जित) है क्योंकि इसमें सुअर के कुछ अंश है। और दूसरा, भारत में मुस्लिमों की संख्या को सीमित करने के लिए यह अमेरिकी और भारतीय सरकार का एक षड्यंत्र है।

एक बार रामपुर में, उन्होंने इस सनकी सिद्धांत का प्रचार करता हुआ अख़बार का एक टुकड़ा देखा जिसकी मुश्किल से 200-300 प्रति छपी थी। ''इस कहानी के पीछे का कारण था कि इस व्यक्ति ने एक स्थानीय रोटेरियन से एक विज्ञापन के लिए कहा जिसका खर्च रु. 500 से रु. 600 था और उसे मना कर दिया गया और यह उसका प्रतिशोध था। परन्तु ऐसी अफवाहों को पागलों की तरह बढ़ावा दिया गया। मुस्लिम उलेमा समितियों की स्थापना कर हमने इस झूठे प्रचार से लड़ाई की। पूर्व अध्यक्ष अजय सक्सेना ने उत्तर प्रदेश में अधिकांश मौलवियों को इकठ्ठा करने में मुख्य भूमिका निभाई थी और मैंने पीआरआईडी अशोक महाजन, मेरे सहपाठी और मेरे प्रिय मित्र, से महाराष्ट्र में इसे आगे ले जाने का अनुरोध किया।''

तो मुझे डर है कि दो सालों के अंदर दुनिया में हर दिन पोलियो के 500 मामले सामने आयेंगे! और फिर कहाँ से आप एक नयी शुरुआत के लिए उतना ही धन, उतनी ही प्रतिबद्धता, उतना ही जुनून लाएंगे?

उन्होंने कहा, ''कई बार; मैं अक्सर पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी और ट्रस्टी सुशील गुप्ता से कहा करता था और आश्चर्य करता था कि क्या कभी भारत पोलियो मुक्त हो पाएगा। ''उन्होंने भारत सरकार को सलाह देने वाले एक सलाहकार समूह की एक विशेष बैठक को याद किया जिसमें, केवल सरकारी अधिकारी, यूनिसेफ और विश्व स्वास्थ्य संगठन के लोग ही शामिल हो सकते थे लेकिन हम रोटेरियन नहीं। लखनऊ में ऐसी ही एक बैठक में, बेनर्जी, जो तत्कालीन टीआरएफ ट्रस्टी थे, ने कहा कि टीआरएफ ने पोलियो के लिए इतना सारा धन दिया है और वे कैसे हमें शामिल होने नहीं दे सकते। वर्ष 2001 से, तब मैं आईएनपीपीसी का अध्यक्ष बना ही था; हमनें बैठक में प्रवेश किया और तब से हम उसमें शामिल है! शुरुआत में हमारे साथ केवल पैसों का थैला लाने वालों की तरह बर्ताव किया जाना बहुत ही निराशाजनक था।''

भारत पोलियो मुक्त हो गया

ब्रूस अयलवार्ड, जिन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन में काफी सालों तक दुनिया भर के पोलियो कार्यक्रमों का नेतृत्व किया, 2001 में भारत आए और कहा: ''आप दुनिया को मजबूर कर रहे है; केवल आप भारतीयों के कारण ही दुनिया पोलियो-मुक्त नहीं है। मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि भारत दुनिया में पोलियो मुक्त होने वाला आखिरी देश होगा, और भारत में, उत्तर प्रदेश आखिरी राज्य होगा, और उत्तर प्रदेश में मुरादाबाद आखिरी शहर होगा।''

इन शब्दों को याद करते हुए, कपूर ने कहा कि उस समय दुनिया में चार पोलियो राजधानियाँ थी - मुरादाबाद, बरेली, बदायुर और रामपुर, सभी चार पश्चिम उत्तर प्रदेश में! ''मुरादाबाद-वायरस के नाम से मशहूर वायरस ने दुनिया के हर महाद्वीप के बच्चों को संक्रमित किया; यह अफ्रीका, अमेरीका और यूरोप तक पहुँचा।''

निराशा के बहुत सारे पल थे, ''बहुत से मौकों पर हमने खुद को अत्यंत हतोत्साहित महसूस किया। लेकिन एक अच्छे दिन, रोई के निर्वाचित-अध्यक्ष, बेनर्जी ने एक बैठक में बहुत ही संवेदनशीलता के साथ कहा: हम अगले वर्ष तक पोलियो से मुक्ति पा लेंगे। और ऐसा हो गया! उनके रोई अध्यक्ष के कार्यकाल के दौरान 13 जनवरी, 2011 को हमें पोलियो का आखिरी मामला मिला और यह बहुत ही अद्भुत था! मुझे लगा था कि वह काफी उतावले हो रहे है। लेकिन ऐसा हो गया। और तीन साल बाद प्रमाणीकरण हुआ!''

वर्तमान और निकट भविष्य की ओर आते हुए, कपूर चिंतित है कि भारतीय रोटेरियन कहीं पोलियो के मोर्चे पर ढीले ना पड़ जाए। ''उन्होंने अन्य जिम्मेदारियाँ ले रखी है; बहुत सारी आवयश्कताएं है... धारणा ऐसी है कि यह खत्म हो गया है और अब पोलियो वापस नहीं आने वाला। लेकिन ऐसे ही आत्मसंतोष के कारण कई अन्य देश जैसे कि इंडोनेशिया, कज़ाखस्तान, चीन, बांग्लादेश, नेपाल में यह वापस आया; चीन में यह दोबारा पाकिस्तान से आया और दूसरों को यह भारत से पुनः प्राप्त हुआ!''

एक अशुभ बात कहते हुए, कपूर ने कहा कि यदि पोलियो भारत में लौटता है और हमारी तीव्र प्रतिक्रिया नहीं रहती है और इसे तुरंत नियंत्रित नहीं किया जाता है, ''तो मुझे डर है कि दो सालों के अंदर दुनिया में हर दिन पोलियो के 500 मामले सामने आयेंगे! और फिर कहाँ से आप एक नयी शुरुआत के लिए उतना ही धन, उतनी ही प्रतिबद्धता, उतना ही जुनून लाएंगे? इसलिए इस लड़ाई में भारत को पोलियो-मुक्त रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है।''

चित्र सौजन्य : आईएनपीपीसी, दिल्ली

झुग्गी झोंपड़ी से समारोह-संचालन ...
और सत्कार-उद्योग तक

रमेश नारायण

हम अक्सर बात करते हैं कि सृष्टि किस तरह चीजों को एक साथ लाने का प्रयास करती है। कभी-कभी वास्तव में हम इसका अनुभव भी करते हैं।

मैं कार द्वारा मुंबई से विरार (जो मुंबई से 2 घण्टें की दूरी पर है।) वृद्ध महिलाओं के लिए आयोजित एक संगीत कार्यक्रम में भाग लेने जा रहा था। इस कार्यक्रम का आयोजन मित्र प्रतिभा और गीता ने एक अन्य गायिका मित्र रोमिता के सहयोग से किया था।

ठीक उसी समय, रोटरी क्लब, बॉम्बे मंडल 3141 के भविष्य यान (BY) कार्यक्रम की प्रबंधकर्त्ता एकता शाह ने मुझे एक मैसेज किया, कि हमारे इध कार्यक्रम की एक पूर्व छात्रा, जो इस समय कॉलेज में पढ़ रही है और हमेशा अपनी सफलता का श्रेय हमारे इस कार्यक्रम को देती है, वह समाज को वापिस कुछ देना चाहती है .... क्या मैं उसके बारे में कुछ सोच सकूँगा।

मैं कार से बाहर आया और मैने प्रतिभा और गीता को पूछा कि क्या वे इस लड़की को उस अनाथालय में ले जा सकती है, जिसकी वे सहायता कर रही हैं। वे उसे अगले दिन वहाँ ले जाने को सहमत हो गई।

कई सप्ताह बाद, जब मैं मेरे पद-स्थापन की योजना बना रहा था, तभी एक विचार मेरे मन में कोंधा। मैने प्रतिभा को बुलाया और पूछा कि वह युवा लड़की पूजा काम्बले तुम्हें कैसी लगी, जो गरीब होने के बावजूद भी समाज को वापिस कुछ देना चाहती थी। उसके जवाब से उत्साहित होकर मैने प्रतिभा से उस लड़की की मदद करने को कहा ताकि वह वह वरली की झुग्गी झोंपड़ियों से निकलकर रोटरी क्लब बॉम्बे के अध्यक्ष के रूप में मेरे पदस्थापन समारोह के संचालक के रूप में आ सके।

मैंने अपनी दोस्त प्रतिभा से पूजा कांबले की मदद करने के लिए कहा। ताकि वह वरली की झुग्गी झोंपड़ियों से निकलकर रोटरी क्लब बॉम्बे के अध्यक्ष के रूप में मेरे पदस्थापन समारोह के संचालक के रूप में आ सके।

रोटरी क्लब बाम्बे के अध्यक्ष रमेश नारायण, पूजा कांबले के साथ।

इसके बाद जो कुछ हुआ, वह अद्भुत था। प्रतिभा और गीता ने उस युवा लड़की को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिया। एकता जो उस समय यात्रा पर थी, उसने भी लगातार इनके सम्पर्क में रहते हुए अनेक बिन्दुओं पर सलाह दी। और वह युवा लड़की पूजा काम्बले, जिसके पिता लकवाग्रस्त है, माता है नहीं, दो बहिनें व एक भाई जो समाज को वापिस कुछ लौटाना चाहती है, वह युवा लड़की, समारोह-संचालक (MC) के रूप में किसी को भी भयभीत कर देने वाले श्रोताओं से खचाखच भरे ताज क्रिस्टल कक्ष में समारोह-संचालन के रूप में मंच के केन्द्र में थी। वह शांत, संतुलित और स्वाभाविक अंदाज में थी। मैने उसे बधाई दी और सोच लिया कि यह बात यहीं खत्म हो गई। भविष्य यान योजना को शो-केस करने का मेरा उद्देश्य हासिल हो चुका था। इसलिए मैने ऐसा सोचा।

अतिथियों मे मेरे एक निजी मित्र अशरफी माचिसवाला भी थे, जो होटल ताज प्रेसीडेंट के जनरल मैनेजर है, उन्होंने पूजा में और भी संभावनायें देखी। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि पूजा को इंडियन हॉटल्स और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशियल साइंसेज (TISS) द्वारा संचालित बी.वॉक (बैचलर ऑफ वॉकेशन) में प्रवेश दिलाया जाए। हालांकि इसमें काफी देरी हो चुकी थी और बैच भी पूर्ण हो गया था, लेकिन अशरफी ने इसे संभव कर दिया।

पूजा ने इस कोर्स में शामिल होने के लिए सहमति दे दी और आज वह सत्कार-उद्योग (Hospitality Industry) में भविष्य बनाने के रास्ते पर चल पड़ी है, और इसमें जितनी भी फीस लगेगी मुझे यकीन है कि रोटरी क्लब, बॉम्बे उसका भुगतान कर प्रसन्नता महसूस करेगा।

(लेखक रोटरी क्लब बॉम्बे के अध्यक्ष है।)

एक शख्स जिन्होंने महिला रोटेरियनों की ज़बरदस्त वृद्धि की

रशीदा भगत

पीआरआईपी गैरी हुआंग और कॉरिना ने टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, डीजीआर श्रीनिवासन, पीआरआईडी पी.टी. प्रभाकर, पीडीजी आईएसएके नाज़र और अफज़लुनिसा नाज़र (चरम बाएं) की उपस्थिति में सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए।

एक अच्छे नेता की वास्तविक परीक्षा केवल उनकी टीम को कुशल नेतृत्व प्रदान करने में नहीं बल्कि साधारण पर शानदार विचार देने में होती है। ''उन दिनों (जब गैरी हुआंग 2014-15 में आरआई प्रेसिडेंट थे) निरंतर कम होती सदस्यता हमारी सबसे बड़ी समस्या थी। उन्होंने रोटेरियंस को साधारण परन्तु अदभुत विचार दिया, नए सदस्य बनाने के लिए अपने घर देखो और इस तरह अपने जीवन साथी को रोटेरियन बनाने का विचार आया और रोटरी भारत ने उनके नेतृत्व में सबसे अधिक संख्या में महिला रोटेरियंस बनाए।'' मंडल 3232 चेन्नई में गवर्नर्स के लिए आयोजित 'लाइट अप कॉनक्लेव ' में, रो.ई. निदेशक सी भास्कर ने कहा, जब पी.आर.आई.पी. गैरी के अध्यक्ष वर्ष में जब थीम लाइट अप रोटरी था।

उन्होंने कहा, ''तत्कालीन रो.ई. निदेशक पी.टी. प्रभाकर और 'लाइट अप' प्रांतपालों के असाधारण नेतृत्व में हमने दुनिया को दिखा दिया कि भारत ,रोटरी में एक विशिष्ट पहचान रखता है, विशेष रूप से महिला सदस्यता, टी आर एफ योगदान और विशाल पी.आर. परियोजनाओं - जैसे डी जी आई एस ए सी नाज़र द्वारा किया गया *My Flag My India* कार्यक्रम और पीडीजी गणेश भट्ट द्वारा एक स्टेडियम में 500 कलाकारों द्वारा एकसाथ वीणा वादन कार्यक्रम का आयोजन। पूरे भारत भर में हमने उन चीजों को किया जो भारतीयों को पसंद थी।''

भास्कर ने कहा,उस वर्ष के बाद रोटरी इंडिया ने पीछे मुड़ कर नहीं देखा और लगातार आगे बढ़ना जारी रखा। डीजी आर श्रीनिवासन के नेतृत्व का सम्मान करते हुए कहा कि उन्होंने अपनी मुस्कान और स्नेह के साथ पूरी टीम को अपने साथ लिया और पीडीजी नाज़र (अब मंडल ट्रेनर), नटराजन नागोजी, डीजीई बाबू पेराम और डीजीएन जी चंद्रमोहन के साथ काम करके एक मिसाल कायम की।

भास्कर ने वहां उपस्थित प्रांतपालों को (जिन्हे वे 'ट्रेंडसेटर' भी कहते हैं), से आग्रह किया कि भारत की छवि को, जो पोलियो उन्मूलन/प्रतिरक्षण में हमेशा से सहायता प्राप्त करने वाले देश की रही है उसे सहायता देने वाले राष्ट्र की छवि में बदलना है। हम यह नहीं भूलें कि हमारे बच्चों को पोलियो से प्रतिरक्षित करने के लिए किसी अन्य व्यक्ति ने टीके का भुगतान किया था लेकिन आज इसे दूसरों को देना हमारा कर्त्तव्य है। इस हॉल में बैठे सभी लोग पूर्णतया संपन्न हैं, अब हमें पोलियो के खिलाफ अन्य देशों के बच्चों को प्रतिरक्षित करना चाहिए। आपके सहयोग से हम 'पोलियो का अंत' *(End Polio)* अभियान में भारत को दुनिया में शीर्ष पर ला सकते हैं.

पीआरआईपी गैरी ने अपने भाषण की शुरुआत में दर्शकों को ''हैप्पी क्लैप'' के लिए बोला और उत्साहित हो कर कहा ''किसी को याद नहीं कि मैंने क्या कहा लेकिन हर कोई मेरे हैप्पी क्लैप को याद रखता है!'' उन्होंने अपने थीम विषय पर किस तरह से सोचा था उसके बारे में उन्होंने कन्फ्यूशियस के कथन को कहा, कि अंधेरे को दोष देने से बेहतर है कि मोमबत्ती जला लें। दुनिया में इतनी सारी समस्याएं हैं, और बहुत से लोग कहते हैं कि उनको हल करने के लिए मैं कुछ नहीं कर सकता, इसलिए वे कुछ करते भी नहीं और चुपचाप इतने सारे लोगों की पीड़ा को देखते रहते हैं। इसका समाधान ये है कि एक मोमबत्ती मैं जलाऊं और एक आप और जब 12 लाख रोटेरियनों एक साथ मोमबत्ती जलाएँगे तो कल्पना

आरआईडीसी भाक्सर और माला को रोटेरीयन बालासुब्रमण्यम और रोटेरीयन शशि सुरेश सम्मानित करते हुए (दाएं से) चित्र में लाइट अप कॉन्क्लेव चेयर डी. देव, पीडीजी आईएसएके नाज़र, डीजी आर. श्रीनिवासन और सुजाता श्रीनिवासन (चरम बाएं) भी शामिल है।

कर सकते हैं कि क्या अंतर पड़ सकता है।''

उन्होंने वहां उपस्थित हर रोटेरीयन से चीजों को बेहतर बनाने के लिए, कुछ न कुछ करने का आग्रह किया। चाहे वो काम कितना ही छोटा क्यों ना हो। उन्होंने कहा, ''बेशक हम सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते, लेकिन हमारे पास जो कुछ भी है उस से उतना तो करें जितना हम कर सकते हैं। आखिर, रोटरी एक विशाल संगठन है और एक साथ मिल कर हम बहुत बड़ा काम कर सकते हैं।''

गैरी ने कहा, रोटरी ने एक समय में 25 लाख से अधिक बच्चों को पोलियो प्रतिरक्षण में मदद की थी। ''जब हमने काम शुरू किया तो हर रोज़ पोलियो के 1,000 मामले सामने आते थे और हर साल दुनिया भर में 3,50,000 बच्चे मारे जाते या अपाहिज हो जाते थे। पिछले पांच सालों में भारत में एक भी नया पोलियो का केस सामने नहीं आया है और आप सभी को इस कड़ी मेहनत के लिए धन्यवाद है।''

आज केवल तीन देश में पोलियो बचा है - नाइजीरिया, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान। ''हम जानते हैं कि यह आसान नहीं है लेकिन पाकिस्तान के रोटेरियनों ने पोलियो खत्म करने संकल्प लिया है और इसे प्राथमिकता दी है। अब यह केवल समय की बात है, और मुझे यकीन है कि 2019 तक हमारा सपना साकार होगा और जब ऐसा होगा तो आप सभी को 'धन्यवाद' कहने के लिए हमारे पास पर्याप्त शब्द नहीं होंगे। हमारी फाउंडेशन ने सम्पूर्ण विश्व में ये बहुत ही अच्छा काम किया है और आप गर्व से कह सकते हैं कि, मैं भी उसका एक हिस्सा हूँ। तो आप जो भी करते हैं वह कभी छोटा नहीं होता है, वो सब जुड़ता जाता है। हर एक मोमबत्ती जलाने भी से फर्क पड़ता है। ''

टीआरएफ के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने कहा कि पीआरएपी गैरी के साथ उनकी दोस्ती 30 साल पहले हुई थी ''मुझे नहीं पता है कि यहां बैठे कितने लोग 30 साल से रोटरी में हैं!'' आरआई के एक असाधारण योग्यता वाले अध्यक्ष जिन्होंने अद्भुत नेतृत्व दिखाया, उनके कार्यकाल के दौरान सदस्यता और टीआरएफ योगदान दोनों ने लम्बी छलांग लगाईं और ''पहली बार टीआरएफ में प्रति व्यक्ति योगदान 100 डॉलर पार कर गया।''

हालाँकि, पिछला वर्ष टीआरएफ शताब्दी वर्ष था, ''बेशक हमने अधिक पैसा संग्रहित किया लेकिन गैरी ने वास्तव में भारत को प्रोत्साहित किया और भारत में रोटरी की तस्वीर ही बदल दी। जीवन साथी (पत्नियों) को रोटरी सदस्य बनाने के उनके विचार ने वास्तव में कमाल किया और उनमें से कुछ महिला सदस्य आज अपने क्लबों की अध्यक्ष बन गई हैं. गुप्ता ने कहा कि हम में से कई इन महिला रोटेरियनों की कड़ी मेहनत की बराबरी नहीं कर सकते।''

पीआरआईडी पी टी प्रभाकर ने कहा कि ''आरआई अध्यक्ष गैरी ने अपनी टीम को अधिक ऊंचाई हासिल करने के लिए प्रेरित किया था। उनका विचार 'रोटरी डेज़' एक अद्भुत जनसंपर्क विचार था जिसे हमें हर साल जारी रखना चाहिए, प्रत्येक क्लब को रोटरी की छवि को बढ़ाने के लिए कुछ ना कुछ करना ही चाहिए। वर्ष का उत्कृष्ट प्रोजेक्ट था *My Flag My India* जिसने गिनीज़ रिकॉर्ड बनाते हुए रोटरी को विश्व पटल पर ला खड़ा किया। हम सदस्यता बढ़ाने में प्रथम रहे। निदेशक भास्कर ने न जाने क्या जादू किया और क्षेत्र 5 में हमने 70,000 सदस्यों के साथ 63 प्रतिशत वृद्धि दर्ज़ की।''

प्रभाकर ने कहा, ''पीआरआईपी गैरी द्वारा बनाया गया मेम्बरशिप का ये रिकॉर्ड अभी तक क़ायम है और मुझे लगता है की कई सालों तक ये बरकरार रहेगा। वे (मंडल 3230) चेन्नई इंस्टिट्यूट (और अन्य प्रोजेक्ट्स) के लिए यहाँ एक सप्ताह रुके इससे हम सम्मानित हुए हैं।''

मंडल ट्रेनर और लाइट अप डीजी सम्मेलन के आयोजक पीडीजी आईएससी नाज़र ने कहा कि गैरी के नेतृत्व को एक शब्द में पिरोया जा सकता है वो है ''प्रेरणा। यदि आप अपने साथियो, सहयोगियों और दोस्तों को प्रेरित कर सकते हैं तो आप एक महान नेता हैं और यदि आप उस प्रेरणा से दूसरों को बदल सकते हैं तो आप एक सफल नेता हैं।''

उन्होंने कहा कि ''यह सम्मेलन लाइट अप गवर्नर्स के लिए बुलाया गया था और हम इसे जारी रखेंगे, क्योंकि प्रकाशमय नेता (लाइट अप लीडर्स) केवल एक वर्ष के लिए नहीं, बल्कि एक दशक के लिए होते हैं।''

चित्र : रशीदा भगत

टेक्स्टाइल ट्रैल

भूले-बिसरे शिल्प

गोवा की कुनबी साड़ी।

को मिला पुनर्जीवन

सबिता राधाकृष्णा

प्राचीन समय में शिल्प हमेशा से एक मौखिक परम्परा के रूप में पिता से पुत्र, माता से पुत्री को हस्तातंरित होता था। कुछ शैलियाँ खो चुकी है और वस्त्र शैली की कुछ अनमोल विरासत समय के इतिहास में विलुप्त हो चुकी है। इस शिल्पकला को स्थायी बना रहने के लिए आज इसका प्रलेखन अनिवार्य है और कुछ शिल्प कार्यकर्ताओं ने लुप्त प्राय वस्त्रशैली को पुनर्जीवन देने के काम को आगे बढ़ाया। इस तरीके से वो इसको उन लोगों के सामने लेकर आये जो उनके अस्तित्व के बारे में नहीं जानते थे। परम्परा का पुनर्जीवन किया गया, पुराने कौशल को सीखा गया और ठीक उसी समय समकालीन बाजार की मांग के अनुसार उसे सुधारा गया।

हैंडलूम दिवस मनाने के लिए भारतीय शिल्प कला परिषद (Crafts Council of India) ने वस्त्र शैली के पुनर्जीवन के कार्य में लगे दो युवा शिल्प कार्यकर्ताओं को अपनी पुर्नउत्थान शैली से तैयार साड़ियों को प्रदर्शित करने के लिए आमंत्रित किया। मैने उस कार्यक्रम का संचालन किया था। मैने वस्त्र पुर्नउत्थान के सम्बन्ध में अपनी पहल के बारे में बात की और हमने इस सम्बन्ध में सामूहिक रूप से खुलकर चर्चा की।

पेशे से शिक्षक और गोवा की कला का इतिहास विषय पर शोध (पी.एच.डी.) कर चुके रोहित फालगांवकर ने 40 वर्ष पहले खत्म हो चुकी आदिवासी साड़ी के नमूने लेने के लिए यात्रा की। उन्होंने मूल साड़ी के नमूने को दोबारा से तैयार किया जिसे वे गोवा के आदिवासी गोड़ा समुदाय से करीब एक दशक पूर्व लेकर आये थे और इस प्रकार एक साड़ी जो पहले लुप्त हो गई थी उसे दोबारा से तैयार किया। इसके लिए उन्हें उनके प्रयासों को बहुत-बहुत धन्यवाद। फालगांवकर ने उस साड़ी का प्रतिरूप वैसा ही तैयार किया जैसी वह पहले बुनी गई थी। साड़ी का खुरदरापन उसकी सुन्दरता को बढ़ा रहा था। उन्होंने मूल साड़ी के प्रतिरूप को तैयार करने के लिए कर्नाटक और तमिलनाडु के हैंडलूम बुनकरों की सहायता ली।

करीब 200 वर्ष पूर्व पुर्तगालियों ने आयातित वस्त्रों और ड्रेस संस्कृति को लागू करने के लिए साड़ी बुनाई पर प्रतिबन्ध लगा दिया था फिर भी बड़ी संख्या में लोग अपनी पैदायशी पहचान से जुड़े रहे। एन्टोन जुआन कड़े दण्ड के जोखिम के बावजूद अपने घर के तहखाने में

करीब 200 वर्ष पूर्व पुर्तगालियों ने आयातित वस्त्रों और ड्रेस संस्कृति को लागू करने के लिए साड़ी बुनाई पर प्रतिबन्ध लगा दिया था फिर भी बड़ी संख्या में लोग अपनी पैदायशी पहचान से जुड़े रहे।

अन्य हिन्दु संस्कृति के रीतिरिवाजों का परित्याग नहीं किया था।

फालगांवकर ने गोवा की *'गोड़ा'* साड़ी के चार मूल डिजाइनों को पुनर्जीवन दिया और उन साड़ियों का नामकरण उन गांवों और गांवों के देवताओं के नाम किया जहाँ से वो मूल रूप से प्राप्त हुई। *'गोड़ा'* साड़ी में भी विशेष प्रकार का बॉर्डर होता है। कुछ मॉडलों पर रूद्राक्ष डिजाइन भी है। यह उनकी पुर्तगाल पूर्व संस्कृति को दर्शाता है। उनके हिन्दु सहगामी धीरे-धीरे मूल डिजाईन से परम्परागत नौ गज की साड़ी की तरह शिफ्ट हो गये जो पड़ौसी राज्य महाराष्ट्र से आई थी जो एक पर्दे की तरह लटकने आदिवासी स्टाईल में है जो उनके कंधे पर एक गांठ से बांधी

ऊपर : कुनबी साड़ी नीचे: कुम्बकोणम की कोडअल्ली करूपूर साड़ी।

साड़ी की बुनाई करते थे। आर्ट सिल्क गोवा में पुर्तगाली शासन के दौरान प्रचलन में आया। ये साड़ियाँ 'साडो' कहलाती थी, जिन्हें दुल्हनों और उनके परिवार के सदस्यों को उपहारस्वरूप दिया जाता था। फालगांवकर ने इन साड़ियों को पुनर्जीवन दिया और यह सुनिश्चित किया कि ये आर्ट सिल्क के साथ हाथ से बुनी हुई है और उनका नामकरण दो देवियों के नाम पर किया गया। लाल साड़ी को 'शांता दुर्गा' और गुलाबी साड़ी को 'नव दुर्गा' नाम दिया गया। इस प्रकार गोवा के आदिवासियों की *'गोड़ा'* साड़ी का जन्म हुआ। पुर्तगाली शासन के दौरान कुछ 'गोड़ा' ईसाईयों के रूप में परिवर्तित हो गये थे बाकी हिन्दु बने रहे। ईसाई गोड़ाऔ ने साड़ी सहित

जाती है। इसलिए इस साड़ी को ईसाई *गोड़ा* साड़ी या ''गोवा की आदिवासी साड़ी'' नाम दिया जाना चाहिए।

हेमलता जैन ने उत्तरी कर्नाटक की दसवीं सदी की विलुप्तप्राय उत्कृष्ट *पटेडा आँचू साड़ी* पर शोध कर उसको पुनर्जीवित किया। यह युवा महिला पुनर्जीवन को लेकर बहुत उत्साही है। उसके कई रूप है.... शिक्षाविद्, क्यूरेटर, डिजाईनर और पुनरूत्थानकर्ता। उसने 'पुर्नजीवन फॉरमेशन ऑफ ट्रस्ट' तथा 'स्वयं सहायता समूह' की स्थापना की है। यह *पटेडा आँचू* साड़ी उस समय उनकी निगाहों में आई जब वे कर्नाटक में यलम्मा सौन्दत्ती मंदिर देखने गई। वहाँ एक देवदासी द्वारा बची हुई पुरानी साड़ी को पहने देख

उत्तरी कर्नाटिका से पटेडा आँचू साड़ी।

वे आकर्षित हो गई और हेमलता ने इस विषय पर शोध और प्रलेखन शुरू कर दिया और इसका पुनर्जीवन किया। उन्होंने इस विषय पर डॉक्ट्रेट भी की। उन्होंने मूल साड़ी को एक समसामयिक मोड़ दिया और इसे साड़ी फैशन की दुनियां में सबके सामने लेकर आई।

हेमलता जैन ने उत्तरी कर्नाटक की दसवीं सदी की विलुप्तप्राय उत्कृष्ट *पटेडा आँचू साड़ी* पर शोध कर उसको पुनर्जीवित किया।

उन्होंने उत्तरी कर्नाटक में बुनकरों के साथ काम किया और यह जानकारी प्राप्त की कि सदियों पहले इस साड़ी की बुनाई गजेन्द्रगढ़, बेलगांव, रायचूर, कोडल, बीदर, भैलारी, गुलबर्गा और धारवाड़ के गांवों में होती थी। उन्होंने बताया कि ''इसे एक पवित्र वस्त्र समझा जाता था जिसे किसी की भी पुत्री का विवाह होने पर मंदिर की देवी को अर्पण किया जाता था।''

परम्परागत साड़ी छोटी होती थी जिसकी चौड़ाई 43 इंच और लम्बाई 6 गज़ होती थी जिसे विशिष्ट रूप से खेतों में काम करने वाली महिलाओं के लिए बनाया जाता था। यह खुरदरी

कोडाली करुप्पूर साड़ी।

20 काउंट की साड़ी रूई से बनती थी। 'पटेड़ा आँचू' एक लुप्त सा शिल्प है जिसका एक केवल एक दक्ष बुनकर शेष बचा है जो यह जानता है कि इस परम्परागत साड़ी की बुनाई कैसे होती है। डिजाईनर ने इसमें हस्तक्षेप कर साड़ी की चौड़ाई एवं रंग की पट्टी को परिवर्तित कर दिया जिसमें पीले, लाल, गुलाबी और काले रंगों को समाहित किया गया।

मैने वस्त्रों के प्रति अपने लगाव और हैंडलूम के प्रति मेरे जुनून के बारे में बात की और बताया कि किशोरावस्था में मेरी उम्र में जब 'शिफॉन' और 'जॉर्जट' पहनी जाती थी, तब मैं अपनी माँ के हाथ की हैंडलूम साड़ी को पहनती थी। पूरे भारत में पिछले 35 वर्ष से बुनकरों के बीच काम करते हुए मैने अपने उन प्रयासों के बारे में बताया कि किस तरह 18वीं शताब्दी की पौराणिक 'कोडाली करूप्पूर' साड़ी को विलुप्त होने से बचाने के लिए मैने प्रयास किये।

शिल्प और वस्त्र कौशल उस समय सुरक्षित रहते हैं जब वे मंदिरों से जुड़े रहे और या उन्हें शाही संरक्षण मिले। शानदार पौराणिक साड़ी 'कोडाली करूप्पूर' साड़ी कला क्षेत्र में जिसके पुनर्जीवन के लिए उन्होंने मदद की वह 18वीं सदी के मराठा शासक सरफोजी राजा भौंसले छत्रपति द्वितीय के संरक्षण में तंजावुर रानियों के लिए 19वीं सदी तक बुनी जाती थी। करूप्पूर वस्त्र धार्मिक रीतिरिवाजों के लिए प्रयोग में लिया जाता था और केवल शाही लोगों द्वारा पहना जाता था। इस साड़ी का उत्पादन तंजावुर जिले में कुंबाकोनम के नजदीक कोडाली करूप्पूर गांव में 400-500 उन परिवारों द्वारा किया जाता था जो सौराष्ट्र से दक्षिण के विभिन्न बुनाई केन्द्रों पर आकर बसे थे।

शिल्प और वस्त्र कौशल उस समय सुरक्षित रहते हैं जब वे मंदिरों से जुड़े रहे और या उन्हें शाही संरक्षण मिले।

कोडाली करूप्पूर साड़ी बुनकर, मुद्रक और चित्रकार का संयुक्त प्रयास है जिसमें बहुकौशल समाहित है। जब हमने चैन्नई के कला क्षेत्र फाउण्डेशन के 'क्राफ्ट एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च सेन्टर' में करूप्पूर साड़ी को पुनः तैयार किया तब मुझे उम्मीद थी कि साड़ी का यह प्रतिरूप और भी कई करूप्पूर साड़ियों के निर्माण के काम को आगे बढ़ायेगा जो मूल साड़ी के समकक्ष होंगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ हालांकि अभी भी कम से कम हमारे पास 4 साड़ियों के ऑर्डर रहते हैं, जबकि इसकी कीमत प्रति साड़ी एक लाख से भी अधिक है। मै किसी कॉरपोरेट प्रायोजक की तलाश में हूँ जो इसे आगे बढ़ाये।

अंत में मैं यह कहना चाहूँगी कि साड़ियों का पुनर्जीवन किया जाना यदि पर्याप्त है तो मुझे बहुत आश्चर्य होगा, यह दो वर्ष की करघों में चलने वाली निरन्तर प्रक्रिया होनी चाहिए ताकि गरीबों से जूझते बुनकरों को जीवन यापन के लिए एक उम्मीद जगे।

चित्र:सबिता राधाकृष्ण
एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

ROTARY IN ACTION

सिंगापुर ने विद्यार्थियों को चकित कर दिया

वी. मुत्तुकुमारण

औरंगाबाद स्थित यशोदीप विद्या मंदिर के आठ छात्रों के लिए, सिंगापुर का चार-दिवसीय अध्ययन भ्रमण बाहरी दुनिया का उनका सबसे पहला अनुभव था। विदेशी शहर की उज्जवल स्वच्छता और अनुशासन ने उनके आश्चर्य में वृद्धि की।

इसकी स्कूल सुधार गतिविधि के हिस्से के रूप में, रोटरी क्लब औरंगाबाद मेट्रो, मंडल 3132, रोटरी क्लब बुकित तिमाह (आरसीबीटी), मंडल 3310, के साथ बच्चों के लिए शैक्षणिक दौरा आयोजित करने के लिए सम्बद्ध हुआ। परियोजना प्रमुख चद्रकांत चौधरी ने कहा, मुख्य उद्देश्य उन्हें स्वच्छता, स्वास्थ्य, सफाई, एवं अन्य सार्वजनिक मुद्दों जैसे कि यातायात की चाल, अनुशासन में शिक्षित करने और बाहरी दुनिया दिखाने का था।

आरंभ में, क्लब ने 15 बच्चों का चुनाव किया था, लेकिन सात ने मना कर दिया क्योंकि उनके माता-पिता को डर था कि उनके बच्चे वापस नहीं आयेंगे। क्लब ने अभिभावकों के 'शर्मनाक प्रश्नों' का सामना किया जिन्होंने रोटेरियनों द्वारा विदेशी धरती पर दौरा आयोजित करने के पीछे उनके 'गुप्त अभिप्रायों' के होने का आरोप मढ़ा।

चुने गए बच्चों के माता-पिता की सालाना आय रु. 1 लाख से कम है और उन्होंने कभी सपना नहीं देखा था कि उनके बच्चे विदेश जाएंगे। यहाँ तक कि पासपोर्ट के लिए मुंबई जैसे मेट्रो शहर की यात्रा और एक अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डे से एक जहाज में चढ़ना भी उनके तालुक में बातचीत के विषय बन गए। सभी बच्चे औरंगाबाद से 28 किमी दूर स्थित खुलताबाद तालुक के निवासी थे और उन्होंने अब तक कभी भी उनके स्थान से बाहर यात्रा नहीं की थी।

उनमें से एक छात्रा, दिव्या काचकर, सिंगापुर में अत्यधिक अनुशासित यातायात, निर्दिष्ट धूम्रपान के स्थानों और सफाई से प्रभावित हुई। वह एक अनोखी शिक्षा थी, वह कहती है और आश्चर्य करती है कि क्या एक दिन भारत भी सिंगापुर की तरह हो सकता है।

मेजबान क्लब ने 2,300 डॉलर तैयार रखे ताकि आगंतुकों के प्रवेश शुल्क, परिवहन, स्मृति-चिन्ह, भोजन और विविध संग्रह के खर्च को पूरा किया जा सके। बच्चों के साथ तीन शिक्षक और चार रोटेरियन गए थे। बच्चों का आरसीबीटी अध्यक्ष अजीतचंद्र सुले और रोटेरियन मिलन सुले के निवास पर गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया और उनके लिए चीनी ब्रश चित्रकारी की एक कार्यशाला भी रखी गई। सिंगापुर के रोटेरियनों ने युवा मेहमानों का मनोरंजन उनके देशी प्रदर्शनों द्वारा किया।

मनोहर नज़ारे

शहर के प्रसिद्द पर्यटन स्थलों की अति शीघ्र सैर बच्चों के लिए एक सच्ची दावत थी। वे ये जानकर अचंभित हुए कि यह द्वीप-शहर दैनिक उपभोग का पानी मलेशिया से आयात करता है। लेकिन एनईवाटर प्लांट के स्थापित होने और वर्षा जल के संरक्षण जैसे कदमों को अपनाने के बाद उन्हें 2020 तक आत्मनिर्भर होने की आशा है।

अतिथि दल ने महाराष्ट्र के एक लोक नृत्य लावणी का प्रदर्शन कर सिंगापुर के ग्लोबल इंटरनेशनल स्कूल के बच्चों को प्रभावित किया।■

धरती को हरीति करने के लिए बीज गेंद

कार्तिक वी

जब रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष इयान रिसिलेयिस राटेरियनों को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित कर रहें और प्रत्येक रोटेरियन से एक पौधा लगाने का अनुरोध कर रहे हैं, ऐसी स्थिति में बीज गेंद की तकनीक संपूर्ण देश के हरियाली के प्रति समर्पित स्वयंसेवकों के मध्य धीरे-धीरे लोकप्रिय होता जा रही है।

बीज के गेंद की प्राचीन संकल्पना, जिसे मिट्टी के पकौडी के नाम से भी जाना जाता है, की फिर से खोज एक जापानी किसान, मसनोबू फुकुओका, द्वारा की गई थी, जो भूमि पर वनस्पति को फिर से उगाने के लिए पाने क्रांतिकारी विचारों के लिए प्रसिद्ध है। बीज गेंद का उपयोग अक्सर 'गुरिल्ला बागवानी' में आसन अस्त्र के रूप में किया जाता है (वैसी भूमि पर बागवानी, जिसका उपयोग करने के लिए माली कानूनी रूप से अधिकृत नहीं है, जैसे कि एक परित्यक्त साइट, निजी संपत्ति आदि)।

बीज के गेंद के निर्माण में उर्वर लाल मिट्टी, गाय के गोबर, गाय के मूत्र और अन्य जैव-खाद के मिश्रण का इस्तेमाल किया जाता है। अर्द्ध-ठोस मिर्श्रण को मिश्रण के अनुपातिक परिमाण में पानी डाल कर तैयार किया जाता है, जिसके बाद एक विशेष पौधें के बीज को इसके अंदर डाला जाता है। इन अर्द्ध-मुलायम बीज गेंदों को धूप में सुखाया जाता है और बाद में इस्तेमाल करने के लिए भंडारित किया जाता है। उन्हें पहाड़ियों, झीलों, तालाबों के निकट बिखरा दिया जाता है, ताकि वे अंकुरित होकर पौधे और अंततः वृक्ष के रूप में विकसित हो सके, जिससे वर्षा जल को रोकने और बनाए रखने में मदद मिलता है। बीज गेंदों में 50 प्रतिशत से अधिक नए पैधों के रूप में अंकुरित होता है।

किफ़ायती

यह तकनीक किफ़यती है, क्योंकि प्रत्येक बीज गेंद के निर्माण पर केवल एक रूपये की लागत आती है, जबकि एक नन्हें पौधे के पोषण और देखरेख पर कुछ हजार रूपये खर्च होता है और जिसमें पौधों को पानी देना और उसकी सुरक्षा का कार्य भी शामिल होता है, यह कहना है बेंगलुरु के निकट हैसरघट्टा नामक एक गांव के कृषक गंगाधरन का। उन्होंने घास, कटहल, पोंगामिया, जेट्रोफा, इमली, नीम, सीताफल (कस्टर्ड एप्पल) और आम तथा और उन्हें बेंगलुरु के निकट स्थित कसरगट्टा, अलदाहल्ली, माहिमपुरा और केरेकुतिगुन के गांवों में बिखराया। उन्होंने कहा कि यह बेहतर होगा कि नीलगिरी और बबूल के बीजों को बिखराने से बचा जाएं क्योंकि इन पौधों के जड़ पर्याप्त दूरी पर स्थित तालाबों तक पहुँच जाता है।

बीजों को तैयार करना

बीज गेंदों में बीज को डालने से पहले उन्हें मखरोंच प्रक्रियाफ से तैयार करना होता है। इस प्रक्रिया में बीज के बाहरी आवरण को कमजोर किया और खोला जाता है, ताकि अंकुरण को प्रोत्साहित किया जा सके।

बीजों को 100 डिग्री सेल्सियस पर उबाले गए पानी पर भिंगोया जाता है, और इसमें बीज को तब तक रहने दिया जाता है, जब तक पानी का तापमान कमरे के तापमान तक नहीं पहुँच जाता है। इसके बाद वे बीज गेंदों में डाले जाने के लिए तैयार होते हैं।

बीज गेंद तकनीक यह सुनिश्चित करती है कि बीज पानी के बिना दो माह तक जीवित रहने में सक्षम रहें। यदि ये नन्हे पौधें मानसून के आरंभ होने तक जीवित रहने में सक्षम होते हैं, तो उनके जीवित रहने की दर अधिक होती है।

बच्चे बीज गेंद बनाते हुए।

बीज गेंद तैयार करने की प्रक्रिया

अपनी पसंद के बीज का 1 हिस्सा भाग

1 भाग गमले की मिट्टी

स्थानीय आर्ट स्टोर से 5 भाग चिकनी मिट्टी का मिश्रण

1-2 भाग पानी

सामग्री को मिलाने के लिए विशाल टब

बीज बॉक्स को सूखाने और संग्रहित करने के लिए बड़ा बॉक्स

दिशानिर्देश:

बीजों और मिट्टी को अच्छी तरह से मिलाएं। चिकनी मिट्टी और एक भाग पानी को मिलाएं, और सुनिश्चित करें कि वहाँ कोई गांठ शेष नहीं रहता है।

मिश्रण में धीरे-धीरे पानी डालते जाएं जब तक मिश्रण खिलौना तैयार करने की मिट्टी के समान अच्छी तरह से तैयार नहीं हो जाता है।

इसके बाद उसमें बीज डालें। मिश्रण को गूंथते रहें जब ताकि बीज अच्छी तरह से मिश्रित नहीं हो जाता है। आवश्यकतानुसार अधिक पानी डालें।

मिट्टी का मिश्रण का थोड़ा भाग ले और एक इंच व्यास की गेंद व्यास बनाएं। गेंदों को आपस में आसानी से चिपकना चाहिए। यदि वे भुरभुरे है, तो उनमें और अधिक पानी डालें।

छाया में बीज गेंदों को 24-48 घंटों तक सुखाएं। वे सूख कर सख्त हो जाएंगे और इसके बाद उन्हें ठीक मानसून से पहले अपशिष्ट भूमि, शुष्क भूमि में बोया या फेंक दिया जा सकता है। उन्हें जमीन के अंदर गाड़ने या पानी डालने की आवश्यकता नहीं होती है। वर्षा का जल बीज गेंद को गीला कर देता है, जिसके कारण इसके अंदर पड़ा हुआ बीज अंकुरित हो उठता है। बीज गेंद के अंदर मौजदू पोषक तत्व बीजों को अंकुरित होने व बड़ा होने में मदद करते हैं।

बीज के गेंदों को भविष्य में उपयोग करने के लिए एक कार्डबोर्ड के बक्से में भंडारित किया जा सकता है। इन्हें प्लास्टिक के थैलियों में नहीं रखें।

रोटरी की भागीदारी

रोटरी इस धरती को हरा-भरा बनाने के अभियान को स्कूलों तक लेकर जा सकता है और बच्चें इस बहुत पसंद करेंगे। इस वर्ष वन्मोत्सव का आयोजन करते हुए, रोटरी क्लब, मंडल 3181, ने इंट्रैक्टर्स के मध्य बीज गेंदों का वितरण किया, जिन्होंने उन बीज गेंदों को शहर के तनिरभावी समुद्र तट पर बिखरा दिया। रोटरी क्लब मैसूर जयप्रकाश नगर ने 7,000 बीजों का गेंद बनाने के लिए स्कूली बच्चों को शामिल किया, जिन्हें वर्ष की शुरुआत में गवर्नर स्थापना कार्यक्रम के दौरान 70 क्लब अध्यक्षों को दिया गया था।

एक गैर सरकारी संगठन उत्तिष्ठ भारतः, स्कूलों, कॉलेजों और कॉर्पोरेट में इस अभियान को लेकर जाने के लिए मंडल के क्लबों के साथ सहयोग करने के लिए तैयार है। स्कूलों और कॉलेजों में एनएसएस छात्रों ने बीज गेंद की संकल्पना के साथ प्रयोग करने में बहुत रुचि दिखाई है।

कीचड़ से लदा हुआ एक ट्रेक्टर और कम्पोजिट से लदा हुआ दूसरा ट्रेक्टर, प्रत्येक लगभग 90 क्यूबिक फीट से भरा हुआ, तीन से चार स्कूलों के बच्चों को सिखलाने के लिए पर्यास होगा।

लेखक रोटरी क्लब मैसूर जयप्रकाश नगर, मंडल 3181 के सदस्य है।

करुर एंजल्स ने किया रोटरी का प्रचार

टीम रोटरी न्यूज़

नीलावती गोपालकृष्णन, मंडल 3000 की प्रथम महिला, कहती है कि ''मैं केवल गवर्नर का एक आभूषण नहीं बनना चाहती हूँ। इसके बजाय मैं इस वर्ष की रोटरी की विषय वस्तु को प्रोत्साहित करना एवं मंडल के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए रोटेरियनों को प्रेरित करना चाहती हूँ।'' इसलिए, जब उनकी क्लब की सदस्य मीना सुबियाह ने एक अनूठी मोटर रैली का सुझाव दिया, तो उन्होंने उसे उत्साहपूर्वक पकड़ लिया।

संपूर्ण-महिला क्लब रोटरी क्लब करुर एंजल्स की दो महिलाओं ने, तीन अन्य महिलाओं- लक्ष्मी बालाजी, विनीता मोहन और शंमुगवल्ली नाल्लासिवम - के साथ एक स्कूटर रैली निकाली जो मंडल के प्रमुख शहरों पेराम्बलुर, त्रिची, अरियालुर, पुदुकोट्टाई, मदुरई, पेरियाकुलम, ठेनी और डिंडीगुल से गुजरती हुई करुर के उस स्थान पर संपन्न हुई जहाँ से उन्होंने शुरुआत की थी। डीजी पी. गोपालकृष्णन, सहायक गवर्नर एवं मंडल समन्वयकों के साथ बारीकियों को समझने के बाद उन्होंने प्रस्थान किया।

टीवीएस ज़ेस्ट स्कूटरों को चलाते हुए, 'पाँच परियों' ने रास्ते में गाँवों एवं छोटे कस्बों के लोगों के मध्य रोटरी की सामुदायिक परियोजनाओं का प्रचार किया। अल्प विरामों पर स्थानीय रोटेरियनों द्वारा धूमधाम से उनका स्वागत किया गया और कस्बों के भीतर उन्होंने साथ में रैलियों में हिस्सा लिया। रोटरी के कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाने के लिए उन्होंने विज्ञापन पत्र एवं

ऊपर : (बाएं से)
रोटेरियन मीना सुब्बय्या, लक्ष्मी बालाजी, विनिता मोहन, शण्मुगवल्ली नल्लशिवम और नीलावती गोपालकृष्णन बथ्लगुंडु के रास्ते पर।

दाएं :
रोटेरेक्टरों द्वारा रैली टीम का स्वागत मदुरै में।

हरे-भरे पर्यावरण के लिए बीज की गेंदें बांटी।

मदुरई में रोटेरियनों एवं रोटरेक्टरों के साथ डीजीई आर. वी. एन. कानन ने रैली करने वाली महिलाओं के लिए नृत्य एवं संगीत के साथ एक पारंपरिक स्वागत का प्रबंध किया और शहर के भीतर एक रैली में उनके साथ जुड़े।

करुर, उनकी आखिरी मंजिल, में संयुक्त रूप से स्थानीय क्लबों द्वारा आयोजित की गयी बैठक में डीजी द्वारा दल का अभिनन्दन किया गया। उन्होंने 2 अगस्त से शुरू कर एक हफ्ते में 600 किमी की यात्रा तय की।

अनुभव को याद करते हुए, नीलवती ने कहा, ''मैं सोचती हूँ कि सार्वजनिक जागरुकता फैलाने के हमारे पहले प्रयास में हमने बहुत कुछ प्राप्त किया है और भविष्य में ऐसे ही कार्यक्रमों की अपेक्षा करते है।''

व्यक्तिगत तौर पर, विनीता ने कहा कि स्कूटर रैली के बाद से वह चीज़ों को संभालने के लिए अधिक आश्वस्त एवं सशक्त महसूस करती है। उन्होंने आगे कहा, ''रोटरी के अतिरिक्त, मैं प्रसन्न हूँ कि मैं अधिक लोगों को उनके जीवन में भी ऐसा कुछ करने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित कर सकी। इस अवसर को मुझे प्रदान करने एवं मेरे जीवन में एक परिवर्तन लाने के लिए रोटरी का धन्यवाद।'' ■

संग्रहालय

जब लोग टोरोंटो के बारे में सोचते हैं, तब अक्सर वे हिम, हॉकी और नवीनतम पाक व्यंजनों के बारे में ही सोचते है। परंतु नगर में कुछ विश्वस्तरीय संग्रहालय भी है। यदि आपके पास किसी एक संग्रहालय को देखने का भी समय होगा, जब आप 23 से 27 जून तक नगर में आयोजित होने वाले 2018 रोटरी इंटरनेशनल सम्मेलन में भाग लेने के लिए नगर में होंगे, तब आपको अवश्य ही या तो रॉयल ओंटारियो संग्रहालय या ओंटारियो की आर्ट गैलरी देखना चाहिए।

ङदि आरओएमङ्ख संपूर्ण विश्व और विभिन्न युगों के कला, संस्कृति और प्रकृति का संग्रहालय है। इसके संग्रह में लगभग 6 मिलियन नमूने, वस्तुएं और कलाकृतियां शामिल हैं। दस साल पहले, संग्रहालय के विस्तार के दौरान एक क्रिस्टल के आकार के पांच इंटरलॉकिंग प्रिज्मीय संरचनाएं को जोड़ा गया था।

निकट स्थित एजीओ के संग्रह में 90,000 से अधिक कलाकृतियाँ हैं। इसमें कनाडाई कला, पुनर्जागरण युग और बारोक युग, तथा यूरोपीय, अफ्रीकी, समुद्री, और समकालीन कला का विशाल संग्रह मौजूद है। 40,000 तस्वीरों का संग्रह एक विशाल आकर्षण है, क्योंकि यह प्रसिद्ध ब्रिटिश मूर्तिकार हेनरी मूर के कार्यों का सबसे बडा सार्वजनिक संग्रह है।

आरओएम के सड़क के पार, आप कनाडा के राष्ट्रीय सिरेमिक संग्रहालय, गार्डिनर, मिलेगा, जो ड्रॉप-इन चिकनी मिट्टी की कलाकृति के लिए प्रसिद्ध है। एक और लोकप्रिय दर्शनीय स्थल बाटा जूता संग्रहालय है, जिसमें हजारों जूते और संबंधित कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया है जो कि 4,500 वर्षों के जूते का प्रतिनिधित्व करता है।

— रंडी ड्रुज़िन

2018 टोरंटो में आयोजित होने वाले रोटरी सम्मेलन के लिए *riconvention.org* पर पंजीकरण करें।

पहली पंक्ति में प्यार

संध्या राव

क्या आश्चर्यजनक जाल है जिसमें हम पहली ही पंक्ति पढ़ने पर उलझ जाते हैं।

मैं लगभग 12-13 वर्ष की थी जब मैंनें पॉल गेलिसियो को पढ़ना आरंभ किया था। यह *Love of Seven Dolls* थी जो आंटी को एक दोस्त से जन्मदिन पर उपहार स्वरूप मिली थी। अजीब सा टाईटल ... मैंनें सोचा पृथ्वी पर इसका अर्थ क्या है? एक पतली सी पुस्तक ... मुश्किल से सौ पृष्ठ, जिसकी शुरूआत में लिखा था ''पेरिस में हमारे समय में बसन्त में एक युवा लड़की सीन नदी में कूदने वाली थी।'' इसके बाद पृष्ठ पर नीचे एक-दो पैराग्राफ के बाद यह लिखा था ''क्या आपको याद है कि पेरिस में मई में जब बसन्त ऋतु आती है तो चेस्टनट पेड़ों की विशाल द्वीप श्रृंखला खुबसूरत शहर को आलोकित कर देती है।''

मुझे पता है कि ना तो सीन नदी और ना ही चेस्टनट ट्री और ना ही पेरिस के नाम को पहचानती थी, लेकिन मैं इसके सम्मोहन में फँसी थी जो मुझे आज भी पूर्ण रूप से एक जादू लगता है। मैनें एक बार में ही पूरी पुस्तक को खत्म किया और उसके बाद कई बार पढ़ चुकी हूँ - मैंनें महसूस किया कि वास्तव में *Love of Seven Dolls* होना चाहिए था और क्या हो सकता था'' मैने दोस्तों एवं बाकी लोगों को सब जगह इस पुस्तक को सुझाया है और हमेशा उनकी पहली प्रतिक्रिया रही ''क्या? यह दुबारा क्या है? *Love of* क्या?''

मैं अपने लिए किताबों की दुकान पर इसकी एक प्रति हासिल करने में असफल रही - यह साईबर गतिविधि के इस युग के पहले की बात है। यह पुस्तक कई वर्षों से नहीं छपी, और भारत में तो उपलब्ध भी नहीं थी, लेकिन वर्ष 1991 में दिल्ली में

जन्मदिन पर यह मेरे हाथ में आई जिसमें लिखा था ''तलाश पूर्ण हुई ...''

हमसे कुछ लोगों के दिमाग में चार्ल्स डिक्न्स सन्निहित है। याद है ... - *Tale of Two Cities?* ''वह सबसे अच्छा समय था, वह सबसे खराब समय था, यह बुद्धि का काल था, वह मूर्खता का समय था, वह विश्वास का युग था, वह अविश्वास की अवधि थी, वह प्रकाश का मौसम था, वह अंधेरे का मौसम था, वह आशा का वसन्त था, वह निराशा का शीतकाल था, हमारे सामने हर चीज थी, हमारे सामने कुछ भी नहीं था...''

मैं जब टाईप कर रही थी यह शब्द गूँज रहे थे, ठीक उसी तरह हारपर ली की पुस्तक। *To Kill a Mockingbird* के शब्द नाटकीय रूप से पूर्णत: अलग तरीके से गूँजे ''जब मैं लगभग 13 वर्ष की थी तब मेरे भाई जेम का हाथ कोहनी पर से बुरी तरह से टूट गया'' सीधा साधा सा वाक्य लेकिन यह हमें सीधा उस एक्शन तक लेकर जाता है और हम और जानना चाहते हैं। मुझे पता है मैंने किया है और उस पुस्तक ने क्या दुनियां खोली है, एक अलग और अंजान संसार, एक ऐसा संसार जो किशोरावस्था में उस पुस्तक के पढ़े जाने के बाद स्मृति में हमेशा के लिए अंकित हो गया।

प्रारंभिक पंक्तियों के बारे में सोचते हुए बेतरतीब ढ़ंग से मेरी किताबों से भरी हुई अलमारी से किताबों को बाहर निकालती हूँ। संयोग से मुझे उस समय अफसोस होता है और में गुस्सा करती हूँ जब मुझे पता चलता है कि मैंने जो किताब पढ़ने के लिए किसी को उधार दी वह वापिस नहीं आई। उन दिनों - हो सकता है यह उम्र हो, हो सकता है यह बुद्धिमानी हो - मैं ज्यादा दिमाग नहीं लगाती हालांकि स्पष्ट रूप से अन्दर हल्की सी पीड़ा जरूर है क्योंकि इस धर्मशाला में कोई कमरा नहीं है। इतने लंबे समय में जिस किसी के पास भी मेरी वह कीमती पुस्तक है उसने उसको पढ़ा होगा, उसका आनन्द लिया होगा और शायद किसी दूसरे को पढ़ने के लिए दिया होगा यही उम्मीद है।

फिर भी पुस्तकों के ढ़ेर पर चे गुवेवारा की *Motorcycle Diaries* सबसे ऊपर थी, वास्तव में यह स्पेनिश अनुवाद (एलक्ज़ेंडर कीबले द्वारा) था। प्रथम अध्याय का शीर्षक था ''इस तरह हमने एक दूसरे को समझा।'' मुझे याद है कि मुझे इस वाक्यांश को प्यार हो गया था। कहानी या डायरी इस तरह शुरू हुई ''यह किसी अतुलनीय बहादुरी की कहानी नहीं है और ना ही किसी की निंदा का वर्णन है, कम से कम मैं तो ऐसा नहीं सोचती, यह उन दो जिन्दगियों की झलक है जो समय के साथ एक समानान्तर आशा और मिले जुले सपनों के लिए दौड़ते हैं, अपने जीवन के नौ महिने के समय मे ंएक

प्रसिद्ध और स्मरणीय प्रथम पंक्तियाँ किसी कल्पना से सम्बन्धित नहीं होती। कंचा इलैया द्वारा लिखित किताब *Why I am not a Hindu* को लीजिए

आदमी बहुत सारी चीज़ें सोच सकता है। दर्शन शास्त्र के उच्चस्तरीय ध्यान से लेकर अपने पेट के लिए एक सूप के बाउल तक।

जब मैं इसकी प्रति बुकस्टोर में देखती हूँ तो मैं रूक नहीं पाती हूँ और ना ही मेरे जवान दोस्तों को इसकी प्रति देने में अपने आप को रोकती हूँ। कभी-कभी पुस्तक के साथ चे टीशर्ट भी होती है और जो इसको लेता है उसकी आँखों में चमक देखकर मुझे उसका अहसास होता है।

करीब दो वर्ष पूर्व मेरे एक मित्र ने मुझे टेन टवान इंग द्वारा लिखित *The Garden of Evening Mists* पुस्तक भेंट की। उसने कहा ''मुझे बताइये आप क्या सोचते हैं?'' एक छोटी सी पुस्तक थी जिसे मैने तुरन्त पढ़ना शुरू किया 'एक पर्वत पर बादलों से पार एक आदमी रहता था जो जापान के सम्राट का बागवान था युद्ध से पहले बहुत ज्यादा लोग उसको नहीं जानते थे लेकिन मैं जान गया।'' हाँ! इस पद्य के शांत से माधुर्य से एक बार इस तरह का डरावना सा चित्रण किया, लेकिन उसकी निरन्तरता में वह ओझल हो गया। प्रसिद्ध और स्मरणीय प्रथम पंक्तियाँ किसी कल्पना से सम्बन्धित नहीं होती। कंचा इलैया द्वारा लिखित किताब Why I am not a Hindu को लीजिए ''मैं हिन्दू के रूप में पैदा नहीं हूँ और सीधा सा कारण है कि मेरे माता-पिता नहीं जानते की वे हिन्दू है लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं एक मुस्लिम के रूप में या एक ईसाई के रूप में, या एक बोध या सिक्ख, पारसी के रूप में पैदा हुआ हूँ। मेरे अशिक्षित माता-पिता जो सुदूर दक्षिण

मुझे उस समय अफसोस होता है और में गुस्सा करती हूँ जब मुझे पता चलता है कि मैंने जो किताब पढ़ने के लिए किसी को उधार दी वह वापिस नहीं आई।

भारतीय गाँव में रहते थे उनको यह पता ही नहीं था कि उनका घर कहाँ है।''

बहुत जोर की चोट और दिमाग को हिला देने वाली बात। किताब के दमदार विचार आपके दिमाग में हमेशा आपके दिमाग और मन में बने रहते हैं। कुछ लोग पागल हो जाते हैं, और कुछ व्यथित, जबकि कुछ अविश्वसनीय समझकर बदल जाते हैं।

किताबों को लेकर ऐसा ही है। जब आप इनको पढ़ना शुरू करते हैं, और जब खत्म करते हैं तो बहुत कुछ ऐसा है जो परिवर्तित हो जाता है।

इस लेखक के बारे में क्या? स्टेफन किंग, ने जोए फेसलर को एक साक्षात्कार में कहा जो' *The Atlantic* (जुलाई 23, 2013) में प्रकाशित हुआ। ''जब मैं एक किताब की शुरूआत करता हूँ तो सोने से पहले बिस्तर पर लिखता हूँ। मैं वहाँ अंधेरे में झूठ बोलूंगा और सोचूँगा। मैं एक पैराग्राफ लिखने की कोशिश करूँगा। एक प्रारंभिक पैराग्राफ। और फिर कई सप्ताहों तक, महिनों तक, और सालों तक दुबारा शब्द दूंगा, जब तक कुछ मुझे और मैं खुश न हो जाऊँ। यदि मेरा पहला पैराग्राफ ठीक हो गया तो मुझे पता है मैं उस किताब को लिख सकूँगा।''

उन्होंने अपनी लिखी हुई पुस्तकों की प्रथम लाईन के बारे में बात करते हुए बताया जो सर्वश्रेष्ठ थी। उन्होंने अपनी पुस्तक *Needful Things* का चयन किया। ''... यह कहानी उन प्रारंभिक पंक्तियों से शुरू होती है जो 20 पोइंट साईज़ के अक्षरों से लिखी है। 'आप यहाँ दुबारा आये सब कुछ पहले पेज पर है जो पाठक को पढ़ने के लिए आमंत्रण देता है। यह एक परिचित सी कहानी सुझाता है। ठीक उसी समय यह असामान्य प्रस्तुति साधारण दायरे से बाहर लेकर आती है और एक तरीके से

यह उस पुस्तक का वायदा एक शब्द है जो सामने आने वाली है।''

वायदा वह एक शब्द है। यह वादा है कि क्या आने वाला है। जिस तरह मोनी मोहसीन की *The Diary of a Social Butterfly* में लिखा ''हाँ हमारे समूह में इतना बड़ा घोटाला, ना! टोंकी की पत्नी फ्लूजी अपने सर्वश्रेष्ठ दोस्त के साथ भाग गई जिसने फ्लूजी की प्रिय दोस्त ड्रोप्सी से शादी की थी। जरा देखो! क्या तमाशा है हर कोई इसके बारे में बात कर रहा है, शादियों में, समूहों में, पार्टियों में सब जगह। फ्लूजी का नाम कीचड़ से भी बदतर है। कीचड़ जिसमें गाय का गोबर मिला हुआ है उस तरह का जानू के गाँव में किसान अपना घर बनाने के काम में लेते हैं। (क्या वे तिनके काम में लेते हैं? खैर जो भी है) पूर्ण रूप से अपमानजनक, बिल्कुल अपमानजनक और अप्रतिबंधित है। यह इस तरह की पुस्तक है। पहली पंक्ति में प्यार। और हम सब जानते है प्यार परिभाषा को खारिज करता है।

और इसीलिए मैने बोरिया मजूमदार और नलिन मेहता द्वारा लिखित पुस्तक *Olympics: The India Story* का पूर्णरूप से शोध करने के उद्देश्य से मैने इससे प्यार का बंधन महसूस किया। देखिये ''भारत ओलंपिक खेलों में भाग लेने वाला उपनिवेशित एशियन देश था।'' क्या मैने नहीं कहा था कि पहली पंक्ति से प्यार का आधार मात्र कोई वैज्ञानिक तर्क होता है और ना कोई दार्शनिक कारण। प्रमाण पूर्ण रूप से किताब का रसास्वादन करने में हैं।

समीक्षक एक बच्चों की लेखिका है और वरिष्ठ पत्रकार भी।

आपके गवर्नरों से मिलिये

जयश्री

रोटरी में मूल्यों को जोड़ते हुए

पी गोपालकृष्णन, घरेलू वस्त्र निर्यातक,
रोटरी क्लब करूर टेक्स सिटी, मंडल 3000

एक साल रोटरेक्टर रहने के बाद, वर्ष 1999 में वह रोटरी से जुड़े। गोपालकृष्णन कहते है, ''शुरुआत में, मेरी रुचि केवल मित्र बनाने में थी, लेकिन अब रोटरी मेरी जिन्दगी का हिस्सा है; इसने मुझे सबकुछ दिया है,'' आगे कहते हुए कि उन्होंने सार्वजनिक रूप से बोलने और नेतृत्व के कौशलों का विकास किया है जिसने कई अन्य मंचों पर मुख्य भूमिका निभाने में उनकी मदद की है।

वह अपने दल को GEMS (गो दि एक्स्ट्रा माईल एंड सर्व - उनकी विषयवस्तु) बुलाते है और उन्होंने 9 परियोजनाएं *(नवरत्न)* इकठ्ठा की है ताकि प्रत्येक माह किसी निश्चित दिन सभी क्लब एक साथ उनका अनुपालन कर सकें। वह कहते है, ''इससे क्लबों के बीच समन्वय और प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होती है।''

वह रोटरी की सार्वजानिक छवि में सुधार करने हेतु एक नवीन तरीके पर प्रकाश डालते है। ''हमने हमारे सदस्यों को ऋएचड विशेषाधिकार पत्र दिए है और हम 2,500 दुकानों के साथ जुड़े है जो उत्पाद और सेवाओं के लिए 2-30 प्रतिशत तक की छूट देंगे। यह दुकाने रोटरी के चक्र को प्रदर्शित करती है, जो बदले में जनता के मध्य रोटरी की प्रत्यक्षता को बढ़ाती है।''

एक अन्य नवीन विचार जिसे उन्होंने पेश किया वह है बड़ी रोटरेक्ट जनसंख्या वाले एक कॉलेज के परिसर में फुटकर परिधान आउटलेट को एक दुकान खोलने के लिए आमंत्रित करना। समझौता ऐसा है कि आमदनी का 10 प्रतिशत हिस्सा दुकान द्वारा रोटरेक्ट क्लब को दिया जाएगा। वह कहते है, ''यह आमदनी सेवा परियोजनाओं को आरम्भ करने में क्लब की मदद करेगी। ''

उनकी अन्य परियोजनाओं में छह डायलिसिस केन्द्रों एवं दस ग्रामीण नेत्र चिकित्सालयों की स्थापना करना और स्कूलों में WinS सुविधाएं प्रदान करना शामिल है जिसके लिए उन्हें 275,000 डॉलर के तीन वैश्विक अनुदानों की मंजूरी मिल गई है।

सदस्यता के बारे में गोपालकृष्णन कहते है, ''हमारे बहुत से क्लब कमजोर है और अवरोधन दर भी ख़राब (65 प्रतिशत) है।'' वह 10 प्रतिशत की शुद्ध बढ़त, नए सदस्यों की कम से कम 85 प्रतिशत की अवरोधन दर और कमजोर क्लबों को मजबूत बनाना चाहते है। भर्ती हुए नए सदस्य अब तीन सालों के लिए क्लब अध्यक्षों की जिम्मेदारी होंगे, वह कहते है।

उनकी पत्नी, नीलवती, रोटरी क्लब करूर एंजेल्स की सदस्य है, एक पूर्ण महिलाओं का क्लब जहाँ की पाँच रोटेरियनों ने मंडल में रोटरी के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए एक स्कूटर रैली निकाली थी।

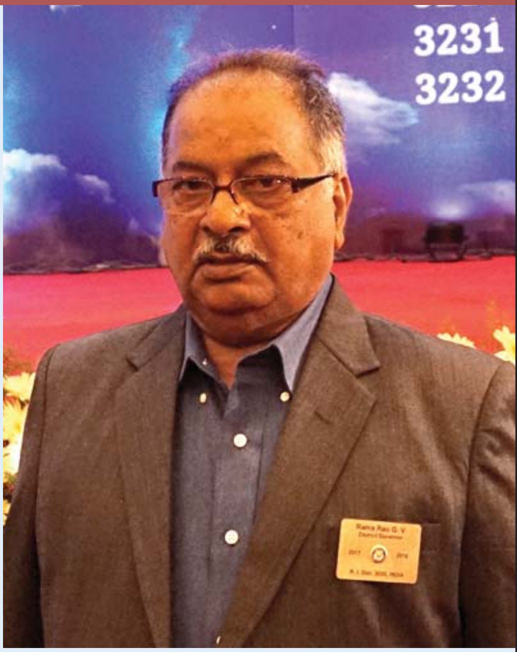

जी. वी. रामा राव,
सिविल कांट्रेक्टर,
रोटरी क्लब विजयवाड़ा श्री दुर्गा, मंडल 3020

बच्चों की शिक्षा उनकी प्राथमिकता है

यह गवर्नर पोलियो उन्मूलन अभियान से इतने प्रभावित हुए कि वह भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी से रोटरी में आ गए, और अब उन्हें रोटरी द्वारा पेश किये जाने वाले साहचर्य एवं लोगों के जीवन को परिवर्तित करने के अवसरों से प्रेम है।

रामा राव जल, शौचालय और हाथों की धुलाई की सुविधा प्रदान करके स्कूलों में स्वच्छता की स्थिति में सुधार करना चाहते है। ''हमारे क्षेत्र में बहुत से बच्चे, खासकर लड़कियाँ, उचित शौचालय व्यवस्थाओं की कमी होने के कारण स्कूल आने में दिलचस्पी नहीं लेते। आखिर शौच के लिए वे कहाँ जाएंगे? वह पूछते है। उनकी कार्यसूची में स्कूल की अन्य आधारभूत संरचनाओं में सुधार लाना भी शामिल है।'' वह कहते है, बच्चों को शिक्षा देना और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना सबसे शानदार तोहफा है जो हम उन्हें दे सकते है।

सदस्यता पर, वह सदस्यता में सुधार लाकर कमजोर क्लबों को मजबूत बनाना चाहते है और 800 नए सदस्यों को शामिल करना चाहते है। रामा राव कहते है, मंडल की महिलाओं में रोटेरियन बनने के लिए कोई खास उत्साह नहीं है।

पोलियो निधि के लिए टीआरएफ में योगदान का उनका लक्ष्य एक मिलियन डॉलर का है।

बाल एवं युवा कल्याण उनकी प्राथमिकता है

उनका ''सबसे अभिलषित पल'' तब था जब उन्हें 'स्वयं से बढ़कर सेवा पुरूस्कार' मिला था। आनंद कुलकर्णी याद करते है, ''और मुझे अभी भी उस समय की कदर है जब मैंने मेसाचुसेट्स में एक जीएसई दल का और बेलगाम में अपने क्लब के अध्यक्ष के रूप में मेरे द्वारा आयोजित एक पोलियो सुधारक सर्जरी शिविर का नेतृत्व किया था।'' वह 1997 से रोटेरियन है। वह कहते है, ''जब कल्याण बेनर्जी रोई अध्यक्ष थे तब मैंने इलेनॉईस में हमारे वन रोटरी केंद्र का भी भ्रमण किया था।

कुलकर्णी का पूरा वर्ष सुनियोजित है। सेवा परियोजनाओं के मामले में, उनका ध्यान किशोरियों में मासिक धर्म स्वच्छता को बढ़ावा देने पर है। उन्होंने रोटेरियनों की पत्नियों से 10,000 स्कूलों में जाकर इस विषय पर छात्राओं से बात करने की अपील की है। वह कहते है, ''हम वैश्विक अनुदानों और कॉर्पोरेट साझेदारियों को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया में है ताकि स्कूलों में कचरा-भट्टी स्थापित करने के लिए 150,000 डॉलर की राशी जमा की जा सके,'' और वह खुश है कि गोवा के मुख्यमंत्री मनोहर पर्रीकर ने इस प्रयास की प्रशंसा की और उन्होंने संघ राज्य क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी स्कूलों को कवर करने के लिए सरकार का समर्थन देने का वादा किया है।

मानसिक तनाव को रोकने के लिए नौजवानों के भावनात्मक स्वास्थ्य की देखभाल और 'दृष्टि' परियोजना के अंतर्गत डायबिटिक रेटिनोपेथी के लिए लोगों की जाँच करना उनके अन्य स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम है।

टाटा मोटर्स के साथ साझेदारी में, उनकी 105 स्कूलों में 65,000 डॉलर की लागत से ई-लर्निंग परियोजनाओं का निष्पादन करने की, और स्कूलों एवं कॉलेजों में सड़क सुरक्षा पर जागरूकता कार्यक्रमों को आयोजित करने की योजना है।

उनके लक्ष्यों में टीआरएफ के लिए 1.1 मिलियन डॉलर की राशी इकट्ठा करना, मंडल सदस्यता में 10 प्रतिशत की वृद्धि करना, मौजूदा 50 रोटरेक्ट क्लबों में नए 50 क्लबों को जोड़ना एवं मौजूदा 300 सदस्यों में 200 नई महिला रोटेरियनों को जोड़ना शामिल है। उन्होंने प्रत्येक रोटरी क्लब से कम से कम एक इंटरेक्ट क्लब को प्रायोजित करने के लिए कहा है।

आनंद कुलकर्णी,
रियाल्टर, रोटरी क्लब बेलगाम, मंडल 3170

समुदायिक प्ररियोजना, उनका मूलमंत्र

सिरसा के रोटरी क्लब, जिसमें उनके भाई सदस्य थे, में तत्कालीन गवर्नर ओ. पी. वैश्य के भाषण को सुनने के बाद 23 वर्ष की उम्र में वह रोटेरियन बने। सतीश सिंघल कहते है, ''अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के रोटरेक्टर के रूप में मैंने मेरे दो सालों का आनंद लिया, मैंने तब इसे गंभीरता से नहीं लिया था।''

1996 में जब वह रोटरी क्लब नोएडा के अध्यक्ष थे, तब उन्हें 6,500 वर्ग फीट की संपत्ति में 2 मिलियन डॉलर की लागत से एक नोएडा ब्लड बैंक स्थापित करने का विचार आया। ''बिना अनुकूल अनुदान सहायता की यह सबसे बड़ी परियोजनाओं में से एक थी।'' अब गवर्नर के रूप में, वह इस वर्ष दो नए ब्लड बैंक, दो रेडियोलॉजी केंद्र, 20 डायलिसिस केंद्र और 15 नेत्र चिकित्सालय स्थापित करना चाहते है। 10 डायलिसिस केन्द्रों, 5 नेत्र चिकित्सालयों और ब्लड बैंकों का काम लगभग पूर्ण हो गया है। वह मुस्कुराते है, ''पहले डायलिसिस केंद्र का उद्घाटन पीआरआईपी कल्याण बैनर्जी द्वारा मेरी नियुक्ति के दिन हुआ।''

वह मंडल के 87 क्लबों में से 60 क्लबों का दौरा कर चुके है। वह कहते है, ''मैं उनसे कहता हूँ कि मुझे डांडिया रात्रि या दिवाली रात्रि के लिए आमंत्रित मत कीजिये। समाज के लिए कुछ करिए, और मैं ख़ुशी से हिस्सा लूंगा। चार क्लब 1 मिलियन डॉलर के साथ परियोजनाओं पर काम करने के लिए तैयार है।''

टीआरएफ के योगदान के लिए उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर का है, मगर मुझे भरोसा है हम इससे भी आगे निकल जाएँगे। वह सदस्यता में 20 प्रतिशत और महिला सदस्यता में 22 प्रतिशत की वृद्धि करना चाहते है। ''यह पहले से ही देश में दूसरा सबसे बड़ा है, वह मुस्कुराते है।''

सिंघल अपनी पत्नी प्रभा, जो पूर्व अध्यक्ष और इनर व्हील एक सदस्य है, को अपनी प्रेरणा शक्ति होने का श्रेय देते है।

सतीश सिंघल,
कपास व्यापारी, रोटरी क्लब नोएडा, मंडल 3012

विनय कुमार अस्थाना,
पुनर्वासन पेशेवर,
रोटरी क्लब कानपुर शिखर, मंडल 3110

वह अधिक महिला सदस्यों को भर्ती करना चाहते है

विनय कुमार अस्थाना कहते है, ''मैंने नव-अधिकृत क्लब, रोटरी क्लब अलीगढ़, में एक दिन में 40 महिलाओं को शामिल किया। हमारे मंडल में कई महिलाएं रोटेरियन बनने की इच्छुक है।'' महिला सदस्यता पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ, वह कुल सदस्यता में 20 प्रतिशत की वृद्धि करना चाहते है। उनकी नियुक्ति के पहले दिन, उन्होंने एक बिल्कुल नए क्लब में 31 नए सदस्यों को भर्ती किया। वह नए सदस्यों को प्रोत्साहित करना चाहते है ''और उन्हें सम्मिलित महसूस करवाते है ताकि उनका शुरुआती उत्साह बना रहे।'' वह रोटरी क्लब सेंट्रल में अपने दल को नामांकित करने के लिए एक अभियान चला रहे है और उन्होंने तकनीक प्रेमी रोटेरियनों को नियुक्त किया है ताकि ऐसे सदस्यों की मदद की जा सके जो काम समझने में असमर्थ है।

वह 1991 में एक रोटेरियन बने। उनके परिवार में रोटरी का खून बहता है; उनमें से अधिकतर रोटेरियन है, जिनमें उनकी पत्नी सीमा भी शामिल है और उनका साला, अजय आघा, मंडल 3120 का पूर्व गवर्नर है।

एक पुनर्वासन पेशेवर होने के कारण, उनका ध्यान शारीरिक रूप से विकलांग लोगों के पुनर्वास पर है। वह कहते है, ''मेरा दल इस वर्ष एक बड़े पैमाने पर जरूरतमंदों को चलने-फिरने के सहायक उपकरणों को बाँटने की योजना बना रहा है।'' उनकी अन्य कार्यसूची में, पूरे मंडल में रक्त दान शिविरों का आयोजन और पौधारोपण शामिल है।

उनकी संस्थान के लिए आधा मिलियन डॉलर इकट्ठा करने की योजना है।■

साइकिल पर स्कूल जाते हुए

वी. मुत्तुकुमारण

क्लब की साइकिल परियोजना के छात्र-लाभार्थियों के साथ रोटरी क्लब बॉम्बे जुहू बीच के रोटेरियन।

सोमता गाँव में रहने वाली नेहा रविन्द्र दवाला एक बिल्कुल नयी साइकिल पर जाते हुए अपने माता-पिता को सहर्ष अलविदा कहती है। मुंबई के पास पलघर जिले के कोंडगांव स्थित शांति रतन विद्या मंदिर की कक्षा 10 की इस छात्रा के लिए स्कूल जाने की कठिन यात्रा के दिन अब टल गए।

नेहा की माँ स्कूल जाने के लिए टेम्पो के लिए उसे रु10 दिया करती थी। कई बार, वह स्कूल नहीं जा पाती थी क्योंकि घर में पैसे नहीं होते थे या टेम्पो सेवा की अनियमितता के कारण उसे स्कूल पहुँचने में देरी हो जाती थी। नेहा कहती है, ''इस नयी साइकिल के कारण, मैं हर दिन समय पर स्कूल जा पाती हूँ और मेरी माँ की मदद करने के लिए भी जल्दी घर आ जाती हूँ। मुझे पढ़ने के लिए भी अधिक समय मिलता है।''

स्कूल के 150 बच्चों के लिए स्कूली ज़िंदगी तब बेहतर हो गयी जब रोटरी क्लब बॉम्बे जुहू बीच, मंडल 3141, ने आशालैंड इंडिया के साथ साझेदारी में उन्हें साइकिलें प्रदान की। सीएसआर पहुँच के तहत भी कंपनी ने रु6 लाख के दान के माध्यम से सहायता की है।

आईपीपी नेहा सावला कहती है,''लाभार्थी स्कूल जाने और वापस आने तक लगभग 10 कि.मी. साइकिल चलाते है। वे सभी अत्यंत कम आय वाले आदिवासी परिवारों से है।'' स्कूल के प्रधानाध्यापक सुशील शेजुले को विश्वास है कि विद्यार्थी उनके अकादमिक लक्ष्यों में सराहनीय प्रगति करेंगे क्योंकि उनका आवागमन आरामदेह बना दिया गया है।

> **नयी साइकिल के कारण, मैं हर दिन समय पर स्कूल जा पाती हूँ और मेरी माँ की मदद करने के लिए भी जल्दी घर आ जाती हूँ। मुझे पढ़ने के लिए भी अधिक समय मिलता है।**

अकादमिक वर्ष के अंत में, साइकिलें वापस स्कूल में लौटा दी जाएगी और अगले वर्ष नया आवंटन किया जायेगा।

स्कूल के साथ एक MoU के तहत साइकिलों की देखभाल की जिम्मेदारी स्कूल की होगी। नेहा कहती है, ''अधिक बच्चों की मदद करने के लिए स्कूल पिछली सीट पर भी एक सवारी सुनिश्चित करता है।''

क्लब आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के अधिक स्कूलों में भी स्कूल प्राधिकरणों के निवेदन पर इस परियोजना को दोहराना चाहता है। वह आगे कहती है, ''हम कंपनियों के साथ पैसा इकट्ठा करने के लिए गठजोड़ कर सकते है क्योंकि बहुत सी कंपनियां इस पहल में हमसे जुड़ने के लिए तैयार है।''■

समुद्र तटों को कचरा मुक्त बनाते हुए

वी. मुत्तुकुमारन

स्कूल के बच्चे, समुद्र तट से एकत्र कचरे के बैग के साथ।

चेन्नई के निगमों, स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी संस्थाओं और गैर सरकारी संगठनों के 2,000 से अधिक स्वयंसेवकों ने रविवार सुबह एलियट्स बीच पर जमघट लगाया। बड़े पॉलिथीन के बोरों के साथ और हाथ में दस्ताने पहने हुए, उन्होंने तट की सफाई की, और उसे कचरे से मुक्त किया।

हर साल सितंबर के तीसरे सप्ताह, भारतीय तट रक्षक बल 16 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय तट सफाई दिवस (ICC) को चिन्हित करने के लिए अपनी 42 तट-रक्षक चौकियों पर तट की सफाई आयोजित करता है। ICC संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम पहल का हिस्सा है जो वर्ष 1986 में स्थानीय स्वयंसेवकों को शामिल करके समुद्र की सफाई करने और युवा पीढ़ी में समुद्री विविधता के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए शुरू हुआ था। अपनी व्यापक कार्य-सूची के हिस्से के रूप में, ICC दिवस दुनियाभर के तटीय क्षेत्रों की समुद्री पारिस्थितिकी को बचाने और संरक्षित करने के लिए मनाया गया।

समारोह की शुरुआत करते हुए, तट रक्षक (पूर्वी क्षेत्र) कमांडर और आई जी राजन बरगोत्रा ने चेतावनी दी कि इंसान सभी प्रकार का कचरा समुद्र में डालकर उसका उपयोग एक ''अथाह कुंड'' की तरह करके समुद्र के धैर्य की परीक्षा ले रहे है। हमारे दुरूपयोग, ''समुद्र को एक बड़ा कुंड की तरह समझना, को स्वीकार कर उसे बर्दाश्त करने की क्षमता अस्वीकार्य है और यदि हम कचरे को नहरों, नदियों और झीलों, जिनका पानी अंततः समुद्र में ही मिलता है, में फेंकना बंद नहीं करते है तो इस नुकसान की भरपाई संभव नहीं होगी,'' उन्होंने कहा।

गंभीर प्रदूषण

केन्द्रीय पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के 'भारतीय तटीय एवं समुद्री क्षेत्र प्रबंधन' के वरिष्ठ वैज्ञानिक डी. मोहन ने समुद्रों को प्रदूषित करने के हानिकारक अभ्यास की निंदा की। ''हम अपने घरों को स्वच्छ रखने के लिए स्वार्थी है, लेकिन अपने परिवेश की चिंता नहीं करते जो अंततः हमें प्रभावित करेगा।'' उन्होंने कहा कि समुद्र तट और जल स्त्रोतों पर तैरने वाले 55 प्रतिशत कचरे में प्राकृतिक रूप से नष्ट ना होने वाली चीज़ें जैसे प्लास्टिक शामिल है, जबकि मछुआरे जैविक-कचरे को फेंकने के लिए दोषी है, जो कुल कचरे का लगभग 2 प्रतिशत के बराबर है। उन्होंने कहा, ''हमें एक कचरा मुक्त समुद्र के लिए विविध प्रयासों की योजना बनानी होगी जो हमारी सबसे बड़ी संपत्ति होगी।''

कार्यक्रम में रंग भरते स्वयं सेवक।

समुद्री बल समुद्री प्रजातियों को भी बचाने की कोशिश कर रहा है। ''समुद्री कछुओं को मृत्यु से बचाने के लिए हमने मछुआरों को टीईडी - टर्टल एक्सक्लूशन डिवाइस - का वितरण किया है जो अब इसका उपयोग अपने जालदार जहाज में कर सकते है,'' एक तट रक्षक पायलट ने कहा।

क्लीवलैंड, ओहियो की लिंडा गेर्बर्च, और नोर्मंडी, फ्रांस के लोउ कोर्टोइस स्वयंसेवक है जो कचरा उठाने में व्यस्त थे, यह कहने के लिए रुके कि ''दुनियाभर में छोटे समुद्री तट पीड़ित है। तटीय दुर्दशा दुनियाभर में एक जैसी है और शीघ्र परिणामों के लिए वैश्विक कार्यवाही को तीव्र गति से करना होगा।''

एचएसबीसी बैंक के 75-प्लस दल के सदस्य रोशन राजगोपाल और शर्मिला पशुपति कहते है कि वे तटों को स्वच्छ बनाने के एक अच्छे कार्य में स्वयं को लगाकर खुश है।

नगर निगम के अधिकारियों ने बाद में घोषित किया कि तीन घंटे की मुहिम के अंत में 2-2.5 टन ठोस कचरा इकठ्ठा हुआ। नगर निकाय कचरे को छाटकर अलग करेगा, जिसमें से कुछ कचरे को डंप यार्ड में भरपाई के लिए भेजा जायेगा।

रोटरी शामिल होती है

ICC दिवस की गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए रोटरी क्लब गिंडी, मंडल 3232, ने इंडियन मेरीटाइम फाउंडेशन (IMF), चेन्नई शाखा, के साथ हाथ मिलाया। पूरे दक्षिण भारत में खचत्र की समुद्र को कचरा-मुक्त बनाने की मुहिम के अंतर्गत चेन्नई पड़ाव की सफाई में 50 से अधिक रोटेरियनों एवं रोटरेक्टरों ने हिस्सा लिया।

रोटरी क्लब गिंडी की रोटरेक्ट समिति के अध्यक्ष बद्री नारायण ने कहा, ''कुल मिलाकर उद्देश्य, जल स्त्रोतों को कचरा मुक्त बनाने, कचरे के पृथक्करण एवं इकठ्ठा किये गए कचरे के सुरक्षित निपटान पर जागरूकता फैलाने का था।''

पिछले वर्ष, खचत्र ने दक्षिण भारत के चुनिंदा खण्डों में से 35 टन कचरा इकठ्ठा किया था। ''इस वर्ष, तटीय क्षेत्रों में बेहतर जागरूकता के कारण इकठ्ठे हुए कचरे की 10 प्रतिशत तक कम होने की सम्भावना है,'' वह कहते है।

शुरुआत, जिसमें जल सेना के कैडेटों द्वारा सलामी शामिल थी, के बाद, डीजी आर. श्रीनिवासन ने खचत्र के प्रेसिडेंट कमोडोर राजन वीर को उनके स्वच्छता प्रयासों के लिए रु 50,000 का चेक प्रदान किया। तमिलनाडू के पूर्व डीजीपी और विधायक आर. नटराज और फिल्म अभिनेत्री सुहासिनी मणिरत्नम सम्माननीय अतिथि थे।■

डीजी आर. श्रीनिवासन और रोटरी क्लब गिन्डी के पूर्व अध्यक्ष जी. सतीश कुमार, पूर्व डीजीपी आर. नटराजन और सुहासिनी मणिरत्नम की उपस्थिति में कमोडोर राजन वीर को चेक देते हुए।

एक अलग क्षेत्र में ध्यान विकसित करें

भरत और शालन सवुर

यह एक चुनौतीपूर्ण दुनिया है। और दयापूर्ण भी'', मैंने तब सोचा जब मैंने एक चींटी को धूल में रेंगते हुए देखा। जब उसे एक पत्थर मिला, उसने पूरी ताकत के साथ उसपर चढ़ने का प्रयत्न किया। जब वह पांचवी बार फिसल गई, तो उसने अंततः पत्थर के बाजू से गुजरकर रेंगना जारी रखा। मैं चींटी की चतुरता से अचंभित था। उसी प्रकार मैं इस दुनिया पर अधिक अचंभित था जो रूकावटें खड़ी करती है और साथ ही, उसे पार करने का रास्ता भी प्रदान करती है!

एक उपचारात्मक केंद्र-बिंदु। कोई बीमारी या दर्द एक चुनौती है, एक बाधा है। रहस्य यह समझने में है कि हमें निराशा, डर, गुस्से के सामने हार नहीं मानना चाहिए क्योंकि वे कुछ नहीं करते है केवल हमारे शारीरिक दर्द को बढ़ाते है और हमारी पीड़ा में वृद्धि करते है। आह, लेकिन जानते है: जो दिमाग दर्द को बढ़ा सकता है वह उसे कम भी कर सकता है - सोचने के एक तरीके को अपनाकर जिसे कहते है 'अच्छाई पर ध्यान केन्द्रण।'

शांत एवं स्थिर रहने के लिए, उन सभी चीज़ों को ढूंढिए जो ध्यान केन्द्रित करने के लिए अच्छी है: आपका 95 प्रतिशत शरीर अभी भी स्वस्थ एवं ताकतवर है, आसमान में उड़ते एक पक्षी की सुंदरता, उसके फैले हुए पंख, शालीन लोगों के साथ सुखद यादों एवं कहानियों का आदान-प्रदान कर संबंध स्थापित करना, रास्ते पर एक सिक्का पाना, एक झाड़ी की पत्तियों के मध्य से प्रसन्नतापूर्वक झांकते एक चमकीले फूल को देखना, इस बात का दृढ़-विश्वास कि ऐसे लोग है जो आपकी परवाह करते है और जिन्हें आप प्यार करते है, इस बात का यकीन कि एक उच्च शक्ति है जो 24 घंटे एवं सातों दिन आपको देख रही है। इस प्रकार, चींटी की तरह, आप रुकावटों को पार करते है।

मन की आवाज़। हाँ, वहाँ वह आलोचनात्मक मन की आवाज़ होती है जो ज़ोर देती है कि काले, घने बादलों में एक उम्मीद की किरण देखना असंगत है। वही आवाज़ इस बात पर भी ज़ोर देती है कि फुटपाथ पर एक सिक्का मिल जाना कोई बड़ी बात नहीं है। हालाँकि, यह अनावश्यक निर्णय लेने का समय नहीं है। इसके अलावा, मन की आवाज जो प्रस्तुत कर रही है वह वास्तविकता नहीं बल्कि द्वंद्व है - आपको जादुई प्रसन्नता एवं जीवित रहने की सुन्दरता से अलग कर अनावश्यक अंधकारपूर्ण एकांत एवं दर्द की गहराइयों में धकेल रही है।

जब आप दर्द में होते है, तो आपको एक आतंरिक सहायक तंत्र की आवश्यकता होती है - एक ऐसा तंत्र जो आपके ठीक होने के हर कदम का उत्सव मनाए और आपको नाकामयाबियों के दौरान संभाले रखे। आपको ऐसी मन की आवाज़ की आवश्यकता नहीं है जो आत्मसंतुष्ट ढंग से कहती हो, ''तुम स्वयं को छेल रहे हो'' क्योंकि तुम स्वयं को नहीं छल रहे हो। आपको ऐसी मन की आवाज़ की आवश्यकता है जो कहती हो ''दर्द अस्थायी है। निश्चिन्त रहिये और हर दिन बेहतर होते रहिये, आगे बढ़ते रहिये।''

जिम्मेदारी लेना। हमारे शरीर के कार्य हमारे मानसिक कार्यों से बारीकी से संबंधित है। जैसा कि सद्गुरू ने समुचित रूप से कहा है, ''एक बाघ का, एक पर्वत का, एक समुद्र का या एक व्यक्ति का विचार शरीर को अलग-अलग तरह से शोधित करता है।'' एक बाघ का विचार डर को, समुद्र का विचार शान्ति को, एक नापसंद व्यक्ति का विचार गुस्सा या असंतोष को उत्पन्न करता है। प्रत्येक विचार गुंजायमान होता है और शरीर को प्रभावित करता है और उसे या तो स्वस्थ रखता है या उसे बीमारी की ओर ले जाता है। इसलिए, यह हमारे सर्वोत्तम हित में है कि भय, घृणा, क्रोध, निराशा को महत्व और बढ़ावा ना दे। और हम ऐसा कर सकते है। हम अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं की जिम्मेदारी ले सकते है।

एक डॉक्टर इलाज की जिम्मेदारी लेता है। एक इंजीनियर परियोजना की जिम्मेदारी लेता है। एक वकील मुक़दमे की जिम्मेदारी लेता है। उसी प्रकार, हम सबको भी अपने सोचने के तरीके की जिम्मेदारी लेना चाहिए। चिकित्सा, इंजीनियरिंग, आदि पेशे है, परन्तु यह इससे अधिक है, यह जीवन समर्थक है। मैं जेम्स रस्सेल लोवेल की कविता: "Dear common flower, that grow'st beside the way, Fringing the dusty road with harmless gold!" से प्रभावित हूँ। हम भी अपने विचारों की सुनहरी चमक से जीवन के धूल भरे रास्तों को संवार सकते है।

सोचिये... यह हर सुबह इस अद्भुत विचार के साथ उठने में मदद करती है कि आपको एक आशीर्वाद बनने और धरती पर स्वर्ग बनाने के लिए रचा गया, रूपांकित किया गया, सुसज्जित किया गया एवं अभिमंत्रित किया गया है। यह आपके ह्रदय को आनंद से भर देता है। आपके अंदर की मुस्कुराहट सुबह के आसमान की विस्तृत मुस्कान से मेल खाती है। आपके अंदर का गुणात्मक अंतर अद्भुत है। आप स्वाभाविक रूप से लोगों से सच्चा प्रेम करते है और जो प्रेम आपको मिलता है उसका आनंद लेते है। आप नकारात्मक चीज़ों को सुनने में दिलचस्पी खो देते है और इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण: आप सुनी जा चुकी नकारात्मक चीजों को दोहराने में दिलचस्पी खो देते है। बात करने से पहले सोचने का यहाँ एक बहुत ही शानदार तरीका है:

- T- क्या यह जीवन को बेहतर के लिए परिवर्तित करेगा?
- H- क्या यह मदद करेगा?
- I - क्या यह प्रेरित करेगा?
- N- क्या इसका नयापन प्रबुद्ध करेगा?
- K- क्या यह आनंद को उत्तेजित करेगा?

जब आप दर्द में होते है, तो आपको एक आतंरिक सहायक तंत्र की आवश्यकता होती है - एक ऐसा तंत्र जो आपके ठीक होने के हर कदम का उत्सव मनाए और आपको नाकामयाबियों के दौरान संभाले रखे।

अगर आप जो भी बोलने वाले है उसका इनमें से कोई भी प्रभाव उत्पन्न नहीं होगा, तो फिर उन सबको क्यों कहना? उसे जाने दीजिये। जैसे ही यह आदत बन जाती है, आप सोचने से पहले भी सोचेंगे! यदि एक उठते विचार में कोई सुन्दरता नहीं है, तो उसे क्यों सोचना? धीरे-धीरे, डर, क्रोध, निराशा की तीव्र भावनाएं क्षीण होकर मिट जाती है। उसके स्थान पर एक ठण्डी, तनाव मुक्त ज्योति होती है जो आभार, प्रशंसा, सहानुभूति, हास्य और प्रसन्नता जैसे सौम्य आगंतुको की उदारतापूर्वक मेजबानी कर सकती है! ऐसा दिमाग दर्द या बीमारी के स्तर को नीचे ले आएगा।

हाल ही में, एक प्रिय मित्र एनी दांत निकलवाने के बाद कसरत की कक्षा में आयी। वह दर्द-निवारक दवाइयां नहीं ले रही थी, दांत निकलवाने के पश्चात् उसका अकेला उपचार एक बर्फ की थैली थी। उसकी आँखें हमेशा की ही तरह शांत, उसने साइकिल चलाई और वेट ट्रेनिंग के साथ उसकी हर कसरत शांतिपूर्वक एवं बिना किसी शिकायत के की। जब पूछा गया कि क्या दर्द हो रहा है, उसने सर हिलाया, धीरे से मुस्कुराते हुए, सभी को अचंभित करते हुए। एनी के पास वो प्रकाशमान दिमाग है जिसके बारे में मैं बात कर रहा था।

शारीरिक शान्ति उपचार। योग की विरासत को दुनिया को देने के लिए मैं पतंजलि की, एवं 19वीं सदी की शुरुआत में भौतिक चिकित्सा से अवगत करवाने वाले स्वीडन के पेर हेनरिक लिंग का आभारी हूँ। क्योंकि, शारीरिक मुद्राएं, परिचालन और विशेष व्यायाम दर्द एवं अकड़न को कम करते है और शरीर को राहत पहुंचाते है। शरीर के लिए समस्याओं एवं दर्द के बजाय शांति एवं सुकून में निवेश कीजिये। यह प्रायोगिक है, यह व्यावहारिक ज्ञान है, यह काम में समझदारी है कि आप मांसपेशियों का इस्तेमाल करें, अपने जोड़ो को ढीला करें, अपने दिल एवं फेफड़ों और पीठ एवं रीढ़ को मजबूत बनाएं... अपने शरीर की उपेक्षा कर अपने जीवन की गुणवत्ता का बलिदान क्यों दिया जाए? याद रखिये: जीवन की गुणवत्ता काम पूरा करवाने से अधिक महत्वपूर्ण है। तंदरुस्ती से अधिक काम पूरा करवाने को महत्व देना एक अनावश्यक प्रतिक्रिया है। ''किसी भी मंजिल, किसी भी काम'' से अधिक महत्वपूर्ण है यहाँ बिना दर्द के शान्ति से रहना। व्यायाम आपके शरीर को सिखाता है कि लचीला एवं अधिक तनाव-मुक्त होना क्या होता है। जब आप ढीले होते है, आप अधिक लचकदार, अधिक सकारात्मक, स्वयं में अधिक होते है।

इसलिए, पत्थर, रुकावट, के बाजू से जाइये। और दर्द से राहत, बीमारी से सेहत की ओर अपने धीमे परिवर्तन को होने दीजिये। और चींटी की तरह, कभी पीछे मत देखिये, आप उस रास्ते नहीं जा रहे है।

लेखक 'फिटनेस फॉर लाइफ' पुस्तक के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।

एन कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

Welcome to Rotary Institute 2017

Ian Riseley
RI President 2017–18

RI Director C Basker
Convener

PDG R Theenachandran
Chairman

Innovation is the key

Transformation is what happens to a drop of water when it is touched by the magic of sunlight. It becomes a rainbow. It is what happens to a seed when it starts the journey to become a mighty banyan tree. The banyan tree is not an improved seed, just as a butterfly is not an improved caterpillar or a rainbow an improved drop of water.

Man's loftiest wishes and dreams have become reality through creativity and innovation. A 100 years ago who would have believed that humans could fly or that men could walk on the moon? Innovation is about putting foundations under the dream castles we build in the air.

In its 112 years history, Rotary International has always been evolutionary and sometimes revolutionary. This has been achieved by involving Rotary's RI officers in a time honoured system of meeting every year to discuss the future of Rotary. Rapid change is the nature of the world today. Rotary too needs to respond in order to be relevant.

The Annual Institute of Rotary officers in the sub-continent will be held this year for the Zones 4,5 and 6A in Malaysia at the Sunway Resort City, Kuala Lumpur, on December 1–3, 2017. Almost a 1,000 RI officers from the region are expected to participate in an interactive process that will involve present, past and future RI leaders, in a process of innovation that will recreate our movement.

One of the highlights of the Institute is the training of our DGs, DGNs and DGEs. They go through a clearly developed syllabus with trained facilitators. This ends with an inspiring graduation ceremony.

Have you Registered?

Rotary Institute 2017
KUALA LUMPUR
1-3 Dec '17 | Zone 4,5 & 6A
UNITE TO SERVE

For Registrations contact:
PDG R Theenachandran
Chairman - Rotary Institute 2017
Devi House, 281-4 Sivagangai
Main Road, Gomathipuram
Madurai - 625 020
Tamil Nadu, India

M: +91 94430 53301
E : theena3000@gmail.com
Alternative Contact:
+91 73977 44371 / 73977 44372
www.rotaryinstitute2017.org

Eminent Speakers

Steve Rodgers, a business and lifestyle consultant, and a best-selling author. He sees himself as a "leader, helping others discover and maximise their highest good and purpose in life and business." He lives by the personal code: help individuals and companies unlock their full potential.

Mitty Chang, grew his entrepreneurial roots when he built his first website in 1998. He was in the fourth grade at that time. By the time he was 13, he had already begun his career in freelance web designing.

Swami Sukhabodhananda, is not only one of the most respected spiritual leaders of the country, he is also nicknamed the 'Corporate Guru'. His expertise lies in synthesising ancient wisdom of the east and modern vision of the west appealing to both young and old from a wide spectrum of society.

Mahatria Ra
T T Rangarajan or Rajan or "Mahatria" is a New Age Guru with a captivating style. Mahatria embarked on a mission to awaken humanity on the path of holistic abundance. Since then, his singular pursuit has been to enable living from the highest practical pedestal possible.

Bobby Cash
An extremely talented country music artist from India — Bobby Cash, known as 'The Indian Cowboy', is a charismatic character. Tall, good looking, dressed in black leathers and a Stetson — he is a Star!

Speakers from Rotary International

Rajendra K Saboo
Past RI President

Kalyan Banerjee
Past RI President

K R Ravindran
Past RI President

Sushil Gupta
TRF Trustee

Paul A Netzel
TRF Trustee Chair

John C Matthews
RI Director

Serious fun!

Rotary should be serious fun, says RI President Ian Riseley. With his infectious smile and zestful energy, he exhorted Rotarians to enjoy the Institute as it is an important part of a leader's Rotary journey. "Plan your year through interactive discussions. Celebration and the inspiration you gain from the Institute will help you to make an even greater difference in your club and community," he says.

"Training is the most important thing we do in the Rotary year," says President Riseley. The work of Rotary is not done on the 18th floor of the Rotary Building in Evanston. We make a difference in the world because of the work done in over 35,000 Rotary clubs around the world.

As leaders, we need the Institute to make our work more efficient and focussed. We can then ensure that each year's goals are achieved at the club level. Team work ensures that we are united in the common purpose of making a difference.

"As Rotarians, we need to understand our responsibility to the planet," he says. "As an accountant, I want to see two figures this year — the total value of money spent on Rotary projects and the number of volunteer-hours spent. I am sure that this same measure will help you keep track of your contribution to our Movement."

Riseley and Juliet believe in walking the talk. A keen proponent of environmental sustainability, they live on a 7-acre property, where they practise their ideas in a very personal way. They want every Rotarian to plant a tree.

Visioning tomorrow

The webinar where a large cross section of Rotarians participated, was a trendsetter. It was high tech, interactive — a lot of listening and sharing happened. Virtual Reality hit us at the Atlanta Convention. Tomorrow has arrived in Rotary. The Malaysian Institute is your chance to put your stamp on Rotary's future. You too can leave your footprints on Rotary. Discussions, sharing and building networks will be the core elements of our annual family get-together, which the Institute really is.

We want you to take innovation and flexibility right down to the club level. As Rotary leaders, we need more Rotary in every Rotarian. We need to keep our flock together. Let us aim for the impossible — 100 per cent retention. Let us use all our powers to mentor, support and care for our people and keep them in Rotary.

Sam Owori had a vision of an India with 1.2 million Rotarians. What we need is a quantity of quality Rotarians. Let us meet at Sunway Resort City, Kuala Lumpur. Let us think, talk, plan and participate in the trendsetting year ahead.

Today everyone is looking for instant success, instant fame, instant friendship. There is nothing instant in this world. Except instant coffee and even that does not taste so good. Let us unite, to put together, to create a braver, better, brighter Movement.

C Basker
RI Director 2017–19

Refreshing experience

This Rotary Institute is an experience by itself. The delegates get all the entertainment besides the Institute programmes. For three days, delegates live in an exciting environment with all home comforts, which will certainly be a very refreshing, memorable lifetime-experience.

PDG R Theenachandran
Chairman – Rotary Institute 2017

सौर लैंपों ने किया मयसुरु की कॉलोनी को रोशन

ROTARY IN ACTION

टीम रोटरी न्यूज़

जब छह वर्षीय ताज बी ने उसकी माँ तासीन के गले में अपना चेहरा रखकर उसे ज़ोर से गले लगाया, तो मयसुरु से 8 किमी दूर स्थित एक छोटे गाँव, जनता कॉलोनी, के ग्रामीण लोग भावुक हो गए। 18 महीनों के बाद, प्रोमोद और तासीन उनके बच्चों अस्मिन और ताज बी से फिर से मिले। वे बच्चों को पड़ोस के गाँव में तासीन की मां के पास छोड़ने के लिए विवश हो गए क्योंकि उनके घर में पर्याप्त रोशनी नहीं थी और उन्हें डर था कि अँधेरे में छिपा कोई ज़हरीला कीड़ा उनके बच्चों को काट ना ले।

रोटरी क्लब मैसूर जयप्रकाश नगर, मंडल 3181, के कारण गाँव के 30 परिवारों में से चार परिवार अब सूरज डूबने के बाद के पूर्ण अंधकार से मुक्ति पाएंगे क्योंकि क्लब ने एक गैर सरकारी संगठन, लीटर ऑफ़ लाइट, के साथ साझेदारी में दो सौर सड़क लैंप एवं उनके घरों में लैंप स्थापित किए है। क्लब के सचिव कार्तिक येरागुंता कहते है, ''हमने इस परियोजना को प्रायोगिक स्तर पर किया है और जल्द ही पूरे गाँव को यह सुविधा प्रदान करेंगे।''

हालाँकि कॉलोनी में 400 से अधिक घर है, फिर भी उनमें से केवल 30 घरों में ही लोग रहते है क्योंकि इस झुग्गी बस्ती में इसके अस्तित्व के दो दशक के बाद भी जल आपूर्ति, बिजली, सड़कें और निकासी व्यवस्था जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी है। वह कहते है, ''परन्तु हमें यह महसूस हुआ कि रहवासियों की सर्वोच्च प्राथमिकता बिजली थी। तब तक वे रात में घरों को रोशन करने के लिए केरोसीन के लैंप का इस्तेमाल कर रहे थे।''

ऊपरः लीटर आफ लाइट की टीम के साथ रोटेरियन गण गांव में सोलार स्ट्रीट लैंप की सस्थापना के बाद।

नीचेः क्लब सचिव कार्तिक येरागुंटा एक लाभार्थी के साथ बातचीत करते हुए।

क्लब ग्रामीणों को अन्य मूलभूत सुविधाओं, जिसमें चिकित्सीय सहायता शामिल है, को प्रदान करने के लिए तरीकों की पहचान कर रहा है और कार्य का समर्थन करने के लिए प्रायोजकों की खोज कर रहा है।

किफायती लैंप

सौर लैंप को प्रक्षालित पानी से भरी एक बोतल से बनाया गया है और एक लकड़ी के खम्बे पर एक सौर पेनल के साथ स्थापित किया गया है। बोतल में एक बैटरी और तीन वाट के चार एलईडी बल्ब बंद है, जो पर्याप्त रौशनी प्रदान करता है। सर्किट को ऐसा डिज़ाइन किया गया है कि वह स्वतः ही चालू एवं बंद हो।

जबकि एक सौर सड़क लैंप की कीमत रु. 4,500 है, वहीं एक सौर मोबाइल चार्जर के साथ घरेलू लैंप की कीमत रु. 1,300 है। गैर सरकारी संगठन इस सरलता से मापे जा सकने वाले एवं अनुकरणीय सौर यन्त्र को ऐसे स्थानों या समुदायों में स्थापित करता है जहाँ कोई बिजली नहीं है। येरागुंता कहते है कि क्लब अन्य मंडलों में उनके समकक्षों की ऐसे किफायती सौर लैंप के लिए मदद करने के लिए तैयार है। उनसे *karthiktara@gmail.com* पर संपर्क किया जा सकता है।■

रोटरी सपना के लिए ख़ुशी लाती है

सुरहुदा कुलकर्णी

(दाएं से) क्लब अध्यक्ष प्रमोद बेंद्रे, वर्षा, अलका पवार और सपना की मां की उपस्थिति में डॉ. रमेश गोडबोले, सपना को दवाइयाँ प्रदान करते हुए।

पुणे के शिशु विहार प्राथमिक स्कूल में पढ़ने वाली सपना कस्बे (11) को कुछ वर्ष पहले, जाँच में टाइप 1 मधुमेह बताया गया था। उसका शुगर स्तर 400 के पार चला जाता है। उसके पिता, बाबासाहेब कस्बे, एक चौकीदार की नौकरी करते है और उसकी माँ घरेलू काम करती है। प्रत्येक माह, परिवार को बच्चे के इलाज पर रु. 3,000 खर्च करने पड़ते थे जो कि परिवार की मासिक आय का लगभग पांचवा हिस्सा था।

तीन महीने पहले, वर्षा बेंद्रे, क्लब अध्यक्ष प्रमोद बेंद्रे की पत्नी, स्कूल में रोटरी क्लब पूणे गणेशखिंड, मंडल 3131 की यूनिफार्म वितरण मुहिम के दौरान सपना से मिली। पढ़ाई में वह एक होशियार बच्ची लगी, लेकिन उसकी सेहत खराब थी। उसकी क्लास की शिक्षिका ललिता नारावने ने सपना की मदद करने के लिए वर्षा से अनुरोध किया। वर्षा ने डॉक्टर रमेश गोडबोले, एक चिकित्सक एवं क्लब के एक माननीय सदस्य, से परामर्श किया। वह तुरंत ही सपना की दवाइयों को प्रायोजित करने के लिए राज़ी हो गए।

ललिता कहती है, ''आपकी मदद ने कस्बे परिवार की ज़िंदगी को पूर्णतः बदल दिया है। सपना स्कूल में स्थिर एवं खुश लगती है।'' ललिता ने कहा। ''एक नन्ही ज़िंदगी की रक्षा एवं संरक्षण की कीमत एक मिलियन सेवा परियोजनाओं के बराबर है और सागर की प्रत्येक बूँद महत्व रखती है,'' गर्व एवं संतुष्टि के साथ अध्यक्ष बेंद्रे समापन करते है।

लेखक रोटरी क्लब पुणे गणेशखिंड, मंडल 3131, के सदस्य है।

लाइन तोड़ना

हरजीत सिंह खुराना

लंबी घुमावदार कतारें एक नियमित दृश्य है, हमारे जैसे देश में, जहाँ जनसंख्या हर सेकंड बढ़ रही है। हम अक्सर स्वयं को ऐसी ही एक कतार में पाते है - एक फ्लाइट पकड़ने के लिए, मंदिर में दर्शन के लिए, या स्कूलों में दाखिले के लिए जो कई दिनों तक चल सकते है।

यह किताब पढ़ने योग्य है विशेषरूप से उन लोगों के लिए जो हमेशा जल्दी में रहते है और कतार तोड़ने में गर्व महसूस करते है। किताब हर प्रकार की कतार के बारे में चर्चा करती है - औपचारिक, सामाजिक, प्रत्यक्ष, गुप्त और ऐसे अनेक प्रकार। इसमें काल सेंटर की आभासी कतार भी शामिल है जहाँ हम हमारे फ़ोन पर एक जैसी रिकार्डेड आवाज सुनते है जो कहती है: 'आप कतार में है, कृपया प्रतीक्षा कीजिये। आपका कॉल हमारे लिए महत्वपूर्ण है।'

जहाँ कहीं भी एक कतार होती है, लोग कतार तोड़ने का प्रयास करते है और ऐसा करने की नायाब तरकीबें रचते है। कतार तोड़ना तब सफल हो जाता है जब एक उचित कारण होता है और कतार में लगे लोगों के लिए उसे तोड़ने वाले के बहाने की जांच करना मुश्किल होता है।

लेखक ने भारत के और पश्चिमी देशों की कतारों के एक रोचक स्वरुप पर चर्चा की है। वह लिखते है, ''हमारी औसत कतारें जोश एवं उत्साह से भरपूर होती है, प्रत्येक दिमाग अत्यधिक सक्रिय, कतार तोड़ने की हर रणनीति का सक्रियता से मूल्यांकन करता हुआ।'' इसके अलावा, ''हम कतारों में बहुत चिपककर खड़े होते है, पश्चिमी लोगों के विपरीत, जो दूर खड़े होते है क्योंकि सामने खड़ा व्यक्ति किसी अनुल्लेखनीय संक्रमण से पीड़ित हो सकता है। इसलिए जब हमारी कतारें लगती है,'' वह क्हते है।

हमारे वीआईपी व्यक्तियों को हवाईअड्डे पर एवं अन्य स्थानों पर मिलने वाला पक्षपातपूर्ण व्यवहार दिलचस्प है। ''सभी हवाईअड्डे फ़ास्ट ट्रैक मार्ग नहीं देते है जैसे कि पश्चिमी लोग उनके हवाईअड्डों पर फर्स्ट क्लास या बिज़नेस क्लास में सफ़र करने वालों के लिए अधिमूल्य पर उपलब्ध करवाते है। ना ही वे *मरहबा*-जैसी व्यवस्था (दुबई हवाईअड्डे की) प्रदान करते है, जहाँ एक व्यक्ति हवाईअड्डे के दरवाज़ों से तेज़ी से निकलने की विशेष सुविधा के लिए पैसे चुकाता है। हमारा तंत्र कुछ अलग है। हमारे फ़ास्ट ट्रैक या मरहबा में हमारे नेता साफ़-सुथरा सफ़ेद कुरता-पजामा पहनते है और कुछ सफारी पहने बंदूकधारियों द्वारा किसी भी कतार की शुरुआत में ले जाए जाते है।''

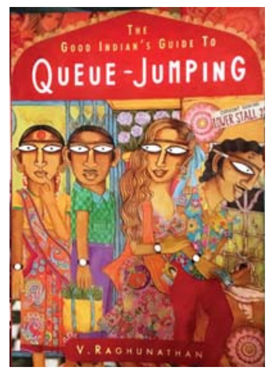

शीर्षक: दी गुड इंडियन्स गाइड टू क्यू जम्पिंग
शैली: गैर-काल्पनिक
लेखक: वी. रघुनाथन
प्रकाशक: हार्परकॉलिंस
पृष्ठ: 180 (पेपरबेक)
कीमत: रु. 229

संक्षिप्त में, किताब इस कला पर व्यंग्यात्मक रूप से ध्यान केन्द्रित करती है। जब आप कतारों से नहीं बच पाते है, तो उन्हें हराने का प्रयास कीजिये।

लेखक रोटरी क्लब लुधियाना, मंडल 3070, के सदस्य है।

मुस्कुराहटों की भूमि

आर. नन्द कुमार

जब मैं कम्बोडिया की राजधानी नोम पेन्ह की धरती पर उतरा, 'नमस्ते' के चिन्हों के साथ स्वागत होता देख मैं देखता ही रह गया। भारतीय पासपोर्ट धारकों को आगमन पर वीज़ा मिलता है, लेकिन वापसी का टिकट और होटल बुकिंग का प्रमाण होना आवश्यक है।

कम्बोडिया ने पिछले 40-50 सालों में बड़े पैमाने पर जातिसंहार, गृह युद्ध, खमेर रूज अत्याचार और पोल पॉट देखा है, इसके बावजूद इसका मुस्कुराहटों की भूमि कहलाना विरोधाभासी लगता है। हिन्दू और बौद्ध संस्कृतियों के पूर्व-ऐतिहासिक अतीत ने संभवतः अभी भी स्थानीय लोगों को नम्रता और मुस्कुराहटें दी है ताकि वह हर जगह आपका स्वागत कर सकें, और साथ मिलकर एक नयी तस्वीर चित्रित कर सकें। मुख्य धर्म थेरवाद बौद्ध धर्म है (महायान का एक प्रकार)।

कम्बोडिया अब 21वीं सदी को गले लगा रहा है और एक जीवंत, रोमांचक पर्यटन स्थल के रूप में उभर रहा है, जो प्राचीन इतिहास में लौटने एवं उसकी आकर्षक संस्कृति में डूबने का अवसर प्रदान कर रहा है। पर्यटकों के लिए भाषा एक चुनौती है क्योंकि अंग्रेजी कुछ ही लोगों द्वारा बोली जाती है। सभी स्थानीय दुकानों और मॉलों में यूएस डॉलर आसानी से स्वीकार्य है। सबकुछ *डोल्ला* है, जैसा कि स्थानीय लोगों द्वारा उच्चारित

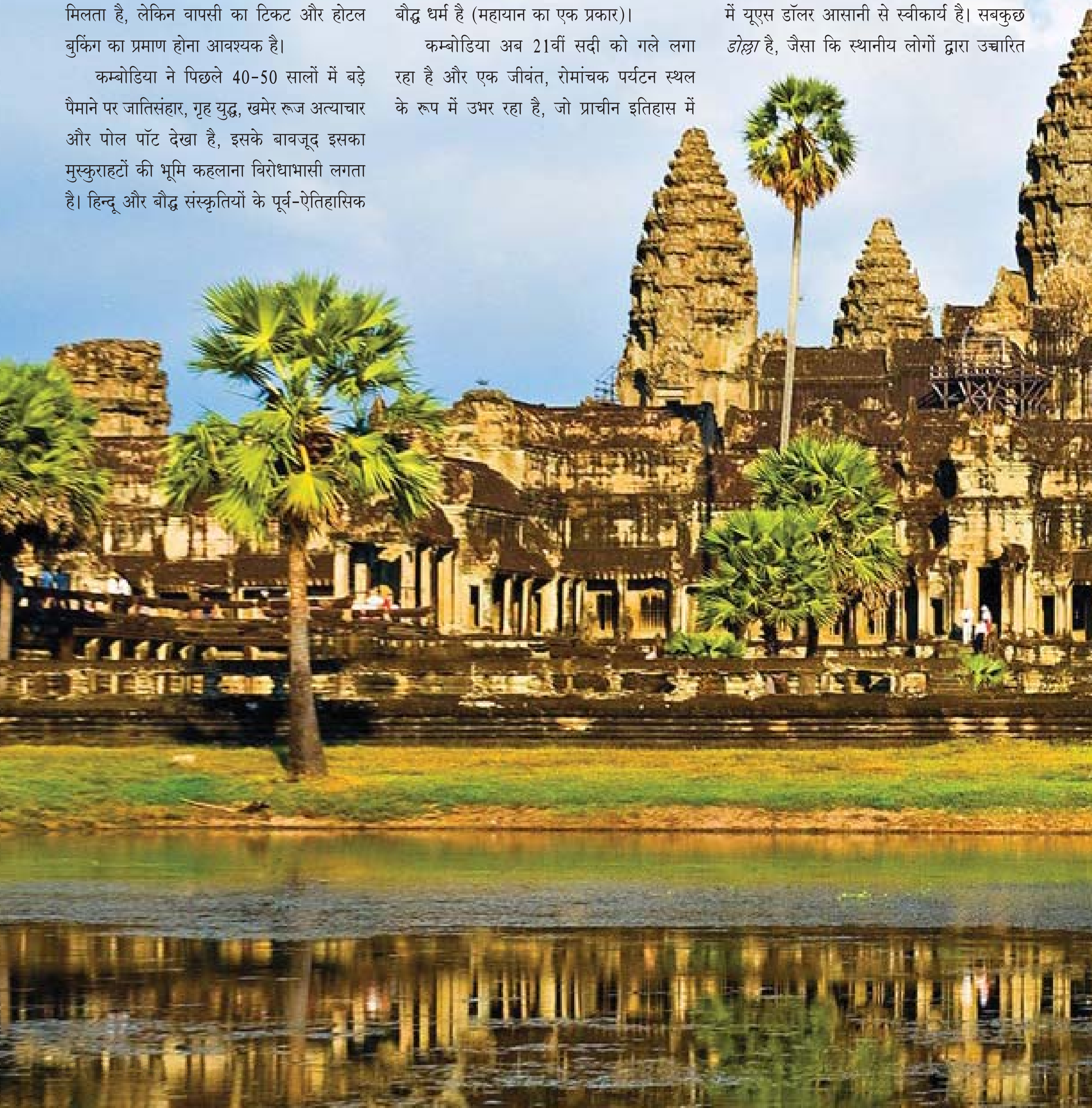

किया जाता है। स्थानीय मुद्रा (रिएल) में बदलने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि आपको डॉलर में ही पैसे वापस मिलते है।

कम्बोडिया की राजधानी नोम पेन्ह सबसे अमीर शहर है एवं सरकार और राजसी गौरव और राजा का केंद्र है। यह राजनैतिक और व्यापारिक केंद्र है। शहर टोंले सैप नदी और मेकोंग नदी के ऊपरी तट पर स्थित है। नोम पेन्ह आपको फ्रांस से 1953 में आज़ादी मिलने के बाद देश में हुई राजनैतिक उथल-पुथल की एक झलक दिखाता है। यहाँ मुख्य आकर्षण है रॉयल पैलेस, सिल्वर पैगोड़ा, राष्ट्रीय अजायबघर, स्वतंत्रता स्मारक, खमेर रूज के हत्या के क्षेत्र, तुओल स्लेंग जेल एवं संग्रहालय और

कम्बोडिया ने पिछले 40–50 सालों में बड़े पैमाने पर जातिसंहार, गृह युद्ध, खमेर रूज अत्याचार और पोल पॉट देखा है, इसके बावजूद इसका मुस्कुराहटों की भूमि कहलाना विरोधाभासी लगता है।

वाट नोम। अच्छी खरीदी के लिए, रूसी बाज़ार की ओर रुख करें। मैं आपसे उन जगहों की सिफारिश कर रहा हूँ जो मुझे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से आकर्षक लगी और जिनका दौरा दो दिनों में किया जा सकता है। एक टुक-टुक कीजिये और 3-5 डॉलर चुकाकर इन जगहों का दौरा कीजिए।

तुओल स्लेंग जातिसंहार जेल एवं संग्रहालय, या एस-21, 150 या उससे भी अधिक पूछ-ताछ और यातना केन्द्रों में सबसे अधिक कुख्यात थी, जहाँ पर मासूम शिक्षित जवानों को अंततः फांसी की सजा दी जाती थी और 'चोयूंग एक' हत्या के क्षेत्र पर भेज दिया जाता था। पोल पॉट और उसका साम्यवादी खमेर रूज आन्दोलन, जो वर्ष

अंगोरा वाट

1975 से 1979 तक चला, ने कम्बोडिया के लगभग 1.5 मिलियन कम्बोडियाई लोगों को भूख, फांसी, बीमारी और ज्यादा काम की वजह से मौत के घाट उतारा। अफ़सोस है कि, यह जगह एक पूर्व हाई स्कूल है जहाँ के बाहरी स्कूली उपकरण कैदियों को उल्टा लटकाने और गंदगी से भरे जार में डुबोने के काम आते थे। हॉल में ऐसे कई लोगों की तस्वीरें लगी है जिन्हें शासन द्वारा प्रताड़ित कर अंत में मार डाला गया। कुछ, जैसे चुम मे, अपनी मशीन सुधारने की कला के कारण बच गए। कुछ किलोमीटर की दूरी पर पोल पॉट का हत्या का क्षेत्र है, जहाँ 300 से भी अधिक सामूहिक कब्रे है। जवान पुरुष, महिलाओं और बच्चों को यहाँ फांसी दी गई और कुछ को जिंदा ही दफ़ना दिया गया। एक स्मृति स्तूप का निर्माण किया गया है जिसके अंदर 800 से भी अधिक खोपड़ियाँ है।

कम्बोडिया का **राष्ट्रीय संग्रहालय,** नोम पेन्ह के केंद्र में स्थित एक शानदार संरचना है जिसकी स्थापना फ्रांसीसी जॉर्ज ग्रोस्लिएर द्वारा की गई थी। इसमें लगभग 14,000 चीज़ें है और यह दुनिया का खमेर कला का सबसे बड़ा संग्रहालय है। यहाँ की वस्तुएं प्रागैतिहासिक काल से लेकर, खमेर साम्राज्य, जो उसकी बुलंदियों में थाईलैंड से लेकर आज के कम्बोडिया से होता हुआ दक्षिणी वियतनाम तक फैला हुआ था, के दौरान और बाद तक की है। ऐसा बहुत कुछ है जो भारत कम्बोडिया के साथ साझा करता है और इसकी प्रागैतिहासिक यात्रा, विशेषकर *महाभारत* और *रामायण।* आपका स्वागत गरुड़ (925-950 एडी) की बलुआ पत्थर द्वारा निर्मित एक विशाल प्रतिमा द्वारा किया जाता है। विभिन्न मुद्राओं में विष्णु की प्रतिमाओं, शिव के धनुष, दुर्योधन और भीम के बीच युद्ध को दर्शाता वृत्त-खण्ड, और भी बहुत कुछ देखने के लिए चौकन्ना रहना होगा।

शहर को इसका नाम पेन्ह नामक एक धनवान विधवा से मिला था जिन्हें नदी में एक बड़ा कोकी वृक्ष मिला था, जिसके अंदर उन्हें बुद्ध की चार कांसे की मूर्तियाँ मिली थी। गाँव के लोगों द्वारा निर्मित एक कृत्रिम पहाड़ी (या नोम) पर पवित्र मूर्तियों को संरक्षित करने के लिए पेन्ह ने एक छोटे से मंदिर का निर्माण करवाया। यह जगह वाट नोम (या पहाड़ी पर एक मंदिर) है और शहर का केंद्र बिंदु है।

अब कुछ खरीददारी की टिप्स। स्थानीय कम्बोडियाई चित्रों, स्मृति चिन्ह, फ्रिज चुम्बक, स्टीकर, हस्तशिल्प, टोपी और प्राचीन चीजों की एक किफ़ायती खरीदी के लिए रशियन मार्केट की सैर करें, मगर सावधान रहें क्योंकि बहुत कुछ नकली होंगे। बिना शर्म करे जमकर मोल-भाव करें।

अगर आपको बियर पसंद है, अंगकोर, एंकर या कम्बोडिया ब्रांड को चखे। मेरी पसंद कम्बोडिया थी। कम्बोडिया में शराब सस्ती

नोम पेन्ह आपको फ्रांस से 1953 में आज़ादी मिलने के बाद देश में हुई राजनैतिक उथल-पुथल की एक झलक दिखाता है।

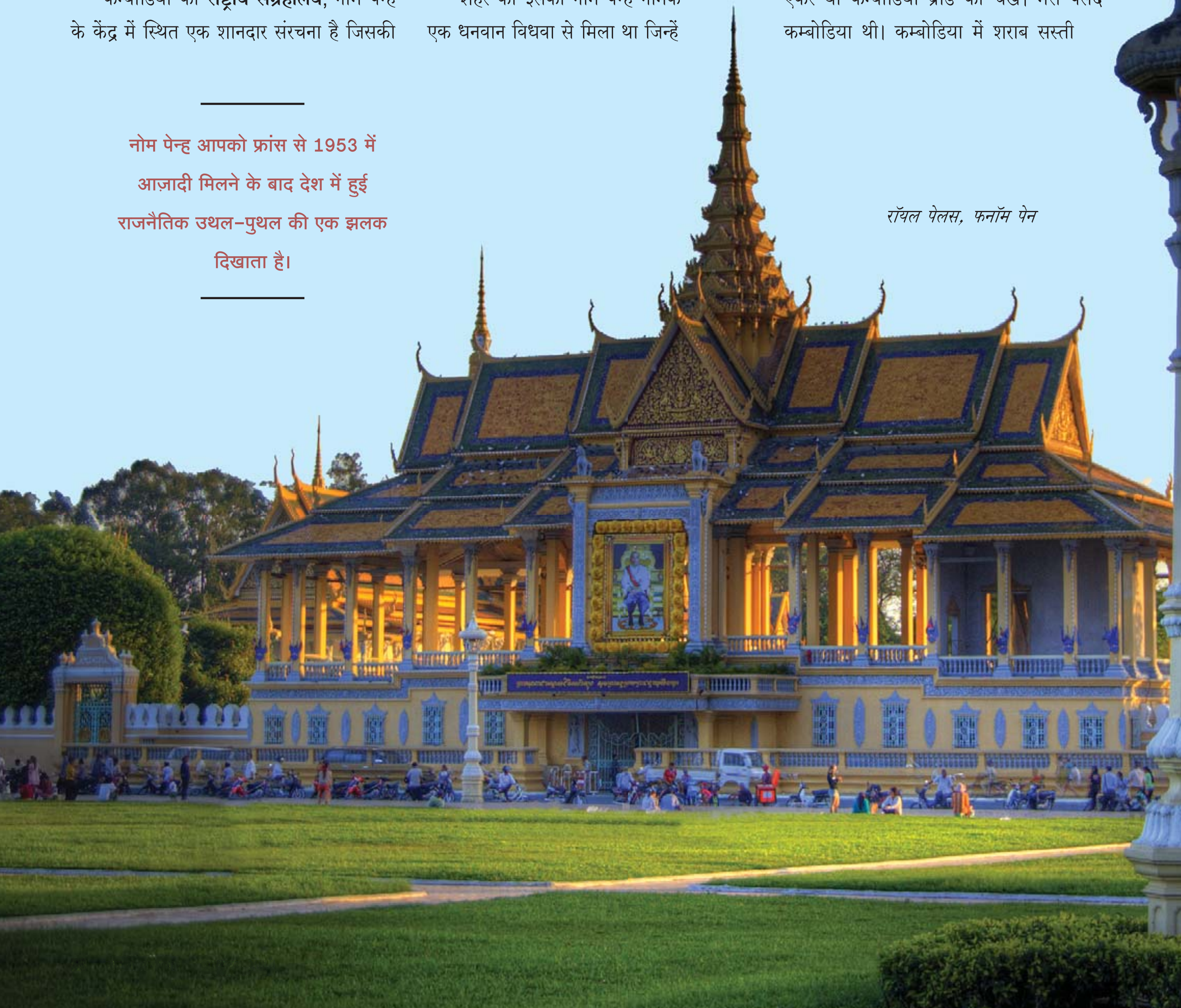

रॉयल पेलस, फनॉम पेन

है और इसलिए जब आप अंततः सिएम रीप से चेक आउट करें तो अपना कर मुक्त कोटा खरीद लें। स्थानीय खमेर व्यंजन (मुख्यतः मछली और चिकन) जिसे अमोक कहते है, के साथ नोम पेन्ह से विदा लें। सामान्य उबले हुए चिपचिपे चावल के साथ यह एक बहुत ही स्वादिष्ट कढ़ी है।

तीसरे दिन, मैं सिएम रीप, मंदिरों के शहर में था। नोम पेन्ह की स्थानीय 'कम्बोडिया अंगकोर एयर' की 45-मिनट की छोटी यात्रा आपको नोम पेन्ह से सिएम रीप के इस शानदार हवाई अड्डे पर ले आती है। नौवीं और दसवीं सदी के दौरान प्राचीन राजधानी होने के कारण, यह दो धर्मों - हिन्दू और बौद्ध का सम्मिश्रण दर्शाता है। मंदिरों की मूर्तिकलाओं, नक्काशियों, चित्रों और प्रतिमाओं में यह संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारतीय और जापानी सरकार के सहयोग से संरक्षण और मरम्मत का कार्य प्रगतिशील है। बहुत से मंदिर विश्व धरोहर स्थल है और दैनिक धार्मिक अनुष्ठानों के लिए निष्क्रिय है। मुख्य स्थलों

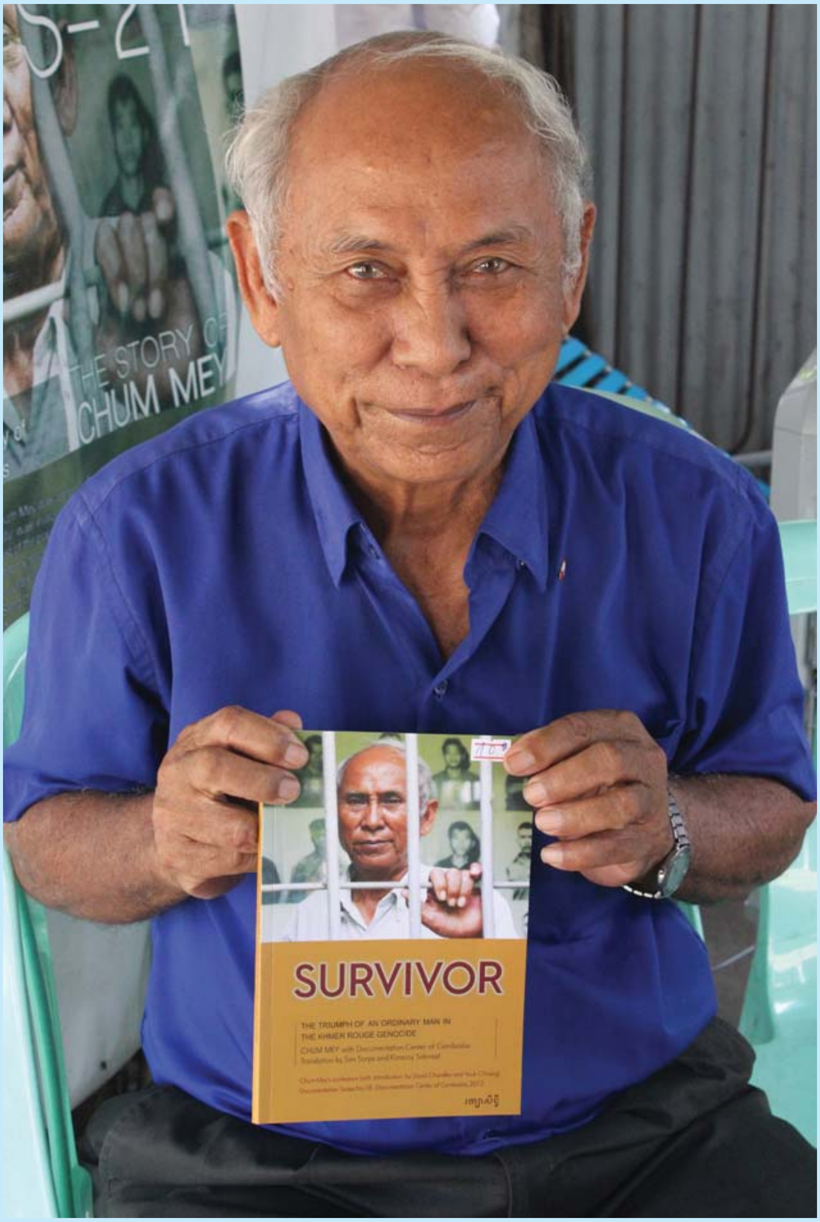

आर. नन्दकुमार

चुम मे, खमेर रूज कारावास के एक उत्तरजीवी, अपनी किताब 'Survivor' के साथ। किताब में उन्होंने थोल स्लेंग जेल में अपने अनुभवों के बारे में लिखा है।

में अंगकोर वाट, ता प्रोह्म, अंगकोर थोम और बयोन मंदिर है। इन्हें फुर्सत से देखने के लिए दो दिन देने की कोशिश करें। अंगकोर वाट और ता प्रोह्म को देखने के लिए बहुत अधिक चलने की आवश्यकता होती है। पूरे समय पानी पीजिये और उचित पोशाक पतलून या घुटने से नीचे तक का स्कर्ट पहने; ध्यान रखें आप मंदिरों के दर्शन कर रहे है।

कुल 90 मिनट का *सन एट लुमिएरे* (ध्वनि और प्रकाश) कार्यक्रम - 'अंगकोर की मुस्कान' - कम्बोडिया और अंगकोर वाट के आरंभिक इतिहास और संस्कृति की झलक दिखाता है। यह आपको मंदिरों के दर्शन के लिए तैयार करता है। यह कार्यक्रम मांसाहारी बुफे रात्रि भोज का भी एक अच्छा विकल्प प्रदान करता है।

अंगकोर वाट (मंदिरों का शहर), 400 एकड़ में फैला दुनिया का सबसे बड़ा हिन्दू मंदिर समूह है। 12वीं सदी के प्रारंभ में खमेर साम्राज्य की राजधानी, यशोधरापुरा में खमेर राजा सूर्यवर्मन-द्वितीय द्वारा इसका राज्य मंदिर और अंततः समाधि के रूप निर्माण किया गया। यह एक के ऊपर एक रखें बलुआ पत्थर के ढेर से बना है। फिर मूर्तिकारों

चोइंग एक किल्लिंग फील्ड्स में मेमोरियल स्तूप।

ने कलाकारों द्वारा चिन्हित की गई आकृतियों को तराशा। खाई के पानी में मंदिर का प्रतिबिम्ब और कुछ करतब फोटोग्राफी यहाँ पर बहुत प्रचलित है।

अंगकोर वाट पूर्व राजाओं की शैव परंपरा के विपरीत भगवान विष्णु को समर्पित है। लगभग 1200 वर्ग मीटर की नक्काशी हिन्दू ग्रंथों, *महाभारत* और *रामायण* की आठ अलग-अलग कहानियों को दर्शाती है। शायद सबसे महत्वपूर्ण कहानी है *दूध के सागर का मंथन*, जो देवताओं की *असुरों* से शांति, अनुशासन और शक्ति को पुनः प्राप्त करने की लड़ाई को दर्शाती है जो उन्होंने खो दी थी। देवताओं और राक्षसों के एक साथ मंथन करने से जीवन का *अमृत* निकलना चाहिए। दोनों ही पक्ष इस बात से अवगत है कि एक बार *अमृत* निकलने पर उसको पाने के लिए युद्ध होगा।

बारवीं सदी तक, कम्बोडिया ने थेरावाद बौद्ध धर्म अपनाना शुरू कर दिया जो दक्षिण पूर्व एशिया से संबंधित है और शायद यह मूल भारतीय बौद्ध धर्म के करीब है। राजा जयवर्मन सप्तम द्वारा बनवाए गए अंगकोर थोम में एक स्माईलिंग बुद्धा है। हालाँकि शहर के प्रवेश द्वार पर दूध के समुद्र के मंथन के केंद्र में विष्णु का निरूपण है।

राजा जयवर्मन सप्तम द्वारा अपनी माँ के लिए शुद्ध बौद्ध मंदिर, ता प्रोह्म मंदिर बनवाया गया। यह बहुत ही अनोखा है क्योंकि यह आज भी लगभग उसी स्थिति में है जैसा कि 19वीं सदी में खोजा गया था। एक चौंकानेवाली चित्रवत सुन्दरता एवं खंडहर और आसपास के जंगलों में उगने वाले पेड़ों के प्रभावशाली संयोजन ने इसे अंगकोर के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक बना दिया है। यह लगभग जंगलों द्वारा निगले जाने का आभास देता है! इसमें टावर, बंद आंगन, संकीर्ण रास्ते और स्मारक चिन्हों के दरवाजों की छत से अंकुरित झाड़ियाँ है। कई दम घोट देने वाली जड़े मंदिर और उसके गलियारे को ढकती है। ता प्रोह्म में सबसे प्रसिद्ध फोटोग्राफी स्थलों में से एक है टॉम्ब रेडर वृक्ष।

एक अच्छी और आरामदायक शाम बिताने के लिए, देर रत तक खुले रहने वाले पब स्ट्रीट और नाईट मार्केट का भ्रमण करें।

लेखक रोटरी क्लब बैंगलोर जीवनबीमा नगर, मंडल 3190 के सदस्य है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

मंडल 3211 ने 1500 स्कूलों को गोद लिया

जयश्री

मुख्य अतिथि शशि तरूर के (नीले में) साथ सर्वोदय विद्यालय, तिरुवनंतापुरम में (बाएं से) मंडल WinS चेयर मैथ्यू वर्गीस, डीजीएन शिरीष केशवन, पीडीजी आर. रेगुनाथ और डीजी सुरेश मैथ्यू।

रोटरी मंडल 3211 ने डीजी सुरेश मैथ्यू, जिला WinS समन्वयक आर रघुनाथ, WinS अध्यक्ष मैथ्यू वर्गीस और डीजीएन शिरीष केशवन की उपस्थिति में त्रिवेंद्रम में सर्वोदय विद्यालय में वर्ष के लिए अपनी WinS कार्यक्रम शुरू किया। त्रिवेंद्रम के रोटरी क्लब ने जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया जहां लोकसभा सांसद शशि थरूर प्रमुख अतिथि थे। विद्यालय के 2,500 बच्चों ने हाथ धोने के डेमो और अन्य स्वच्छता कार्यशालाओं में भाग लिया, जो कि WinS का एक भाग है। यह कार्यक्रम स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य और स्वच्छता पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है। उन्हें हाथ धोने के उचित विधियों का वर्णन करता हुआ लघु- पत्रक उपलब्ध कराया गया ताकि वे अपने इलाकों में इसका संदेश फैला सके।

लॉन्च के तुरंत बाद, थरूर ने ट्वीट किया, ''स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए रोटरी के WinS कार्यक्रम (स्कूलों में सफाई) का उद्घाटन किया। बच्चों को बेहतर स्वास्थ्य के लिए परिवर्तन का ध्वजवाहक बनना चाहिए।''

मंडल ने विगत दो वर्षों में अपने लक्ष्यों को पार कर लिया है। ''हमने 2015-16 में 1,169 स्कूलों और पिछले वर्ष 2,432 स्कूलों को गोद लिया था,'' रघुनाथ कहते है। नए शौचालय ब्लॉक और हैंडवॉश स्टेशन, पानी की सुविधा की व्यवस्था उन स्कूलों में की गई, जिनमें ये मूलभूत सुविधाएँ अनुपलब्ध थी, क्लब ने उन्के पुनर्निर्माण में मदद कियों सभी स्कूलों में क्लब के सदस्यों द्वारा विद्यालय के शिक्षकों और छात्रों को स्वच्छता पद्धतियों के बारे में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। ''हमने दूरदराज के गांवों में भी सकारात्मक परिवर्तन किया है, जैसा कि WinS टारगेट चैलेंज समिति के अध्यक्ष सुशील गुप्ता द्वारा ने जोर दिया जा रहा है। केरल के बच्चें अपने समुदायों में शौचालयों और स्वस्थ हाथ धोने की आदतों का इस्तेमाल करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर रहें हैं।''

मंडल, वैश्विक अनुदान सहायता के साथ, रु. 1.46 करोड़ की लागत से राज्य में 36 शौचालय ब्लॉक का निर्माण किया गया।

WinS टारगेट चैलेंज प्रतियोगी अनुदान

हाल ही में, मंडल को नए 'WinS टारगेट चैलेंज प्रतियोगी अनुदान' के अधीन टीआरएफ.के समक्ष पेश किए गए प्रस्तावों को मंजूरी प्राप्त हुआ है। रघुनाथ कहते है, ''हमारी परियोजना पांच टारगेट चैलेंज वाले देशों के 13 परियोजनाओं में से एक है, जिन्हें इस अनुदान के लिए मंजूरी प्राप्त हुआ है।''

रोटरी फाउंडेशन के ट्रस्टी ने इस अनुदान को विशेष रूप से पांच भाग लेने वाले देशों - भारत, बेलीज, ग्वाटेमाला, होंडुरास और केन्या के लिए मंजूरी दी है। अनुदान प्रक्रिया दो चरणों में प्रदान की जाएगी। पहले चरण के तहत, क्लब / मंडल संबंधित समुदायों में स्कूलों की जरूरतों का मूल्यांकन करने के लिए 10,000 डॉलर तक अनुदान के लिए आवेदन कर सकते हैं; अनुदान के लिए 10-12 प्रस्ताव का चयन किया जाएगा।

अगले चरण में स्कूलों को हाई स्टार-स्तरों के रूप में अपग्रेड करना शामिल है जैसा कि WinS प्रारूप में निर्धारित किया गया है। इस चरण में लगभग 3-5 स्थायी परियोजनाओं का चयन किया जाएगा और वे 150,000 डॉलर से 500,000 डॉलर अनुदान के पात्र होंगे।

मंडल का लक्ष्य इस वर्ष स्वच्छता के लिए 1,500 स्कूलों को गोद लेना है और रघुनाथ 2,000 स्कूलों को कवर करने का आश्वासन देते है। वे कहते हैं, ''अब हमारे लोगों को ज्ञात हो गया है कि क्या करना है और प्रत्येल चरण को कैसे हासिल करना है।'' ■

नेत्र दान करने की प्रतिज्ञा करने के लिए SMS करें

जयश्री

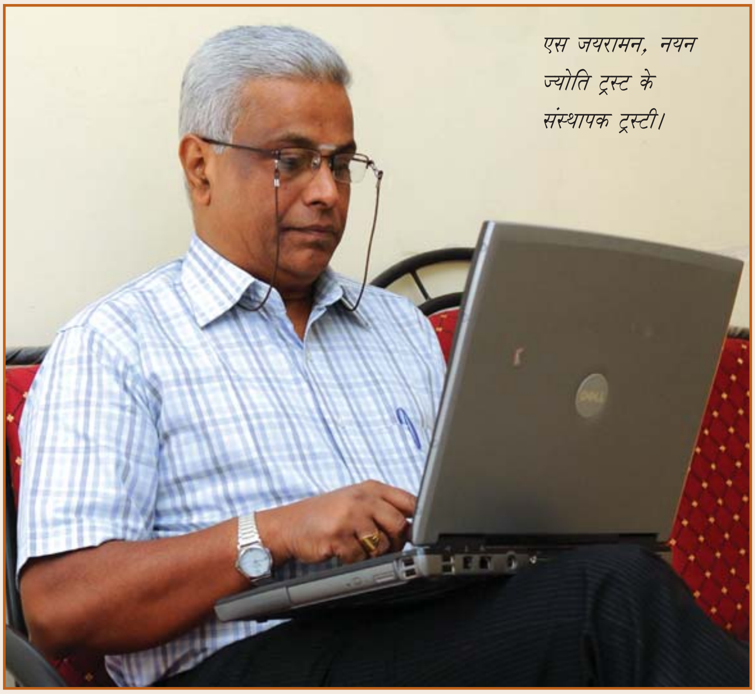

एस जयरामन, नयन ज्योति ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी।

आपको अपना नेत्र दान करने को प्रतिज्ञा करने के लिए किसी भी फॉर्म को भरने की जरूरत नहीं है, बस एक एसएमएस करना ही पर्याप्त है। आप प्रक्रिया में एक साईट अम्बेसडर भी बन जाते हैं,'' नयन ज्योति ट्रस्ट, बेंगलुरू के संस्थापक-ट्रस्टी एस जयरामन कहते है।

''जब कभी हम नेत्रदान की बात करते हैं, लोग अपन नेत्र दान करने की प्रतिज्ञा लेने के लिए सहमति व्यक्त करते हैं, लेकिन तुरंत प्रतिज्ञा प्रपत्र के बारे में पूछते हैं। यह अवधारणा लोगों के दिमाग में बहुत अधिक बैठ गई है और अस्पतालों ने भी अनेकों प्रतिज्ञाओं को एकत्र करने का दावा किया है।'' इसके बजाय, सभी लोगों को एक *SMS-EYE* <स्पेस> नाम <स्पेस> स्थान - 9902080011 पर भेजना होगा। नाम और स्थान ट्रस्ट के डेटाबेस में संग्रहित किया जाएगा।

साईट अम्बेसडर के रूप में, नेत्र-दाता अन्य लोगों को अपने नेत्रों को दान करने के लिए प्रतिज्ञा करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं और जब उनके जान-पहिचान वाले किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो ये अम्बेसडर तत्काल मृतक के निकटतम परिजनों से विचार कर और उनकी सहमति निकटतम आई बैंक को बुलाते हैं।

किसी क्षेत्र विशेष में निकटतम आई बैंकों के बारे में बाई बैंक ₹स्पेसपिनकोड टाइप करके भी जाना जा सकता है। ये आई बैंक एक साथ संभावित नेत्र प्राप्त करने के लिए भी अलर्ट प्राप्त करेंगे और निकटतम आई बैंक समय बर्बाद किए बिना साइट पर पहुंच सकते हैं। ''आदर्श रूप से, मौत के 4-6 घंटे के बीच नेत्र प्राप्त करना सर्वाधिक उपयुक्त होता है। नेत्र बैंक को सूचित करने की संपूर्ण प्रक्रिया एक मोबाइल फोन के माध्यम से की जा सकती है और मृतक द्वारा हस्ताक्षिरत नेत्रदान करने के शपथ-पत्र की खोज में व्यर्थ समय नहीं गंवाना पड़ता है।''

वे आगे कहते है कि बेंगलुरू के निकट डोडाबालेपुर में एक स्कूल के छात्र किस प्रकार से सक्रिय रूप से नेत्र दान को बढ़ावा दे रहे हैं। ''जब वे अपने क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति के मृत्यु के बारे में सूचना प्राप्त करते हैं, तो वे अपने शिक्षकों को सूचित करते हैं, जो उनके साथ जाकर शोक संतप्त परिवार का सलाह देते हैं। यदि परिवार अपने मृत रिश्तेदार की आंखों को दान करने के लिए तैयार है, तो वे तुरंत नेत्र बैंकों को सूचित करते हैं।''

हाल ही में, जयरामन को कर्नाटक और तमिलनाडु राज्य सरकारों के 108 हेल्पलाइन का इस्तेमाल करने की सहमति भी मिली है। मृत्यु की स्थिति में, रिश्तेदार 108 पर कॉल कर सकते हैं। यह कॉल नजदीकी नेत्र बैंक को पहुँच जाएगा, जिसके बाद, एक चिकित्सा दल नेत्र प्राप्त करने के लिए उस स्थल पर पहुँच जाएंगे।■

नेत्र दान - तथ्य

जयरामन कुछ खतरनाक आँकडों पर से पर्दा उठाते हुए कहते हैं - जबकि 15 लाख भारतीयां कॉर्नियल अंधापन से ग्रसित है, केवल 75 लाख मौतें में से केवल 15,000 उपयोगी आँखें एकत्रित की जाती हैं, और करीब 150 लाख आँखों का अंतिम संस्कार कर दिया जाता है या दफन किया जाता है।

संपूर्ण प्रक्रिया में केवल आधे घंटे का समय लगता है और यह प्रक्रिया शरीर पर कोई स्पष्ट संकेत नहीं छोड़ता है। कॉल करने के बाद, मृतक की आंखों को बंद और नम कपास से ढंकना चाहिए, ओवरहेड फैन को बंद और मृतक के सिर को लगभग 6 इंच तक उठाया जाना चाहिए ताकि आँखों को निकालने के दौरान रक्तस्राव को कम किया जा सके।

एक शाकाहारी, सादा और साधारण क्लब

टीम रोटरी न्यूज़

पीडीजी आईएसएके नाज़र क्लब के सदस्यों को संबोधित करते हुए।

एक वर्ष में जहाँ आरआई अध्यक्ष इयान रिसेली ने चेन्नई में वृक्षारोपण और पृथ्वी को हरितिमा को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है, वही दूसरी ओर आरआई मंडल 3232 के सदस्य एस एन बालासुब्रमण्यम, एक जोशीले पर्यावरणविद्, ने एक नए क्लब रोटरी क्लब चेन्नई ग्रीन सिटी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसमें 30 से अधिक सदस्य हैं, जिसमें युवा और वयोवृद्ध दोनों का मिश्रण हैं, और वे क्लासिक रोटरी क्लब शैली के 27 विभिन्न वर्गीकरणों में से संबंध रखते हैं।

बालसुब्रमण्यन, जो रोटरी क्लब गुइंडी इंडस्ट्रियल सिटी के चार्टर अध्यक्ष थे जिसकी स्थापना वर्ष 2007 में की गई थी, कहते है कि रोटरी क्लब चेन्नई ग्रीन सिटी के बारे में एक अनोखी विशेषता यह है कि क्लब के सदस्यों ने मितव्ययिता को अपना लिया है। ''हम एक शाकाहारी क्लब हैं, सदस्यों को मदिरा उपलब्ध नहीं कराया जाता है और हम केवल बैठकों में नाश्ता ही करते हैं। यह निर्णय लिया गया है कि इस तरह बचाए गए पैसे का उपयोग सेवा परियोजनाओं के लिए किया जाएगा।''

16 जुलाई को स्थापना दिवस पर, जहाँ पीडीजी आईएससी नजर मुख्य अतिथि थे, क्लब ने 3 कंप्यूटरों और एक प्रिंटर / स्कैनर शहर के सरकारी हाई स्कूल को दान में दिया। उन्होंने एक रोटरैक्ट क्लब भी स्थापित किया है, जो पिछले महीने पीआरपी गैरी हुआंग द्वारा उद्घाटित किए गए 50 क्लबों में से एक था।■

पॉल हैरिस ने क्लब के मनोबल को बढ़ावा दिया

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब श्री गंगानगर के रोटेरियन, डी जी बाग सिंह पन्नु (दाएं से चौथे) अध्यक्ष संदीप चौहान (बाएं से चौथे) और सचिव हरविंदर सिंह सांधु (दाएं से दूसरे) पॉल हैरिस बस्ट की स्थापन समारोह में।

मंडल 3090 में रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढावा देने पर जोर देने के साथ, डीजी बाग सिंह पन्नू ने मंडल के 20 क्लबों में रोटरी इंटरनेशनल के संस्थापक पॉल पी हैरिस की अर्धप्रतिमा स्थापित करना शुरू किया है, जिनके पास उनका स्वयं का सामुदायिक हॉल हैं। पन्नु ने कहा कि काले धातु के मूर्ति का आकार 3 फीट लंबा और 2 फीट चौडा है और इसका निर्माण हैदराबाद में 40,000 रुपए की लागत से किया गया था।

रोटरी क्लब श्री गंगानगर, 1 जुलाई को अपने रोटरी हॉल में पॉल हैरिस की अर्धप्रतिमा स्थापित करने वाला मंडल का पहले क्लब थे और क्लब के सचिव हरविंदर सिंह सांडू ने कहा, ''इससे हमारे सदस्यों का मनोबल बढता है।''

वर्ष 1959 में स्थापित, इस क्लब का अपना स्वयं का भवन 20 वर्ष पहले तैयार हुआ था और यह स्थान 115 सदस्यों के लिए नवरात्रि, दिवाली और होली जैसे त्यौहारों का आयोजन स्थल भी है। ''डीजी पन्नु ने हमारे भवन के सामने वाले बगीचे में वर्ष का पहला पौधा लगाया है। हम हॉल में नियमित रूप से बैठकें आयोजित करते हैं,'' सैंडू ने कहा। ■

रोटरी क्लब कुंबकोणम ईस्ट - मंडल 2981

राज्यस्वास्थ्य विभाग के सहयोग से 13 से अधिक गांवों में और एक तमिलनाडु सरकारी प्राथमिक विद्यालय में डेंगू जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। रोटेरियनों ने भी छात्रों को जूते उपलब्ध कराएं।

रोटरी क्लब ओमालुर - मंडल 2982

ओमालुर में पंचायत मिडिल स्कूल के छात्रों के लिए एक खेल का आयोजन किया गया था और सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। क्लब ने सभी छात्रों को लंच बॉक्स उपलब्ध कराया ताकि उन्हें नियमित रूप से स्कूल आने के लिए प्रेरित किया जा सके।

रोटरी क्लब नागपुर नार्थ - मंडल 3030

क्लब ने कन्याकुमारी से लद्दाख तक 'पानी बचाने के लिए एक अभियान' का आयोजन किया गया था, जिसमें प्रतिभागियों ने 21 दिनों में कुल 8,500 किलोमीटर की दूरी तय की थी। परियोजना निदेशक नलिन मजीठिया ने कहा कि यात्रा ने तीन लाख लोगों के बीच जागरूकता का निर्माण किया।

रोटरी क्लब डिंडीगुल - मंडल 3000

क्लब ने पीएसएनए कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग और टैक्नोलॉजी, डिंडीगुल के रोट्रैक्टर क्लब के साथ साझेदारी में, रक्त दान शिविर का आयोजन किया। कॉलेज परिसर में आयोजित विशाल शिविर में छात्रों और कर्मचारियों द्वारा 450 से अधिक यूनिट रक्त दान किया गया था।

विधियाँ

रोटरी क्लब बीकानेर - मंडल 3053

क्लब ने बीकानेर में नाथुसर बास और गोगा गेट के दो सरकारी स्कूलों में बेंच और डेस्क दान किया। यह वैश्विक अनुदान द्वारा वित्त पोषित एक परियोजना है, जो पिछले तीन वर्षों से जारी है।

रोटरी क्लब मेरठ - मंडल 3100

मेरठ में 75 बच्चों के सहयोग से वृक्षारोपण करने, उन्हें पोषण प्रदान करने और उनकी रक्षा करने का वृक्ष मित्र अभियान, नामक एक कार्यक्रम निष्पादित किया जा रहा है। वृक्षमित्र नामक ये बच्चे, स्कूल के रास्ते में पानी के पौधों के लिए अतिरिक्त बोतलें लाते हैं, वृक्षों की रक्षा के लिए वृक्ष गार्ड स्थापित करते हैं और जैविक खाद डालकर उन्हें पोषण उपलब्ध कराते हैं।

रोटरी क्लब जयपुर - मंडल 3054

महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा पर एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया था जिसमें लिंग भेदभाव से संबंधित अनेक मुद्दों पर चर्चा आयोजित की गई थी। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति विनोद शंकर दवे, राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और एनसीडब्लू के पूर्व अध्यक्ष ममता शर्मा ने रोटेरियनों के साथ अपना विचार साझा किया।

रोटरी क्लब शाहजहाँपुर - मंडल 3110

मदरसा फ़ैज़न-ए-मदीना के छात्रों और कर्मचारियों के लिए दंत जाँच शिविर आयोजित किया गया था। रोटेरियन डॉ के पी सक्सेना ने विद्यार्थियों को दांतों को ब्रश करने पर एक डेमो दिया और बेहतर मौखिक स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए उनसे दो बार अपने दाँत ब्रश करने का अनुरोध किया।

रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिड्टाउन - मंडल 3080

वैश्विक अनुदान के अंतर्गत, क्लब ने रोटरी क्लब एडवर्ड्स, यूएस और टीआरएफ के साथ साझेदारी में लद्दाख के सुदूर गांवों को सौर ऊर्जा उपलब्ध कराया है। जबकि प्रत्यक्ष लाभार्थियों में हिमालयी गांवों के 400 से अधिक ग्रामीण शामिल है, इस परियोजना से परोक्ष रूप से पर्वतरोहियों, पर्यटकों और दुकानदार सहित 4,000 लोगों को लाभ होगा।

रोटरी क्लब पुणे कोथरूड - मंडल 3131

डीजी अभय गाडगील ने क्विक हील टेक्नोलॉजीज के कैलाश काटकर को आईटी सुरक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान और 'मेक इन इंडिया' अभियान को आगे बढ़ाने के लिए क्लब द्वारा स्थापित रोटरी उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया।

रोटरी क्लब कादुर - मंडल 3182

जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में रोटरी नर्सरी स्कूल में एक फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस अवसर पर पचास बच्चें भगवान कृष्ण के रूप में तैयार हुए। क्लब ने सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया।

रोटरी क्लब प्रोद्दातुर - मंडल 3160

क्लब के अध्यक्ष अयूब खान ने एक निर्धन परिवार के एक युगल के विवाह के लिए रु. 30,000 का चेक प्रस्तुत किया। रोटरियनों ने भी नाविवाहित जोड़ें को कुछ घरेलू सामान भी उपहार में दिया।

रोटरी क्लब सिल्क सिटी रामनगर - मंडल 3190

लक्ष्मीपूरा गवर्नमेंट कॉलेज में 40 से अधिक छात्रों को एक कार्यक्रम में पुस्तकें दी गई, जिसमें शिक्षकों और रोटरियनों ने भाग लिया। लाभार्थियों ने इस विचारशील कृत्य के लिए क्लब को धन्यवाद दिया।

रोटरी क्लब पुत्तूर सिटी - मंडल 3181

बस स्टैंड पर आयोजित एक स्वास्थ्य जाँच शिविर में 350 से अधिक यात्रियों के मधुमेह के लिए जांच की गई थी। जिन यात्रियों में इस बीमारी की पहचान की गई, उन्हें चिकित्सकों उचित उपचार सलाह दिया।

विधियाँ

रोटरी क्लब कोयम्बटूर वेस्ट - मंडल 3201

रोट्रैक्टर धंदापानी बच्चों के साथ दुर्व्यवहार के प्रति जागरूकता फैलाने और 'स्वच्छ भारत' अभियान को बढ़ावा देने के लिए कश्मीर से कन्याकुमारी तक मोटर साइकिल की यात्रा की। यात्रा के सफल समापन पर क्लब ने उनका उत्सवपूर्वक सम्मान किया।

रोटरी क्लब उदुमालपेट तेजस - मंडल 3202

शहर में नगरपालिका माध्यमिक विद्यालयों को 5,000 रुपये मूल्य के खेल उपकरण और पुस्तकालयों के लिए पुस्तकें दान में दी गई। रोटरियनों ने शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षकों को भी सम्मानित किया।

रोटरी क्लब शिवकाशी सेंट्रल - मंडल 3212

क्लब के सदस्य प्रत्येक गुरुवार को शिवकाशी सरकारी अस्पताल में मरीजों के मध्य ब्रेड, फल और बिस्कुट वितरित करते हैं। वे 60 से अधिक सप्ताह से यह सेवा उपलब्ध करा रहे हैं।

रोटरी क्लब बर्नपुर - मंडल 3240

क्लब ने फिबोरसैन नामक विशेष परीक्षण के माध्यम से यकृत फाइब्रोसिस और सिरोसिस का पता लगाने के लिए एक शिविर का आयोजन किया। लगभग 75 लोग शिविर के लिए पंजीकरण कराया।

रोटरी क्लब बालीगंज - मंडल 3291

हावडा के मुंसिरहाट में एक नेत्र जाँच शिविर आयोजित किया गया जिसमें 138 मरीजों की जांच की गई और जिनमें से 38 मरीजों को आईओएल प्रत्यारोपण की आवश्यकता महसूस की गई। शहर के एम पी बिढ़ला आई फाउंडेशन में मरीजों की शल्यचिकित्सा की गई।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

Now you can reach

Rotary News

on the

mobile number

+91 98400 78074

Change of Address, or any subscription issues? SMS or WhatsApp to this number.

Made electronic transfer of subscription dues? Please communicate to us on this number.

Rotary at a glance

Rotarians : 12,19,237

Clubs : 35,731

Districts : 539

Rotaractors : 2,42,834*

Clubs : 10,558*

Interactors : 5,11,589*

Clubs : 22,243*

RCC members: 2,27,861*

RCC : 9,907*

* As on September 1, 2017

Membership Summary

As on September 1, 2017

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	111	4,466	194	56	225	172
5	2982	66	2,842	89	58	112	43
5	3000	127	5,287	435	287	638	194
4	3011	73	3,157	606	49	103	28
4	3012	87	3,608	731	66	125	55
5	3020	102	4,433	216	111	461	351
4	3030	94	4,983	602	73	305	164
4	3040	97	2,194	237	52	109	135
4	3053	77	2,966	466	16	37	93
4	3054**	127	6,005	943	89	295	471
4	3060	97	3,968	401	59	119	129
4	3070	106	2,990	239	65	152	54
4	3080	78	3,359	221	66	213	106
4	3090	78	2,054	81	32	37	122
4	3100*	72	1,626	67	10	76	146
6	3110	115	3,900	255	51	50	104
6	3120	75	3,211	326	36	51	50
4	3131	134	5,349	1,020	91	267	75
4	3132	110	4,471	497	61	192	138
4	3141**	91	5,356	1,118	113	251	86
4	3142**	77	2,765	384	62	189	69
5	3150	100	3,658	347	92	229	108
5	3160	69	2,336	102	21	45	81
5	3170	128	5,421	369	55	300	160
5	3181	72	3,064	204	29	168	104
5	3182	79	3,214	238	27	273	92
5	3190	132	5,170	593	137	339	49
5	3201	139	5,186	296	92	125	46
5	3202	131	4,860	236	97	426	44
5	3211	137	4,379	255	11	86	123
5	3212	95	3,801	198	108	264	126
5	3231**	68	2,690	90	55	177	235
5	3232**	97	3,883	509	130	298	82
6	3240	87	2,983	339	59	146	146
6	3250	96	3,768	677	40	203	176
6	3261	70	2,444	211	16	104	42
6	3262	97	3,341	386	41	68	75
6	3291	150	3,892	748	67	129	581
India Total		**3,741**	**1,43,080**	**14,926**	**2,580**	**7,387**	**5,055**
5	3220	73	1,918	234	80	201	77
6	3271	77	1,469	237	45	16	13
6	3272	154	2,852	438	37	37	36
6	3281	202	5,748	777	227	84	186
6	3282	137	3,878	301	133	38	40
6	3292	116	4,450	668	119	106	106
S Asia Total		**4,500**	**1,63,395**	**17,581**	**3,221**	**7,869**	**5,513**

**Non-districted　　**Newly formed districts from mergers/bifurcations.　　Source: RI South Asia Office*

In Brief

PM loses roof

Hurricane Maria, classified a Category 3 storm, lashed the coasts of the Dominican Republic in September, triggering an avalanche of torn roofs including that of Prime Minister Roosevelt Skerrit. "My roof is gone. I am at the complete mercy of the hurricane. House is flooding," he posted on Facebook. Puerto Rico and the northeast coast of the Republic were the worst hit even as the coastal cities were just coming out of the Hurricane Irma.

Durga's grand entry

Durga Puja is a much-awaited annual event in West Bengal. Pandals display themes ranging from politics to entertainment. While one pandal displayed an old house with a 'money-tree' from which hung replicas of the demonetised Rs 500 and Rs 1,000, another resembled the grand, imposing Mahizhmati kingdom, of *Baahubali*-fame. Social causes such as female foeticide, IVF and test-tube babies also featured in some of the pandals. And a hotel created excitement among children with its 600-kg chocolate Durga idol 6-ft tall.

Amazon gets a parrot customer

Corienne Pretorius of London was clueless as to who had placed an order for a set of golden gift boxes with Amazon, when she received a notification of the purchase order on her phone. After a series of inquest that ruled out her husband and son, she realised that the culprit was her pet Buddy, an African Grey parrot. The bird had placed the order mimicking its owner on a voice controlled smart speaker that responds to the name 'Alexa'. Corienne accidentally found out that her pet was the culprit when she later found her talking into the device mimicking her voice.

Helpline for Indians in the UAE

The Indian Embassy has opened its second Indian Workers Resource Centre (IWRC) in Sharjah. It has a toll-free number: 800 INDIA or 80046342 to receive complaints and suggestions. The service is free for all Indians residing in the UAE. The services include attending to grievance petitions, legal, financial and personal counselling, awareness camps for workers and verification of job offers. The first such facility was set up in Dubai in 2010.

Good thieves!

A family in Mangaluru was happy to get back its 99 sovereigns of gold and Rs 13,000 cash when the thieves who stole the booty decided to return it. Facing pangs of regret, they threw the packet containing the stolen articles into the owners' house with a note advising them to deposit the gold in bank locker and that they regretted committing the crime.

Compiled by Jaishree; Designed by Krishnapratheesh S

BETTER SERVICES PVT. LTD.

www.better.in

CREATIVE DESIGNS

EXCELLENT QUALITY

GREAT PRICES

LICENSEE SINCE 1975

OFFICIAL LICENSED VENDOR OF ROTARY INTERNATIONAL

HEADQUARTER ADD. : Better Services Pvt. Ltd., 22 Meghna, 64 S. V. Road, Santacruz West, Mumbai 400 054, India
Tel : 022 2649 1143 / 2649 1826 • Email : better@betterservices.org • Website: www.better.in

Inspiration
AROUND EVERY CORNER

The hotel lobby that changed everything

It took a Rotary International Convention halfway around the world for two Rotaractors from California to meet.

A chance encounter between Mitty, from Silicon Valley, and Jermaine, from Los Angeles, turned into a friendship that launched a business and Big West Rotaract, one of the largest and fastest-growing Rotaract regions in North America. Today, as Rotarians, they hope to develop and inspire the next generation of leaders through education and training.

Find your inspiration at the Rotary Convention in Toronto.
Register today at riconvention.org.

Rotary | TORONTO 2018

ROTARY CONVENTION
23-27 JUNE 2018
TORONTO, ONTARIO, CANADA

Regn. No. TN/CCN/359/2015-2017 Licensed to post without prepayment No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2015-2017
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/5271 Rotary Samachar Published on 1st of every month
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: Rs 35